अन्तरा शब्दशक्ति

'सृजन शब्द से शक्ति का'

मासिक साझा संकलन
अगस्त २०२०

अगस्त माह में अन्तरा शब्दशक्ति वेब अंक में प्रकाशित रचनाओं का

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

'सृजन शब्द से शक्ति का'

साझा संकलन

ISBN- 978-93-5372-262-3

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण- २०१६, अन्तरा शब्दशक्ति- साझा संकलन

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मूल्य- १००.०० रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'
(साझा संकलन)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

संपादकीय

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

प्रिय अन्तरा शब्दशक्ति परिवार,
सभी को नमन

विगत तीन माह मई-जून-जुलाई के दैनिक वेब अंक हम नहीं निकाल पाए। कोरोना काल में ५१ दिनों में १२० रचनाकारों की एकल पुस्तकें 'आपातकाल में सृजन फुलवारी' और १६२० पेज का वृहद साझा संकलन 'आपातकाल में सृजन' का प्रकाशन साथ ही उन्हीं दिनों में मार्च और अप्रैल की पत्रिका के साथ-साथ तीन साझा संकलन १. माँ २. कोरोना प्रकृति की चेतावनी ३. मुसीबतें तो आती है मगर घबराने का नहीं तथा आ. शिखरचंद जी जैन का बाल कहानी संग्रह 'डिजाइनर घोंसला' यानि कुल १२७ पुस्तकों का प्रकाशन और ईबुक विमोचन सहित 'कलम के सिपाही' सम्मान करने का लक्ष्य बहुत बड़ा था। फिर लॉकडाउन के कारण पेपर, डाक व्यवस्थाओं आदि की समस्याओं के कारण किताबें भेजने की समस्याएं, सावन के त्योहारों की व्यस्तता, ऋतु परिवर्तन और कोरोना काल मे शारीरिक, मानसिक और आर्थिक उतार-चढ़ाव के साथ-साथ 'कलम की सुगंध छंदशाला' के १४ रचनाकारों के कुण्डलिया संग्रहों का प्रकाशन एवं ऑनलाइन ईबुक विमोचन एवं सम्मान यानि ३ माह में १४१ पुस्तकें अन्तरा शब्दशक्ति ने प्रकाशित की हैं। यकीनन रात-दिन की मेहनत थी जो हमारे तकनीकी संपादक संदीप सोनी के साथ के बिना संभव नहीं था। साथ ही अन्तरा शब्दशक्ति के यू ट्यूब चैनल को सक्रिय करने के साथ-साथ २१ जून से लगातार फेसबुक लाइव भी आरंभ किया जो अब तक अनवरत जारी है।

संस्थापक समकित सुराना और बच्चे तन्मय-जयति-जैनम सुराना ने हमारे इस ड्रीम प्रोजेक्ट को पूरा करने में बहुत बड़ी सहयोगात्मक भूमिका और प्रेरणास्रोत की भूमिका निभाई।

कोरोना काल के कठिन दौर में और भी अनेक प्राकृतिक विपदाओं का सामना भी पूरा विश्व आज कर रहा है और इन सब साहित्यिक कार्यों ने संभालने का कार्य किया। साहित्य सचमुच मेरे लिए संजीवनी ही है।

बहुत प्रसन्नता हो रही है यह बताते हुए कि इस माह से पुनः दैनिक वेब अंक और उसका अंतिम दिन साझा संकलन के रुप में प्रकाशन पुनः आरम्भ कर रहे हैं। आशा है हमारा ये प्रयास आपको अच्छा लगेगा। आप सभी की प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

अपना और अपनों का ख्याल रखें, सुरक्षित रहें।

संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

अगस्त 2020 | 01 | वेब अंक

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

'सृजन शब्द से शक्ति का'

संस्थापक एवं संपादक
डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक
संदीप कुमार सोनी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन 481331, संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

हेमन्त बोर्डिया

शुभ्र

कभी.. इस पर
लगा हुआ..
हल्का सा दाग
खींच लेता है
ध्यान ..
हर किसी का..
बन जाता है
सबकी आँखों का
केंद्र बिंदु...!
किसी का ईर्ष्या भाव
करता है कोशिश
हर पल..
इसे छूने की
अपने मैले
हाथों से...!
कोई कर लेता है
साधना... देख कर
एक टक..
करता है
यात्रा मौन की...
परम् शांति की ..!
कोई चित्रकार
ललचा जाता है..
होता है आतुर
बिखेरने को इस पर
बेशुमार रंग..!
कोई देखता है
इसमें विरक्ति, खालीपन..
कोई मानता है कि
हैं शामिल इसमें
सारे ही रंग....!
कितना कठिन
होता है ..
श्वेत, सफेद होना..
कितना कठिन
होता है..
श्वेत, शुभ्र बने रहना..!!

डॉ. प्रीति समकित सुराना

मिश्री से मिर्च में बदलते स्वाद

डरने लगी हूँ आजकल
बहुत मीठे से
हाँलाकि आसानी से पचा सकती हूँ
अतिरिक्त शर्करा भी
क्योंकि हाइपोग्लाइसीमिया
या 'लो ब्लड शुगर लेवल' ने
खूब मीठा खाने की इजाजत दी है
लेकिन मीठे के साइड इफेक्ट्स के रूप में
मोटापे ने घेर लिया
अनेक तकलीफदेह लक्षणों से!
जिसने अतिरिक्त मीठे से परहेज की आदत डाल दी
और साथ ही
कानों में मिश्री घोलते लोगों से भी परहेज करने लगी हूँ मैं
क्योंकि बहुत मीठे के भीतर के
तेज झटके और आखिर में तीखी मिर्च
आंखों में बेहिसाब आंसू देने की क्षमता का अंदाजा लगा
एक छोटी सी टॉफी से
सुनो!
शुक्रिया तुम्हारा
मुझे मैजिक पॉप टाइम बम और इमली झटका
जैसी टॉफियों का स्वाद चखाने के लिए।
अनजाने में ही सही
तुमने कड़वी सच्चाई से करवाया मेरा परिचय
मिश्री से मिर्च में बदलते स्वाद
और कानों में घुलती चाटुकारिता की मधुरता के पीछे
अंतस का कर्कश नाद,
जो दिखता नहीं पर अक्सर होता है।
अक्ल आई पर ठोकर खाकर
अब करती हूँ
पांचों इंद्रियों
यानि त्वचा, जीभ, आँख, नाक और कानों से
अति मीठे का त्याग
क्योंकि मुझे मिर्च खाना सख्त मना है।

आस्तीन के सांप

माना
आस्तीन में पलने वाले सांपों के डर से
तुमने आधुनिकता के बहाने
बिना आस्तीन के कपड़े पहनने शुरू कर दिए,..
और
तुम्हारी इसी आधुनिकता ने तुम्हे
भीड़ से अलग
सबसे आगे लाकर खड़ा कर दिया,..
पर
कहीं ऐसा तो नहीं
इसी भीड़ में तुम्हारे आसपास ही
कोई अजगर पल रहा हो,..
सुना है
अजगर डसता नहीं
निगल लेता है
पूरा वजूद,..
और
विष को जितना समय लहू में घुलने में लगता है
उससे भी कम समय में अजगर के पेट का तेजाब
पूरे अस्तित्व को जलाकर रख देता है,..
सुनो
थोड़ा संभलकर रहना
सांप और अजगर ही विषैले नहीं हैं
इस भीड़ में जाने कौन खंजर लिए चल रहा हो,..
वैसे भी
आधुनिक युग है
जिसमें चलन है आज कल
विश्वास के सरेआम कत्ल हो जाने का,...!

नवनीता दुबे 'नूपुर'

विश्वास

कान में विष घोलता,
स्वार्थ का काफिला,
देखना कहीं,
कान न हो जाये,
मवादग्रस्त, नफरतों की पिलपिलाती मवाद से,
दिमाग के कोनों पर भी न चढ़ पाए,
शंकाओं के जाले,
घृणा की परतें।
दुनिया, मतलबपरस्त
क्षण भर में हो जाता
प्रेम का सूर्यास्त।

ये लपलपाते सर्प
जिह्वा से लिपटकर,
कर देते छलनी
शब्दों के तीव्र
विष वमन से
और फिर क्षीण होने लगता
ये शब्द 'विश्वास'

क्योकि, आस्तीन में पल रहे
विषैले विषधर,
शनैः शनैः
पहुंच जाते हैं,
उन कानों तक,
आत्मा में लबालब
प्रेम, त्याग, विश्वास भरा था
जिनके मन मे,अपने प्रिय के लिये।

दिनेश 'देहाती'

कलंक

अपने अंदर के
विश्वास को
है जगाना।
जग में फैला
कोरोना।
ना रोना धोना,
अपने दृढ़
संकल्प से
है इसे समूल
नष्ट करना ।
हां भाई,
कोरोना के
'कलंक' को
है दुनिया से मिटाना ।
संयम सावधान
सुरक्षा प्रावधान
और बढ़ा रोग
प्रतिरोधक ज्ञान
संग संस्कृति और
विज्ञान,
जागरूकता अभियान
घर घर पहुंचाना है।
कोरोना के 'कलंक' को
दुनियां से मिटाना है।

नमिता दुबे विषधर

पता था लोग भडकाते है
कानों के जरिये,
मन में विष घोल जाते है
पर इतना सटीक भेदन लक्ष्य का
जानते-बूझते लोग फस जाते है,
उदारमना रूप धर,
विषधर जहर फूंक
दिमाग में मचा खलबली,
सत्य से साफ मुकर जाते है,
बड़ा अवसरवादी है समाज
नीलकंठ आपको बना
साफ बच जाते है लोग,
ना सुनना ही बेहतर है
सुना तो कान में घूमने ना दो
कान में गूंजे तो दिमाग का
द्वार बंद कर लो,
मुमकिन ना हो तो
सबकी सुनो, मानो मत,
ऐ मेरे दोस्त! यहां
कान के कच्चे बनने से
क्या हासिल होगा?
बेइज्जती तनाव की सौगात
नहीं, उससे बेहतर है
अपने दिमाग की चेतना जाग्रत रखना
और परिस्थिति का सही विवेचन,
तब ना चुगली का सर्प काटेगा
ना तनाव का अजगर निगलेगा,
जीवन हर्षोल्लास से चलता रहेगा।

परवाह लीना शर्मा

सुनो... वैसे तो!!!
शायद..? यह सामाजिक
अधिकार नहीं है मेरा...
मेरा क्या? किसी भी महिला का
कि पुरुष को उसकी गलतियां बताएं
पर परवाह करती हूं तुम्हारी
बस इतना मैं जतलाना
चाहती हूं...
गलतियां...
वक्त ...बेवक्त
जाने ...अनजाने
कभी नादानी...कभी जानबूझकर
जो, जब, जैसे भी
हुई होंगी तुमसे...
उन सबको.....
तुमको गिनवाकर.....
...तौबा करवाना चाहती हूं
क्योंकि ..परवाह है मुझे तुम्हारी
पता है तुम....बच्चे नहीं हो
और कान के ..कच्चे भी नहीं हो
जरा गौर से सुनना ...
क्योंकि.. मेरी कुछ बातें
कानों में मिश्री बन घुलेगी
कुछ मिर्ची सी तीखी लगेंगी
कुछ जहरीले.... फन बन डसेंगी
कुछ फूलों सी भी झरेंगी....
बैठ अकेले... गौर फरमाना
सब होंगी.. तुम्हारे भले के लिए
हमारे सुखद भविष्य के लिए
क्योंकि .....
परवाह करती हूं तुम्हारी

मीनाक्षी सुकुमारन कान

कभी खबर
कभी बात
कभी तारीफ
कभी गिला
कभी गुस्सा
कभी प्रीत
कभी चाटुकारिता
कभी तनाव
कभी खोखले वादे
कभी मिश्री
कभी जहर
कभी लावा
कभी तीखे स्वर
कभी मुलायम स्वर
कभी शिकायत
कभी सहमती
कितना कुछ सुनते
सहते हैं ये कान
कभी चोट बनकर
कभी वेदना बनकर
कभी मरहम बनकर
कभी संवेदना बनकर
कभी सांत्वना बनकर
कभी टीस बनकर
कभी छलावा बनकर
कभी अपनापन बनकर
ये कान ही हैं जिन से
उतर कर बातें
या तोड़ देती हैं
या जोड़ देती हैं
अक्सर हमें जीवन
के पड़ावों में।।

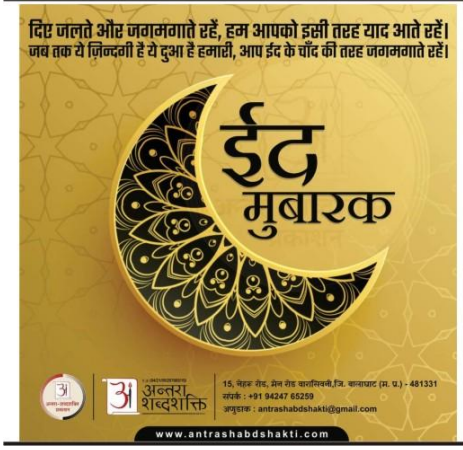

ईद

ऋतु कोचर

ईद हो या होली दिवाली
सबका है संदेश यही,
प्रेम और भाईचारा वाला
त्योहार का अर्थ सही,
अयूब की ईद हो या
हँसमुख भाई की होली
हर मजहब सौहाद्र सिखाता
प्यार भरी मीठी बोली,
चाहे कितनी हो बोला चाली
आपस में न पनपे बैर
त्योहार में गले लगा लो
चाहे अपने हो या गैर,
सबकी सीख एक ही है जब
फिर क्यों इनमें मतभेद हुए
सम्मान हो हर एक धर्म का
मतभेद न बने मनभेद के कुएँ
मिल कर अलख जगे जब भीतर
तेरा मेरा तब जाए परे
हिंदू के हों पीर मोहम्मद
मुस्लिम के हो जाएं हरे।

कराहती कहानी

मुकेश दुबे

कल से मेदान्ता अस्पताल गुड़गाँव में हूँ। ठहरने के लिए अस्पताल के ठीक सामने सड़क पार हाउसिंग सोसायटी जिन्हें गेस्टहाउस कहा जाता है, जेब व सुविधा के मान से अच्छे हैं।

इम्पीरियल कोर्ट बिल्डिंग के पहले माले का ३-बीएचके फ्लैट, नम्बर १०२ भी तीन अतिथि ग्रहों में तब्दील हो गया है। लिविंग रूम व रसोई साझी है।

यहीं पर टहलती मिली यह कहानी। शाम को जब सोफे पर बैठा था, एक और परिवार के सदस्य से मुलाकात हुई जो इलाहाबाद से आया था। माँ बीमार थीं। बेटा लेकर आया था, लॉकडाउन में ही क्योंकि गम्भीर हृदयाघात के बाद वहाँ डॉक्टरों ने किसी बड़े अस्पताल में सर्जरी का सुझाव दिया था।

दर्द जब समान हों तब अक्सर विचार साझे हो जाते हैं और अजनबियों के बीच एक दर्द का रिश्ता कायम हो जाता है। कह लेने से मन हल्का हो जाता है और एक सम्बल सा महसूस होने लगता है एक-दूसरे की दिलासा में। यहाँ दो कहानियाँ एक दूसरे से गुथी हुई चहलकदमी कर रही हैं। दरअसल माँ आईसीयू में ६ दिन रहने के बाद अब एचडीयू में हैं पिछले ७ दिनों से।

कमरे में एक युवक, युवती और ८ माह का नन्हा बच्चा है। मरीज से मिलने के निर्धारित समय में कोई एक जाता है अस्पताल लेकिन काँच की दीवार के इस तरफ से देखकर तसल्ली करनी होती है क्योंकि संक्रमण के सम्भावित खतरे को टालने के लिए विजिटर का रूम में प्रवेश वर्जित है।

'मैंने पूछा आपका बच्चा है यह ?'

'जी नहीं। भान्जा है। हम दोनों भाई-बहन हैं। पहले यह नोयडा में ही रहती थी। अब कुछ महीनों से इलाहाबाद में हमारे पास है।'

'फिर अस्पताल में कौन रहता है माताजी के साथ।'

वो चुप रहा कुछ पल। फिर बोला 'बहनोई हैं। जैसे ही सुना माँ के बारे में आ गये। तभी से यहीं हैं।'

'आपने बताया था बहन आपके साथ रह रही है तो दामाद क्या अलग रहते हैं... मतलब नौकरी के सिलसिले में।'

मैं टिपिकल भारतीय जिज्ञासु की भूमिका में आ गया, खोद कर पूछने वाली।

'जी..... लम्बी कहानी है। लेकिन भाई साहब आपसे क्या छुपाना। बहन की कोई ढाई साल पहले शादी हुई थी। सब अच्छा था। नोयडा में नौकरी है दामाद की। अपना घर है व माँ व पिता के साथ रहते हैं। एक बहन भी जो विधवा है साथ रहती हैं।

एक साल बाद बहन की ननद से अनबन शुरू हुई और यह जिद पर उतर आई या तो दीदी को अलग रहने के लिए बोलो या मुझे लेकर कहीं और चलो।

सामान्य समस्या इसकी बेवकूफी से बड़ी हुई और नतीजा, यह छोटू को लेकर इलाहाबाद आ गई।

अब वहाँ पर मेरी पत्नी मजाक में कहती है कि मैं भी वही कहूँ जो दीदी ने जीजा जी से कहा है....

इस बीच माँ को यह बीमारी हुई। हम यहाँ आये तो दामाद जी को मालूम हुआ और वो उसी समय से आ गये।

बच्चे को लेकर अस्पताल नहीं जा सकते। कोई एक ही जाता है एक बच्चे के साथ यहाँ रहता है। कोरोना की वजह से मरीजों से बाहरी लोगों का मिलना बंद है।

बेचारे दामाद वहीं हैं। रात लाउंज में रहते हैं और दिन में मम्मी के साथ।

सुबह-शाम खाना हम दोनों में कोई जाकर दे आता है। बस ऐसे ही चल रहा है।

'अब से आप बिल्कुल मत जाइये उनके लिए खाना लेकर। बहन को ही जाने दीजिए। यह कहे तब भी कोई बहाना बना कर टाल दिया करिये।'

मैंने यह सोचकर कि शायद दोनों के मिलने से मनभेद दूर हो, सुझाव दिया।

भाई मैं सुन रही हूँ आप लोगों की बातें। समझ भी रही हूँ बहुत कुछ। इन दिनों सोचा भी है सारी परिस्थितियों को लेकर।

माँ को अस्पताल से डिस्चार्ज मिलने पर नोयडा घर चलेंगे। एक सप्ताह माँ मेरे घर ही रहेंगी फिर आप चौक कराकर इलाहाबाद लेकर जाना।

हम दोनों के होठों पर सुखद मुस्कान आ गई थी बहन की बात सुनकर।

उसके भी होंठ मुस्कुरा रहे थे अपनी विजय पर और आँखें नम थीं अपनी भूल पर। खुशी और प्रायश्चित का यह संगम अभूतपूर्व था..... मैं सोच रहा था कुछ परेशानियाँ आती हैं तब बड़ी मुश्किल लगती है मगर इनमें भी कई बार बहुत कुछ अच्छा छिपा रहता है।

माँ ने बीमार हो कर भी बेटी का उजड़ता घर फिर बसा दिया है।

मुकेश दुबे

अदिति रुसिया

दाग

जब स्त्री मर्यादा में
घर की चार दिवारी में
बंद रहती है
संस्कारी, सहनशील और
सदाचारी कहलाती है
जब घर की चार दिवारी से
बाहर कदम रखती है
लोगों की सोच बदल जाती है
फिर स्त्री
चरित्रहीन, कुलटा जैसे नामों से
पुकारी जाती है
उसका किसी से भी
हँस कर बोलना बतियाना
उसके चरित्र पर दाग लगा जाता
उसके विपरीत एक पुरुष
जो अपने चेहरे पे
शराफियत का नकाब लगाए
घूमता है
वो मर्यादा पुरुषोत्तम
हो न हो
अपनी हर सीमा को
लांघने के बाद भी
मर्यादा पुरुषोत्तम ही कहलाता है!

राधा गोयल

कान के कच्चे लोग

कान के कच्चे लोगों से बचकर रहना
कभी किसी के सगे नहीं हो सकते वो
कई नाग कानों में फुसफुसा जाते हैं
अच्छे लोगों की चुगली कर जाते हैं
चाटुकारिता हरदम करते रहते हैं
कुछ लोगों से हरदम जलते रहते हैं
अफसर से उनकी चुगली करते रहते
कान के कच्चे अफसर सत्य समझ लेते
सच्चाई क्या है ये कोशिश कभी न की
उसको ही सच माना जो निन्दक ने कही
ऐसे नागों से सावधान रहना होगा
लच्छेदार बातों पर कान नहीं देना
कान के कच्चे लोगों से बचकर रहना
वरना पछताओगे दुःख सहना होगा।
ऐसा ही एक नाग हमारे घर आया
इज्जत से हमने घर में था बैठाया।
घर के अन्य सदस्य भी वहाँ बैठे थे।
निन्दक की आँखों को तनिक चुभे से थे
बोलीं देर हो रही है अब जाना है
थोड़ी देर तो बैठो, कब कब आना है
अभी-अभी तो आई हो और अब ही चल दीं
थोड़ी सी दिल की बातें तो कर लेतीं
नहीं नहीं बस मैं तो मिलने आई थी
आपकी तबियत कैसी है
बस यही जानने आई थी
उसे विदा करने दरवाजे तक आए
उसके साथ-साथ ही बाहर तक आए
खड़े- खड़े आधा घण्टे तक
कान हमारे खा गईं वो
कॉलोनी की सब घटनाएँ...
नमक मिर्च थोड़ा सा मिलाकर
अच्छी तरह बता गईं वो
ऐसे जहरी लोगों से बचकर रहना
अपनी निजी बात न कभी बता देना
कान के कच्चे लोग बड़े घातक होते
इतने घातक तो अजगर भी न होते।

मानवता को प्रथम बचाओ

राजेश आचार्य

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास की चिन्ता करना
बचे नहीं गर मानव तों फिर
किस से किसकी तुलना करना

उन्नति के आधार बहुत हैं
पर ये हमने स्वयं बनाये
आर्थिक भौतिक सामाजिक
हमने हीं इनके नाम धरायें
पर ईन सब से आज अहम क्या
ये भी बात ध्यान में धरना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास चिन्ता करना

आदिम मानव से उन्नति कर
आज यहाँ तक आये हम
आखेट से आये कृषि युग में
फिर नगर संस्कृति लाये हम
उद्योग और तकनीक के सँग में
जारी रखा हमी ने बढना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास चिन्ता करना

मानवता पर संकट हैं
कोई छोटी मोटी बात नही
प्रश्न खड़ा अस्तित्व का अपने
साधारण हालात नही
इसमे सब से पहले हम को
हर प्राणी की रक्षा करना

कोरोना से लड़ने को हम
मिलकर एक जुट हो जाएँ
आपस के मतभेद भुला दें
तभी सुरक्षित रह पाएँ
संकट हैं ये हर प्राणी पर
सबसे पहले इस से लड़ना

श्रमिक किसान उद्यमी ही
आर्थिक उन्नति आधार हमारा
ये विकास दर की वृद्धि में
देते सबसे बड़ा सहारा
राजेश लगन मेहनत से इनकी
तय विकास दर आगे बढ़ना

मानवता को प्रथम बचाओ
फिर विकास की चिन्ता करना
बचें नहीं गर मानव तों फिर
किस से किसकी तुलना करना

राम का इंतजार कौन करे?

ब्रजेश शर्मा

बेवफाओं से प्यार कौन करे
झूठों का एतबार कौन करे

दामने यार की जीनत आँसू,
फिर गरेबाँ को तार कौन करे

गुल नहीं हमको मयस्सर न सही,
जीस्त अपनी ये खार कौन करे

झूठी फितरत लिये जो फिरते हैं,
उनसे सच्चा करार कौन करे

दे गया दर्द उम्र भर के लिए,
उसका ही इंतजार कौन करे

होड़ लेती है मयकदों से जो,
चश्म वो अश्कबार कौन करे

अब तो कतरा के निकल जाते हैं,
आँख गैरों से चार कौन करे

आशना इश्क में खुदा अपना,
तो इबादत भी यार कौन करे

अब न शबरी न अहिल्या कोई,
राम का इंतजार कौन करे

अपनी चुप में भी इक अना है ब्रजेश,
बात बेबात रार कौन करे

जागृति मिश्रा रानी

गीत

रक्षाबंधन का ये त्योहार आया है,
बहना भाई का ये प्यार लाया है।

मां की ममता मे दोनो मिलकर पले,
बाबुल के हाथो को पकडकर चले।
यादो मे बचपन का उपहार लाया है।
रक्षाबंधन का ये त्योहार आया है।

गुजिया मिठाई लेकर भैय्या आये है,
आना है तीजा मे संदेश लाये है।
भाई संग मे मां का दुलार लाया है।
रक्षाबंधन का ये त्योहार आया है।

रानी होकर कब से तैयार बैठी है,
करते वो भाई का इंतजार बैठी है।
चेहरे पर बहना के निखार आया है।
रक्षाबंधन का ये त्योहार आया है।

श्रीमती प्रेमसिंह

रक्षाबंधन

आज है राखी का त्योहार,
भाई बहन के प्यार का इजहार।
खुशहाल बचपन की सारी यादें,
आज बहन साथ लेकर आई है।
भाईयों के दीर्घायु कामना साथ,
सजी सबकी कलाई है।
भाभियों का सिर पर आँचल,
भाईयों का प्यार सदा रहे मेरे संग।
तीन लोक में अमर रहे,
हमारे-आपके भाईयों का यश।
जय हो सदा विजय हो उनका,
यही अभिलाषा हम बहनों की।
उदय रहे सब ओर प्रकाश जीवन का,
रूद्राभिषेक हो चारों ओर,
रवि सेअम्बर और अवनी भी,
पुलकित और सुगंधित हो।

कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'

धागे का बंधन

रेशम धागे प्रीत गूंथकर
बैठी द्वारे माँ की जाई
राखी लिए हाथ बैठी है
भईया क्यों है रिक्त कलाई।

प्रेम भरी पाती मैं लिखती
कलम हाथ से छुटी जाती
आंखें झर झर मोती झरते
भईया मन की बातें कहते
राखी की इन शुभ घड़ियों में
कैसे दूर बहन रह पाई।।

साथ खेलते हँसते रोते
स्नेह पलों को कभी न खोते
हाथों बना निवाला अपने
रूठी बहन सजाते सपने
दूर हुई है रीत जगत की
चिठ्ठी में राखी भिजवाई।

हृदय शूल से बींधा जाता
भाव नेह का है पिघलाता
ब्याहकर के विदेश भिजाया
दूर हुआ है माँ का जाया
पढ़ चिट्ठी अपनी बहना की,
भाई की आँखें भर आई।।

डॉ.सरला सिंह 'स्निग्धा'

पर्व ये पावन

रक्षाबंधन यह पर्व अनोखा
सदियों से चलता आया है।
भाई बहना का बंधन यह
दोनों ने ही इसे निभाया है।

रक्षा का बंधन बांध बहन
भाई से वचन यह लेती है।
हर मोड़ पर साथ वो देगा
खुद भी साथ वो देती है।
दुनिया को ये पर्व अनोखा
यह देवों को भी भाया है।

चट्टानों को भी हटा राह से
पथ के सारे कांटे चुनता है।
आंधी और तूफानों में भी
सुख बहना हित बुनता है।
बहना भाई को सबसे प्रिय
ग्रन्थों ने भी सदा बताया है।

कच्चे धागे के बंधन को भाई
जीवन में तोड़ नहीं पाता है।
धर्म जाति धरे है एक तरफ
बंधन राखी का निभाता है।
रक्षाबंधन यह पर्व अनोखा
सदियों से चलता आया है।

अधि. शिल्पा पाठक

रक्षा बंधन...

एक नई सोच रक्षा का, विश्वास का, पवित्रता का, हल्दी कुमकुम से, रोली चंदन सा, अक्षत पुष्प से, भक्ति और प्रेम सा।

हिन्दू धर्म की नींव का एक सुदृढ पत्थर रक्षा बंधन।

सदियों में हमारे विचार और रहन सहन में काफी परिवर्तन आए है पर कुछ है जो नहीं बदला वो यह पर्व है।

इस पर्व को रक्षा व सम्मान का प्रतीक माना गया है, यह पर्व रक्षा का है। जिसे इंद्रणी ने इंद्र को रक्षा हेतु बाँधा था।

समय परिवर्तन में यह भाई बहन के रिश्ते का प्रतीक है।

यह पर्व बहनों के मध्य और भाइयों के मध्य भी होना चाहिए। इसमे हर वो रिश्ता शामिल होना चाहिए जिसमें रक्षा और विश्वास हो।

वर्तमान परिवेश में रिश्तों की विस्तृत सोच और दायरा आवश्यक है। एक बहन अपनी बहन और भाई अपने भाई की रक्षा करता है तो रक्षा सूत्र भी इस रिश्ते में होना चाहिए।

तो आइए एक नई सोच के साथ रक्षा के सूत्र के इस पर्व का स्वागत और सम्मान करें। रिश्तों को एक नए अर्थ और आयाम दें। एक कदम विस्तृत अर्थ और परिभाषा के साथ हम सभी को रक्षा बंधन की शुभकामनाएं।

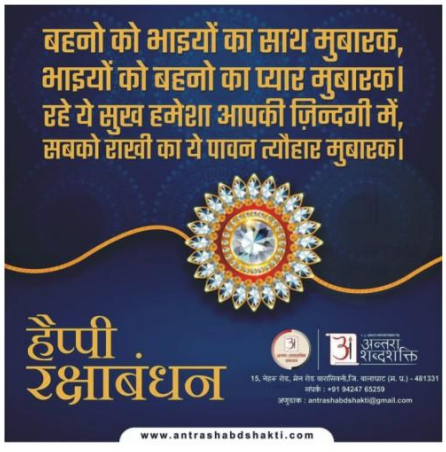

बहनो को भाइयों का साथ मुबारक,
भाइयों को बहनो का प्यार मुबारक।
रहे ये सुख हमेशा आपकी जिन्दगी में,
सबको राखी का ये पावन त्यौहार मुबारक।

हैप्पी रक्षाबंधन
आप सभी को
अन्तरा-शब्दशक्ति की तरफ से
रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति
डॉ. प्रीति समकित सुराना

डिजाइनर घोंसला - पुस्तक चर्चा (समीक्षा)

डिजाइनर घोंसला (बाल कहानियाँ)-
लेखक शिखर चंद जैन

बालमन के मनोविज्ञान को समझकर उनके लिए रोचकता और ज्ञान सहित सरल शब्दावली का प्रयोग करते हुए नन्हे पाठकों तक अपनी बात पहुँचाने में सफल वरिष्ठ एवं प्रेरक साहित्यकार श्आ. शिखर चंद जैन जीश की बाल कहानियों का संग्रह सिर्फ बच्चों के लिए नहीं बल्कि उन अभिभावकों के लिए भी ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा जो नई पीढ़ी से अंतराल के कारण कई बातों से अनभिज्ञ हैं।

२१ रोचक बाल कहानियों में शब्द, शिल्प, कथ्य एवं भावों के साथ-साथ रीना मौर्यजी एवं जयति सुराना (मेरी बेटी) के रेखाचित्रों ने पुस्तक को आकर्षक बनाया है।

डिजाइनर घोंसला का आवरण चित्र भी बहुत आकर्षक बन पड़ा है जिसका श्रेय जाता है अन्तरा शब्दशक्ति के तकनीकी संपादक- संदीप सोनी जी को। पुस्तक की प्रस्तावना में राजकुमार जैन राजन जी ने बहुत मोहक अंदाज में पुस्तक

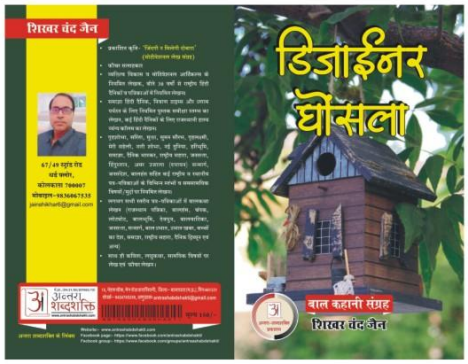

का सार प्रस्तुत किया है।

जहाँ डिजाइनर घोंसला, ऊंट मकड़ी, लोह मानव, बिटिया का न्याय, ग्लोबोफोबिया, गलती कहाँ हुई?, सुंदरवन में व्हाट्सऐप जैसी कहानियो से आधुनिक सोच से सामंजस्य की सीख मिलती है वहीं दूसरी ओर जंगल-जंगल बात चली है, चाँद पर कूड़ा, चतुर्वन में भेड़िया, जैसी अनेक कहानियाँ पढ़कर नैतिक शिक्षा के साथ कार्टून चौनल्स के मोगली जैसे अनेक पात्र और अपना बचपन याद आते हैं।

कुल मिलाकर 'डिजाइनर घोंसला' एक उपयोगी और रोचक पुस्तक है जो समाज और बालमन को सही दिशा और संतुलित सोच के लिए प्रेरित करेगी। ढेर सारी शुभकामनाएँ आ. शिखर चंद जैन जी को मेरी ओर से और अन्तरा शब्दशक्ति परिवार की ओर से।

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन का सौभाग्य है कि एक उपयोगी कृति के प्रकाशन का दायित्व हमें मिला। अब बारी आप पाठकों की है कि पढ़कर बताएँ कि लेखक और प्रकाशक कितने सफल हो पाए अपने मंतव्य को पूरा करने में।

पुस्तक का नाम- डिजाइनर घोंसला
(बाल कहानी संग्रह)
लेखक- शिखर चंद जैन, कोलकाता
प्रकाशक- अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप सोनी
मूल्यरू- १५०/-डाक व्यय

तिरंगी चादर

डॉ. किरण जैन

भारत के राज सिंहासन पर तिरंगी चादर लहराती है।
गीता कुरान बाइबिल का करना आदर सिख लाती है।
ममता के दामन सी उजलीहर जख्म मेरा सह लाती है।
यह चादर ही हमको अपने वीरों की याद दिलाती है।

इस चादर के हर धागे मैं इस देश का प्रेम समाया है।
इस चादर ने हर मजहब को हंस कर गले लगाया है।
इस चादर की शीतल छाया मस्तक पर हाथ फिराती है।
इस चादर से महकी महकी सावन की खुशबू आती है।

इस चादर को छू लेने से मन को सुकून मिल जाता है।
जैसे ममता के आंचल में रोता बालक सो जाता है।
गंगा की धारा है चादर और प्रेम की राह दिखाती है।
दुख दर्द बांट लो आपस में यह चादर ही सिखलाती है।

इस चादर की गौरव गाथा वीरों की अमर कहानी है।
इसकी आंखों से ही बहता गौतम नानक का पानी है।
गांधी की सेवा है चादर सोया विश्वास जगाती है।
भारत की दिल्ली मैं देखो वीरों को ताज पहनाती है।

इस चादर की तो आसमान से ज्यादा ऊंची हस्ती है।
इस चादर पर लिखी हुई गीता कुरान की पंक्ति है।
इस चादर की राम कृष्ण शंकराचार्य मर्यादा है।
इस चादर पर सत्य अहिंसा महावीर की भाषा है।

इस चादर को हम विश्व के कोने कोने में फहरायेंगे।
इस चादर से खिलती कलियों का जीवन सहलायेंगे।
इस चादर की आन बान जीवन का लक्ष्य हमारा है।
अपने प्राणों से भी बढ़कर राष्ट्र हमें प्यारा है।

रक्षा बंधन

राजीव रंजन शुक्ल

श्रावण मास की पूर्णिमा
मनाते है हम पर्व 'रक्षाबंधन'
जिसमे 'वसुधैव कुटुम्बकम' की है भावना
प्रत्येक बहन अपने भाई को रक्षा का बंधन बांध
भूल जाती हर असुरक्षा को
काश यह भावना एक दिन सीमित नहीं होता
निर्भया कांड कभी नहीं होता
उन्नाव और कठुआ पूरे देश को नहीं झकझोरता
बहन-भाई के नाते में लौकिक बहन का रहता नाता
स्वाभाविक रूप से जो पवित्रता लिए रहता
बहन जब अपने लौकिक भाई की कलाई पर राखी बांधती
संकल्प देती है कि
भाई दुनिया की सभी नारियों को,
कन्याओं को ऐसी ही नजर से निहारना
किसी भी महिला को अपनी अस्मिता
एवं सम्मान के लिए न हो संघर्ष करना
रक्षाबंधन पर्व की सार्थकता बनाना
और आदर्श राष्ट्र की परिभाषा बनाना
चलो रक्षा के बंधन के संकल्प को आगे है बढ़ाते
पर्यावरण को भी हम है बचाते
पेड़ पौधों को रक्षा के बंधन से है बाँधते
नदियों को प्रदूषित होने से बचाते
रक्षाबन्धन पर्व
सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का है
सांस्कृतिक उपाय चलो हम बताते

शब्द मसीहा केदारनाथ

हस्बेंड बाय लॉ

अस्पताल की बेंच पर अजय उदास सा बैठा हुआ था। फिनाइल और सेनीटाइजर की खुशबू के बीच उसका ध्यान परफ्यूम की खुशबू ने खींचा। दो सीट के फासले पर एक महिला बैठी हुई थी। चेहरे पर मास्क और हाथों में दस्ताने, आँखों पर चश्मा और धनुषाकार भवों के नीचे खूबसूरत मोटी-मोटी आँखें। महिला अभी भी स्वागत डेस्क पर खड़ी हुई नर्स को देख रही थी। अजय के मन में एक अजीब सी हलचल मची हुई थी। उसे महिला के डील-डौल से लग रहा था जैसे यही उसकी साधना है। मगर किसी भी औरत को कोई पुरुष ऐसे, कैसे पुकार सकता है।

''मेडम साधना! आपका फाइल तैयार हो गया है। आप कमरा नंबर ३०२ में चले जाएँ।''

नर्स के साधना नाम पुकारते ही अजय से रुका नहीं गया। वह अपनी जगह से उठा और बोला ''क्या हुआ साधना? सब ठीक तो है? तुम अस्पताल में कैसे?''

साधना ने अजय की तरफ रुख किया और ध्यान से देखा।''अजय! मैं भी इन्सान हूँ और बीमार भी होती हूँ। पर तुम यहाँ कैसे ?''

''कुछ नहीं, माँ की तबीयत खराब चल रही है। छोटे भाई की घरवाली उनके पास है। उनकी कुछ रिपोर्ट्स अभी आनी हैं, बस उनके आने का ही इंतजार कर रहा हूँ।'' अजय बोला।

साधना कुछ नहीं बोली थी। बस चुपचाप उसे देखती रही थी। उन दोनों की आँखों के इस मौन को नर्स ने तोड़ा था।

''मैडम ! दस हजार रुपये जमा करा दीजिये कैश काउंटर पर।''

साधना ने अपना पर्स खोला था और उसमें पैसे ढूंढ ही रही थी कि अजय ने अपना क्रेडिट कार्ड आगे कर दिया था।

''ओ के ! डिजिटल पेमेंट यहाँ हो जाएगा।'' नर्स ने कार्ड को मशीन के हवाले करते हुए कहा।

''नहीं ....मैं कैश जमा करा देती हूँ।'' साधना ने हौले से कहा था।

''कोई बात नहीं, अभी तुम मुझसे अलग नहीं हुई हो साधना शर्मा। कुछ तो हक बाकी है अभी!''

इसके बाद अजय काउंटर की तरफ मुड़ गया। मशीन में ट्रांजेक्सन देखा और पिन डाल दिया।

''थेंक यू सर ! आपकी रिपोर्ट आने में अभी समय लगेगा। मैं सीधे डॉक्टर लाल के पास भिजवा दूँगी।'' नर्स ने कहा तो अजय को अब मौका मिल गया था।

''आओ तुम्हें कमरे तक छोड़ दूँ। मुझे पता है कि लिफ्ट में तुम्हें डर लगता है।'' अजय बोला।

''रहने दो। मैंने अपने डर पर काबू पा लिया है।'' साधना लिफ्ट की तरफ बढ़ चली थी। अजय बिना परवाह किए उसके पीछे चल पड़ा था। लिफ्ट थर्ड फ्लोर पर रुक गई थी। दोनों बाहर निकले और कमरा नंबर ३०२ में दाखिल हो गए। अजय पास में पड़े स्टूल पर बैठ गया था और साधना अपने बैड पर लेट गई थी।

''क्या हुआ है तुमको ?''

''वही जो इस उम्र में हर औरत को हो जाता है। यूटरस में रसौली है। अब उसको रिमूव करना है।'' साधना बोली।

''कोई और ईलाज नहीं है क्या ? इसके बाद तो कई तरह की और भी समस्याएँ भी आएंगी और आराम भी चाहिए दो-तीन महीने का।'' अजय बोला।

''हम्म।'' साधना ने एक गहरी सांस ली थी।

''माँ नहीं आई साथ में ?'' अजय ने पूछा था।

''अब मैं अकेली हूँ। बाबा को सांस की बीमारी ने निगल लिया और माँ निमोनिया से मर गई। कोई नहीं आयेगा।'' साधना ने चश्मा उतारकर अपनी नम आँखों को पोंछते हुए कहा।

''क्या कह रही हो तुम ? कब हुआ ये सब ?'' अजय ने चौंकते हुए कहा।

''दो साल हो गए।'' एक ठंडी आह भरते हुए साधना बोली।

''ओह ! लेकिन तुम मुझे खबर तो कर सकती थीं।'' अजय बोला।

''किस रिश्ते से खबर करती ? तुमने तो फिर पलटकर नहीं देखा मुझे ?'' साधना बोली।

''ये इल्जाम झूठ है। मैंने कई बार कोशिश की, तुमने मुझे हर जगह से ब्लॉक कर दिया था। कई दोस्तों ने तुमसे बात करने की कोशिश की मगर तुमने किसी का फोन नहीं उठाया, किसी से बात नहीं की। उल्टे तुम मेरे ही दुश्मनों के हाथ में खेलने लगीं।'' अजय बोला।

''मुझ में प्रतिभा थी, मैंने उसका उपयोग किया। तुम्हारे साथ रहकर मुझे वो सम्मान नहीं मिल रहा था जिसकी मैं हकदार थी। सच कहूँ तो मैंने गलत निर्णय लिया था तुमसे शादी कर के। माँ ने मुझे कभी माफ नहीं किया। मैं अंधी हो गई थी तुम्हारे प्यार में।'' साधना बोली।

''तो क्या मैंने कम प्यार किया था तुम्हें। तुम्हारे जाने के बाद मैं कितना परेशान हुआ जानती हो! बीपी बढ़ गया, शुगर हो गई और मेरी आँखों में खून तक उतार आया। मेरे डिप्रेशन में मेरे साथ कौन था ? मैंने जब मरने की कोशिश की तब मेरे भाई ने न जाने कैसे दरवाजा तोड़कर मुझे बाहर निकाला, तब जाकर मेरी जान बची।'' अजय बोला।

साधना बस चुपचाप उसे देख रही थी। कमरे में कुछ देर मौन छाया रहा। फिर साधना ने मौन तोड़ते हुए पूछा- ''क्यों की ये बेबकूफी ?''

''तुम्हारे जाने के बाद मैं बिलकुल अकेला हो गया था। मेरा मन किसी काम में नहीं लगता था। मुझे

छोडकर जाने की खबर बहुत सारे लोगों को हो गई थी और ये भेद भी खुल गया था कि साधना शर्मा का पति एक एस सी है। मेरा प्यार मुझे हारता हुआ लग रहा था और हारे हुए इन्सान का जीना कितना दूभर हो जाता है इस दुनिया में, ये तुम नहीं समझ सकतीं।'' अजय बोला।

''और मैं भी बाद में समझी इस बात को कि एक ब्राह्मण परिवार से होते हुए भी मैंने तुम्हारे प्यार में पड़कर कितनी बड़ी गलती की। मेरे बाबा तो किसी तरह सह गए मगर माँ नहीं सह सकी।'' साधना बोली।

''हा हा हा .... तुमने क्या पाया ? क्या किसी ब्राह्मण में और मुझमें कोई फर्क था? क्या मेरा प्यार किसी भी ब्राह्मण से कमजोर था? क्या वो सुख कम था जो मैंने तुम्हें दिया?'' अजय बोला।

''शरीर के सुख के साथ मानसिक और सामाजिक सुख की भी जरूरत होती है।'' साधना ने जवाब दिया।

''मानसिक सुख देने में मैंने क्या कमी रखी थी। हर जगह तो तुम्हें ही आगे रखा था। मैंने तो कंपनी के नाम में भी खुद को पीछे रखा, तुम्हारे सम्मान के पीछे ही रहा मैं। तुम्हारे कहने से मैंने तो अपनों को भी पराया कर दिया। क्यों इतनी नफरत पैदा हो गई तुम्हारे दिल में? ऐसा कालेज के समय तो न था तुम्हारे दिल में ?'' अजय ने कहा।

''जानते हो, मेरी माँ के अरमानों पर मैंने पानी फेर दिया। मेरी माँ तुम्हें कभी अपना न सकीं और मैं अपनी माँ को कैसे छोड़ देती? कालेज के समय तो मैं नादान थी। मुझे शायद जमाने की हवा का अंदाजा नहीं था। माँ को क्या-क्या नहीं सुनना पड़ा था मेरे कारण।'' साधना बोली।

''और तुम्हें अपना बनाए रखने के लिए, तुम्हारी माँ को खुश रखने के लिए मैंने अपने भाइयों को और अपनी माँ को जीते जी मार दिया सो कुछ नहीं। मेरी माँ बीमार थी, मगर तुमने मुझे कसम दे दी कि मैं उसे देखने नहीं जाऊँ। फिर भी तुम्हारी खुशी की खातिर मैंने अपने सीने पर पत्थर रख लिया। मेरी माँ ने तो कभी तुम्हें बुरा भला नहीं कहा, पर जब-जब मैं तुम्हारे घर गया, तुम्हारी माँ ने क्या कभी कमी छोड़ी मेरा अपमान करने में ? फिर भी मुझे सिर्फ और सिर्फ तुमसे ही सरोकार था। मैंने क्या कम अपमान और दुख सहा ....बताओ।'' अजय भी जैसे अपने मन की सब बात कह देना चाहता था।

''छोड़ो ....जाने दो इस सब को।''साधना बोली।

''साधना ! क्या-क्या जाने दूँ मैं ? तुम्हें मालूम है कि मैंने और क्या-क्या सहा है ? तुम्हारा नाम जब उस पत्रकार के साथ लोगों ने जोड़ा तो जानती हो लोगों ने मुझे नपुंसक तक कहा। जबकि मैं जानता था कि थायरायड और हारमोन डिसअॅर्डर की वजह से माँ तुम नहीं बन सकती थीं। मैं अपने भाई का बच्चा का गोद ले सकता था, तुम्हारे जीवन की हर कमी पूरा कर सकता था, लेकिन तुमने मुझे कभी ठीक से समझा ही नहीं। ससुराल के हस्तक्षेप से हमारा घर बर्बाद हुआ, किसी ब्राह्मण का या किसी एस सी का नहीं।'' अजय बोला।

''जो नहीं हो सका अब उसके लिए सोचने से क्या फायदा। गुजरे हुए समय को लौटाया तो नहीं जा सकता। एक गलती के बाद दूसरी गलती अपने आप छोटी लगती है। ये ब्राह्मण और एस सी का मिलन असंभव है। मेरी सोच उस समय बचकानी थी जब मैंने अपने ही माँ-बाप और समाज के खिलाफ जाकर ये निर्णय लिया था। हम दोनों ही शायद प्रेम में पागल थे। मानती हूँ तुमने भी कष्ट उठाए हैं।'' साधना ने जैसे स्वीकारोक्ति दी थी।

''किसी भी नए काम में कष्ट तो आते ही हैं और बगावत इतनी आसान भी नहीं होती। समाज के लिए नए रास्ते बनाने के लिए कष्ट उठाने ही पड़ते हैं। मैं तो अपनों का भी निशाना बना और परायों का भी। लेकिन मैं अपने प्यार को दोष नहीं दूँगा....वो मुझे कभी मंजूर नहीं।'' अजय बोला।

''तुमने भी तो ताना मारा था कि तुम जैसी सैकड़ों आ जाएंगी शादी को ? क्या तुम्हें मेरा अपमान ऐसे करना चाहिए था ?'' साधना फफक कर बोली।

''लेकिन उकसाया किसने था ? हर बात पे धर्म और जाति को कौन लाता था ? मैंने कितनी बार कहा था कि अपने घर अकेली जाया करो। लेकिन तुम्हारी जिद ने ही तो अपमान का बीज बोया। समय का इंतजार तो कर सकती थीं तुम, जब हमारे बीच कोई मंभेद नहीं था तो तुमने ये कदम क्यों उठाया ? क्यों चली गईं घर छोड़ के?'' अजय ने कहा।

''मैं नहीं जानती थी कि जिन जड़ों से मैं जुड़ी रही थी उन जड़ों को इतना कष्ट होगा। मेरे घर परिवार की इज्जत और मान सब चला गया। और तुमने जो झगड़ा किया उसके बाद मुझे लगा कि हमारा अलग हो जाना ही ठीक है और हम दोनों की भलाई है।'' साधना बोली।

''हाँ....और मेरे घर दृपरिवार का अलग कर देना और अपमान नहीं हुआ जैसे ? तुम्हारा नाम किसी और के साथ जुड़ा वह तो जैसे हमारे लिए सम्मान की बात थी ?'' अजय बोला।

''तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो, किसी की हिम्मत नहीं नहीं हो सकती कि मेरे पास भी फटके। बाकी कोई अफवाह ही उड़ाना जानता हो तो उस से मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता। इतनी मजबूत हूँ मैं। और अगर इतना ही डर था तो सीधे मुझसे पूछते।'' साधना बोली।

''हम्म ....तुमने तो जैसे बहुत सारे रास्ते खुले छोड़ दिये थे न मेरे लिए, जो तुम्हें फोन लगता और पूछ लेता ?'' अजय ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

''घर का रास्ता नहीं भूल गए थे तुम। फेसबुक से तो पता चला ही होगा कि मेरे साथ क्या-क्या हुआ है ? तब अपना हक जताने क्यों नहीं आए ? तब अपना फर्ज निभाने क्यों नहीं आए ?'' साधना ने भर्राए स्वर में कहा।

''मैं नहीं हूँ वहाँ पर। अब फेसबुक का काम स्वाती देखती है। मैं सिर्फ प्रकाशन से जुड़े काम ही करता हूँ। घर वो होता है जहां दुनिया से थक कर आदमी सकून पाता है, उस घर से तो मुझे नफरत ही मिली और तुमने भी क्या कहा था कि तलाक से कम कुछ भी मंजूर नहीं तुम्हें ?'' अजय बोला।

इस बार साधना ने अपना माथा पकड़ लिया था। उसकी घिग्गियाँ बंध गईं थीं। मोटी-मोटी आँखें आंसुओं से तर और लाल हो गईं थीं। कभी चश्में को हटाती साधना तो कभी चुन्नी से अपने आंसुओं को पोंछती। काफी समय खामोशी से गुजर गया था।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और डॉक्टर के साथ एक नर्स ने कमरे में प्रवेश किया। डॉक्टर ने फाइल देखी। नर्स ने बीपी लिया और खून का सेंपल चेक किया। तब नर्स बोली - "सर! बीपी तो काफी बढ़ा हुआ है और शुगर भी ज्यादा है।"

"आपने क्या दवा नहीं ली ? ऐसे में तो ऑपरेशन करना मुश्किल है। आपको वो दवाएं खाकर और अपनी नॉर्मल रिपोर्ट के साथ आना होगा। तब तक आप घर जाकर आराम करें और इस बात की बिलकुल भी चिंता न करें। मैं आज का आपका खर्चा बचा दूँगा। आज के कोई भी चर्जिस आपसे नहीं लिए जाएँगे। वैसे आपको ये भी बता देना चाहता हूँ साधना जी कि बीपी और शुगर कोई बीमारी नहीं हैं, ये सिर्फ लाइफ डिसॉर्डर हैं। इसे सुधार लें ....सब ठीक हो जाएगा।" डॉक्टर मुसकुराते हुए बोला। उसने पेपर्स की फाइल ली और उस पर कुछ लिखने लगा।

"अरे! आपके पेपर्स पर आपके हस्बेंड की पर्मिशन भी नहीं है। भाई साहब ! आप इनके कौन हैं ?" डॉक्टर ने अजय से पूछा।

"मैं इनका हस्बेंड हूँ कानून के हिसाब से।" अजय बोला।

"हा हा हा ...वैरी जॉली ....हा हा हा। कानून के हिसाब से। आप क्या वकील हैं ?" डॉक्टर ने हँसते हुए कहा।

"जी, बिल्कुल सही पहचाना आपने। वकील तो हूँ पर जिंदगी की अदालत में अपनी दलील नहीं चलती है।" अजय बोला।

"अगेन जॉली आंसर ....हा हा हा। भाई मियां-बीबी की सहमति के बिना ऑपरेशन नहीं हो सकता और पति-पत्नी के बीच के कोई भी आए ....उसकी चलती नहीं है। मिस्टर अजय ! अगली बार अपने साइन कर के ही इन्हें साथ लाना ....वैरी जॉली कपल।" डॉक्टर हँसते हुए नर्स के साथ कमरे से बाहर निकल गया था।

साधना अपना कपड़ों का थैला सम्हालने लगी थी। वह अजय की तरफ पीठ किए थी। थैला उठाकर जैसे ही साधना ने देखा तो अजय भी अपना चश्मा हटाकर अपने आँसू पोंछ रहा था।

"तुम्हें क्या हुआ ? तुम क्यों रो रहे हो ? रोना तो सिर्फ औरत की किस्मत में ही लिखा है भगवान ने।" साधना बोली।

"साधना ! मुझे नहीं लगता कि भगवान होता है और जहां तक औरत के भाग्य में दुख-सुख लिखने की बात है तो याद रखो कि हम ही अपने जीवन में सब सुखों और दुर्घटनाओं को निमंत्रण देते हैं। हमारी अपनी जिंदगी का उदाहरण तुम्हारे सामने है, गल्तियाँ हम करते हैं और दोष किसी और को देते हैं।" अजय बोला।

"तुम तो सारी गलती मेरी ही बता रहे थे न, तुम्हारी तो कोई गलती नहीं है। मैंने ही गलती की है मैं ही भुगत लूँगी, और ये झूठ का रोना बंद करो, जाओ अपनी माँ की रिपोर्ट ले लो। मेरा क्या है ...भगवान हो या न हो ....काट लूँगी अपनी जिंदगी।" साधना बोली।

"हाँ, मैं तो पत्थर हूँ न ....डॉक्टर की बात पर न जाने क्यों आँसू निकल आए थे ..... वैरी जॉली कपल कहा था।" अजय ने थैला पकड़ते हुए पूछा- "कहाँ छोडना है ?"

"अब कहीं छोडने की जरूरत नहीं, मैं चली जाऊँगी अपने आप।" साधना ने कहा।

"नहीं, कुछ देर ही सही, मैं शायद अपने काम आ सकूँ। चलो घर छोड़ देता हूँ।" अजय ने थैला अपने हाथ में ले लिया था। साधना चुपचाप उसके पीछे लिफ्ट तक आ गई थी। दोनों लिफ्ट में प्रवेश कर गए थे। अब वे दोनों ही लिफ्ट में थे।

"बहुत मोटी हो गई हो, ख्याल रखा करो अपना। दिल के लिए ओवर वेट नुकसानदायक होता है।" अजय बोला।

"अब किस के लिए ध्यान रखूँ ? कोई चाहत नहीं बाकी नहीं रही मेरी जिंदगी से।" साधना बोली।

"मेरी आँखों में देखो और कहो कि मेरी आँखों में कोई चाहत है या नहीं ?" अजय ने साधना का हाथ पकड़ते हुए कहा। साधना ने अपना चेहरा ऊपर किया तो आँखों में मोटे-मोटे आँसू थे। साधना के हाथ की पकड़ मजबूत हो गई थी अजय के हाथों पर। आँखों में दोनों की आँसू थे और जुबान बंद। लिफ्ट का दरवाजा खुला दोनों बाहर निकले और कार की तरफ बढ़ गए। साधना पीछे बैठने लगी थी।

"मालकिन ! तुम्हारी जगह अभी भी आगे है .... .ड्राइवर मत बनाओ मुझे, अभी भी पति हूँ तुम्हारा ...हस्बेंड बाय लॉ।" अजय ने हँसते हुए कहा। साधना अगली सीट पर बैठ गई। अजय ने फोन निकाला और अपने भाई को लगाया।
'अरे! भाई, प्रीति को कहना कि माँ की रिपोर्ट ले ले और माँ के पास रहे। भाभी से कहना कि तैयारी करे .....देवरानी घर आ रही है।" उसके बाद अजय ने फोन कट कर दिया। गाड़ी कालेज के सामने से गुजर रही थी, जहां दोनों का प्यार परवान चढ़ा था।

फोन फिर घनघना उठा था और रिंगटोन बज रही थी ...याद रहेगा प्यार का वो रंगीन जमाना याद रहेगा ....इस दुनिया में छोटी सी दिल की दुनिया बसाना याद रहेगा।

"अरे! फोन तो उठा लो।" साधना बोली।
"तुम साथ आ गई हो अब फोन उठाना बंद। मुझे क्या, अब सुनो सबकी कि अजय, साधना में इतना खोया रहता है कि किसी का फोन नहीं उठता ....हा हा हा।" अजय बोला।

इस बार साधना का सिर अजय के कंधे पर आ गया था और खिड़की से आती तेज हवा साधना के बालों को अजय के चेहरे पर बिखरा चुकी थी। साधना के होठों पर अब मुस्कान थी। साधना को अब अपनी मंजिल भी बताने की जरूरत नहीं थी।

शब्द मसीहा केदारनाथ

माधवी उपाध्याय

आँसू पी कर जो जीते हैं

दिन-रात परिश्रम कर के
दो पैसे जो कमाते हैं।
परिवार के संग जीवन
तंगहाली में बिताते हैं।
आँसू पी कर जो जीते हैं
वही श्रमिक कहलाते हैं।।

जेठ की तपती दोपहरी
औ पूस-माघ के जाड़े में।
सावन में जो भींग-भींग कर
नयनों से अश्रु बहाते हैं
पीर छुपाकर जो जीते हैं
वही श्रमिक कहलाते हैं।।

भूखे रह बच्चों के संग
यदा -कदा वे सो जाते हैं।
तनिक भी ना उफ्फ करते
तड़के उठ काम पे जाते हैं।
जिनके पग कांटों पे बढ़ते हैं
वही श्रमिक कहलाते हैं।।

खेतों औ खलिहानों को वे,
अपने श्रम से उपजाते हैं।
पाषाणों को तोड़-तोड़ कर
नये रास्ते वे बनाते हैं।
जो मन के घावों को सहलाते
वही श्रमिक कहलाते हैं।।

विश्व कोरोना से जूझ रहा,
मजदूरों पर आफत आई।
यत्र -तत्र सब फंसे हुए हैं
यह कैसी मुसीबत आई।
कठिनाइयों में जो जी लेते,
वही श्रमिक कहलाते हैं।।

एक सोच.... एक ख्याल

पवन अरोड़ा

कैसे मिलो तुम?
कैसे पाऊं?
लगा नकाब
बिछा शतरंज
चाल पर चाल
बस जीत जाऊं
देह!
हाँ! देह....

सुनों!
मुझे तुम..?
सच.
तुम्हारी देह पसन्द
उस समय तक.... जब तक
एक खिंचाव, एक यौवन
तब तक..
भोग न लूँ
देह....

कहाँ होता सन्तुष्ट मैं
प्रेम भरी बातो से
सच्ची चाहतो से
खेलता
खिलाता बातो को
मगर
नजर, सोच
देह.. भोग..
जब नही रहता खिंचाव
न यौवन... ढल जाती
देह...

तो..
अंदर ही अंदर
जागी रहती
बढ़ती भूख
उम्र क्या?
जब सुनता, कहता
मर्द हमेशा जवां
तो भूख मेरी...
कैसे सोये
देख देह..

फिर
मुखोटे लगा
तरह-तरह के रूप बना
ख्वाब...सुनहरे दिखा
बना और जोड़ लेता
झूठे... सच्चे.. रिश्ते
पाने को
दबोच लेता
झट से भूलकर सब
बन भेड़िया
देह..

डॉ कुमुद बाला

मुखरित कविता

द्रवित, संवेदित हृदय की कल्पना से,
स्पंदित कविता होती है मुखरित
संवेदना की बारिश में अक्षरों की,
प्रार्थना होती है अंकुरित
शब्दों की डोली उतरी पनघट पर
परछाई से रस्ता रही थी पूछ
उजाले को लीलता अंधियारा
परछाई जाने कहाँ गयी कूच
भटके शब्दों में फिर से जंग छिड़ी
अफरा-तफरी और मच गई लूट
बिछड़े अपने संगी और साथी
थे मेले-रेले सब पीछे छूट
भेजें कहाँ शब्द मधुर पाती,
ऐसे अश्रु की दुनिया होती है विकसित
द्रवित, संवेदित हृदय की कल्पना से,
स्पंदित कविता होती है मुखरित
लताओं-वल्लरियों की गुपचुप बातें
हों शब्दों की आंखमिचौली जैसे
अँखियाँ दोनों सुख-दुख में भींगी
कौन समझे औ समझाये कैसे
गम की है झीनी-झीनी चदरिया
अब नेह निमंत्रण पढ़े वह कैसे
यही विडंबना रही हमारी भी
रिश्तों पर आखिर बोलें तो कैसे
भ्रम में क्षितिज छूने की चाहत,
किसलय से किरण होती है अनुबंधित
द्रवित, संवेदित हृदय की कल्पना से,
स्पंदित कविता होती है मुखरित

दिल के सरताज बनोगे क्या!
मेरे हमराज बनोगे क्या!

मेरे चेहरे पर छाई हर,
रौनक का ताज बनोगे क्या!

बीते कल की बात न जानूँ
मेरा तुम आज बनोगे क्या!

दिल मेरा अब उड़ना चाहे,
बोलो परवाज बनोगे क्या!

गीत अगर जब कोई गाऊँ,
ऐसे में साज बनोगे क्या!!

मोहिनी गुप्ता

डॉ स्वाति भटनागर

एक हीलर की व्यथा

हे परमात्मा!
मैं तुम्हारी छाया.
एक प्रकाश पुंज
दृश्य हूँ.. साक्ष्य हूँ
तुम ही हो मेरे ऊर्जा स्रोत
तुम अदृश्य हो अनन्य हो
तरंगित आवृत्ति लिये
सर्वव्यापी सर्वोपरि हो
और कल तक मैं भी
आनंदित व निश्चिंत थी
तुम्हारे होने के अहसास से
खूब हर्षित ऊर्जा से ओतप्रोत
यह आभास ही पल पल
संबल देता था मुझे और
मैं जिसे हर क्षण पाती थी
हर पीड़ित दर्दी को
गले से लगाकर
उसकी पीठ थपथपाकर
जब सुनती थी उसकी पीड़ा
हाथ में हाथ लेकर
आंखों में आंखें डालकर
कुछ तरंगित अदृश्य
आदान प्रदान होता था
अंतर में उसके कुछ
घाटियां भरती थीं
पहाड़ टूटते थे
बर्फ पिघलते थे
तुम्हारी भगवत्ता के झरने
भी फूटने लगते थे
पीड़ा दर्द दुख बह जाते
सुरभित पुष्प खिलते थे
एक नव सृजन होता
प्रसव पीड़ा के बाद
एक नवजात जन्म लेता था
बहुत हर्षाती थी कल तक
किन्तु आज!!
तुम्हारा अहसास
मन में कुछ धुंधला सा रहा है
सब कुछ गड़बड़ा रहा
इसमें काला साया सा
कूट अनमना भय
विषैला सा परिणित
होकर हावी हो रहा है
और यह मेरा मन
सुर असुर संग्राम में फंसा
महिषासुर मर्दनी व
कैटभ भंजनी बना
शक्ति सम्पन्ना
दुर्गा सप्तपदी सा
दर्शक बना सब देख रहा है
दो अदृश्यों का द्वंद
एक तुम और दूसरा वाइरस
एक का आतंक ही चहूँ ओर
मुँह बाय खड़ा दिख रहा
अब तो तरंगीय स्तर उससे
ही सम आपेक्षित हो रहा है
और
तुम्हारा वह अहसास
मानो सतत खो रही हूँ

सोचती हूँ!
आज के हालात के बाद
कैसे बैठाऊँगी?
फिर से तुमसे मैं वह
अद्बुद्ध तरंगीय तालमेल
कैसे लाऊँगी ?
वापिस मेरी स्थिति प्रज्ञता

राम का मंदिर

डॉ. प्रीति समकित सुराना

धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।
शिलान्यास के शुभमुहूर्त का अनुमोदन जन-जन कर रहा आज,
रघुपति राघव राजा राम, बसे हर पतित पावन में।

सैकड़ों वर्ष अनगिनत मन तरसे
राम लला की किरपा बरसे
तरस रही थी पावन भूमि
अपने भगवान को पाने को
धन्य हुई है यह युग यह पीढ़ी
दिन आया यह जीवन मे,
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।

वर्ष २० संकट का काल है
जनजीवन यूँ भी बदहाल है
कण कण विश्व का डूब रहा
नैराश्य भाव के बंधन में
आज लग रहा स्वयं राम
लाएंगे सुख शान्ति जीवन में।
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।

हर्षित आज वह पुण्यभूमि है
प्रमुदित पूरा भारत है
हर गली में जयकारा राम का
हर मन में राम का स्वागत है
राम नाम मे रमकर देखो
मिलता है पुण्य अनुमोदन में।
धरा स्वर्ग सी सजी हुई है, अयोध्या के आँगन में।
राम का मंदिर बनने को है, जन्मभूमि के प्राँगण में।।
शिलान्यास के शुभमुहूर्त का अनुमोदन जन-जन कर रहा आज,
रघुपति राघव राजा राम, बसे हर पतित पावन में।

मतवाली शाम

दिनेश 'देहाती'

तुमने जो दिया था वो खत वाली शाम,
भुलाए नहीं भूलती वो मतवाली शाम।

सूरज को डूबोती वो हठ वाली शाम,
ठंडक देती ठंडी ठंडी मतवाली शाम।

पंछियों को पुकारते घोंसले, घर उनके,
धूंधलाती रोशनी से चाहत वाली शाम।

बूंदाबांदी बरसात की छत पर हो टप-टप,
टिन पर करे टपर टपर आहट वाली शाम।

दो जून की रोटी

विनोद वर्मा 'दुर्गेश'

रोटी बस दो जून की, दर-बदर भटकाए
पापी पेट कसम खुदा, बेगैरत बनाए।
बच्चे भूखे रो रहे, कब मिलेगा खाना
बस थोड़ा सा सब्र करो, माँ उन्हें समझाए।
कहीं जलालत सह रहे, कहीं माँगते भीख
रोटी से बढ़कर नहीं, दुनिया में खुदाए।
जी तोड़ मेहनत करें, बहे पसीना माथ
तब घर का चूल्हा जले, जेब गर्म हो जाए।
नीच काम भी कर रहे, रोटी की है भूख
पैसे वाले घोलते, विष जीवन में हाय।

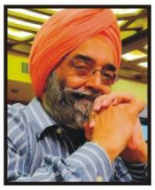

राजिंदर सिंह बग्गा

बात इधर उधर तो बहुत घुमाई जा सकती है
पर सच्चाई भला कब तक छुपाई जा सकती है

खून से बना के मां जो बच्चे को पिलाती है
उस दूध की कीमत कैसे चुकाई जा सकती है

मुश्किल है लड़ना अकेले गर किसी बुराई से
उसके लिए मुहिम भी तो चलाई जा सकती है

सहरा की प्यास तो समंदर बुझा सकता है
पर समंदर की प्यास कैसे बुझाई जा सकती है

नहीं हल निकलता गर तोप और बंदूकों से
लड़ाई प्यार से भी तो सुलझाई जा सकती है

खींच दी है दिलों में गर दीवार मजहब ने
उसमें कोई खिड़की भी तो बनाई जा सकती है

किसी बेबस पे जुल्म देख कुछ कर नहीं सकते
तो शर्म से ये गर्दन तो झुकाई जा सकती है

हाथ खड़े कर दें अपने जब दुनिया भर के वैद्य
तो दवा ए दुआ भी तो आजमाई जा सकती है

अपनी असलियत तो दौलत से छुपा लेगा कोई
पर औकात भला कब तक छुपाई जा सकती है

राह मुश्किल होती है जरा वक्त लग जाता है
दौलत ईमानदारी से भी तो कमाई जा सकती है

चलो मान लिया हमने कि बेगुनाह है 'राज'
पर उस पर कोई तोहमत तो लगाई जा सकती है

कीर्ति प्रदीप वर्मा

काश,
फिर वही अलसायी भोर
वही मतवाली शाम होती
उस अनदेखे-अनजाने संग
कभी हँसती कभी रोती!
पढ़ने के बहाने फिल्मी गीत
और शायरियां लिखती
कभी गुनगुनाती कभी शरमाती
घंटों मन ही मन बतियाती
सखियां सारी पगली बताती!!
कहां होगा? कैसा होगा?
मे ही, रैन बीत जाती
पता ही न चलता,
कब चिड़ियाँ चहचहाती?
कभी चाय उबल उबल कर
खत्म ही हो जाती...
होश आता,
जब माँ चिल्लाती!
सारी दुनिया दुश्मन नजर आती....
वो पॉकेट ट्रांजिस्टर
जो था सच्चा साथी,
छाया गीत सुनते ही
ज्यों प्राणवायु आती-
सारंगा तेरी याद में
नैन हुए बेचैन...

शिखर चन्द जैन
असर आभासी दुनिया का

आज बहुत दिनों के बाद.....
मैंने अपने पडोसी को
दूध की पैकेट लाते देखा,
मोहल्ले के हलवाई को
गरमागरम जलेबी बनाते देखा,
अखबार वाले चाचा को साईकिल पर सवार जाते देखा,
नीचे वाली भाभी को बैठकर सब्जियां छांटते देखा,
स्कूल वैन में खिलखिलाते उछलते बच्चों को देखा।

आज बहुत दिनों बाद.....
मैंने मोहल्ले में उग आई
छोटी छोटी गुमटियां देखीं,
मन्दिर में लगी नई घण्टियाँ देखीं,
मकान की चहारदीवारी पर कांच की किरचें देखीं,
सड़क पर पड़ी कंक्रीट की परत देखी।

आज बहुत दिनों बाद....
बेटी की नई चप्पल देखी,
दोस्त की सफेद पड़ी दाढ़ी देखी,
माँ के चश्मे की टूटी डंडी देखी,
पत्नी की आँखों की झांइयां देखीं।

जी आप जैसा समझ रहे हैं,
वैसा कुछ भी नहीं है.
मैं शहर में ही था ....
कहीं बाहर से नहीं लौटा हूँ ,
बहुत दिनों बाद।
बस,मेरा स्मार्टफोन नहीं है
मेरे हाथ में कल सुबह से।
इसलिए दुनिया को ष्देखनेष्ष का मौका मिल गया है।
फोन अस्पताल में है ठीक हो रहा है...
और मैं इस असल दुनिया में आया हुआ हूँ
लगता है 'ठीक' हो गया हूँ।
आभासी दुनिया के मायावी असर से
आज मैं मुक्त हो गया हूँ

-प्रकृति-प्रेमी-
रमा 'प्रेम-शांति'

आज भी बैठती हूँ
जब मैं छत पे
याद करती हूँ
तुझे ही छत पे
डूबते सूरज का
वो लालिमा नजारा
वो सुहानी शाम का
प्यारा इशारा
जब तूने पहली बार
छुआ था मुझको
अपने पे ही
छुईमुई सी
सिमट गई थी मै
और तुझसे
अन्तर्मन से
लिपट गई थी मैं
ना में भी मेरी
हाँ थी
तेरी चाह की
दिवानी हो रही थी मैं
वो मतवाली शाम
मिला रही थी
हम दोनों को
दुनिया से बेखबर
कर रही थी
हम दोनों को
एकदूजे में लिए
बना रही थी
हम दोनों को
ऐसी है वो
मिलन की प्यारी बात
आज भी याद आती है
मुझको -रमा-
वो मतवाली शाम।

नीतु जैन

ज्ञान की मुलाकात
हो गई घमंड से,,
प्रभाव ऐसा हुआ कि,
चुर चुर हो गया घमंड,,
भर गया घडा बनावट का,
ज्ञान ने बनावट की दशा बदल दी,,
फुटा घडा तो, रहा ना घमंड,
खुला प्रपंच तो,विवेक जाग गया,,
झुठे ढोगीपन मे जाग्रृती आई,
प्रभाव ज्ञान का ऐसा हुआ,,
खुद से खुद की मुलाकात कर ली,,
साथ आ गया था ज्ञान का प्रभाव,,
असर खत्म सा था अज्ञानता का।।

भरत कोराणा

विधवा

अरसे पहले मेरी देह
बेसर की मोती सम
अर्क अभीर से
सुरभि आभ मे खिलती थी
गुलशन की तरह।
जब से टूट गयी चुड़ियाँ
मानो लग रहा
मै भी मेरु विहीन दधीचि हु।
वे चुड़ियाँ नही वरन
मेरे कंधो का सहारा
सम्पूर्ण रीढ़ माल थी ।
आज टूटे कांच के
टुकड़े बन रह गए है
यह सुहाग के प्रतीक।
कितने पसीने घाम मे
इन आँचल ने पोछे
वेदना के मोती
जो दूर है आज
मेरे देह से
द्रोही की तरह।
मुझे विधवा का खीताब
इनको मरण शय्या पर
सुलाने के साथ
दे रहे है समाज के पटवारी।
मेरी किस्मत की खेती मे
सिंदूर की फसल
अब रास नही आयेगी
किसी भी परमेश्वर को।
अब मेरे काले कलुटे
परिधानों के साथ
हर कोई भद्र भी
अपशुकून का विचार
ले आयेगा मानस मे।
अब मेरे होठों पर लाल रंग
गर भूल से लग गया तो
श्रृंगार न रहकर
महज कामुकता का संकेत
गिना जायेगा हर एक नजर मे।
मेरे पहनावे पर
लक्ष्मण रेखा खींची है आज
किसी को मंजूर नही
पीली लुगडी
रेशमी बुटो के सालू।
कुडमई की मखमली यादें
हिलोर लेती है
चित्त के केनवास तो
केवल छलकती है आँखे
उस अनमोल धरोहर पर।
अब विधवा हु मै
मुझे आमन्त्रण नही
तीज त्योहारों मे
मेहंदी सजाना हाथ मे ।
और ना ही
किसी वैवाहिक पर्वो मे
पपीहा और झोरावू गाना।
मेरी रसोई से नाक फोड़ती
महकती महक
जब भी निकलती है
रोशनदान चिरकर
मोहल्ले मे चहुंओर
तब मोल होता है
मेरे चरित्र का
बगुला भक्तो की मंडली मे
की देखो विधवा के घर
मालपुआ बन रहे है।
अब मर्यादा के मापदंड
हर दम याद रखने पड़ेंगे
हरिनाम की तरह
क्युकी मै विधवा हु
और मर्यादा कभी खंडित न हो
फलत याद रखने है
स्त्री के नाम
विधवा के दोहरे मापदंड
जिसके विवर मे
मर्यादा पल रही है।

डॉ. अंजुलता सिंह

किताबों के पन्ने

लुभाते हैं मन को किताबों के पन्ने
सफेद, रंगीन चमकें सुहाने,
कवर का आकर्षण
खींचे है हर क्षण।

भू-लोक पर इनकी गूंजे महत्ता
दिलोदिमाग पर छाई इनकी ही सत्ता,
मधुरिम से शब्दों के
फहरें हैं परचम।

गम की, खुशी की
सहज बेबसी की,
रोचक, प्रभावी
बातें हों हावी।

गजब के ये पन्ने
लगें हर्ष बुनने,
कहीं भी,कभी भी
लगूं इनको गुनने।

परिवेश जब होता दुश्वार
जंग छिड़े मन में बारम्बार,
कलम बने तब तब
तेज धार-हथियार।

पढ़ें इनको पूजें
ध्वनि इनमें गूंजें,
कहती हैं क्या कुछ
चलो इनसे पूछें।

रेशमा त्रिपाठी

ए मेरी किताब

आनन्द के उन्मेष में
जीवन के अंश में
रोते हुए कंठ में
शोक के अंश में
आशा के शोर में
उन्माद के सन्तोष में
आत्मा की ग्लानि में
कर्म के मार्ग में
अधर्म और अन्याय में
बुद्धि के विचार में
अध्ययन और ध्यान में
गुरू और देव में
मैंने तुम्हें ढूंढा हैं
मैंने तुम्हें पूजा हैं
अज्ञानी के ज्ञान में भी
मैंने तुम्हें खोजा हैं
ए मेरी किताब
जीवन का सार तू
ज्ञान और अध्यात्म तू
धन और परिवार तू
प्रेम और प्रकाश तू
द्वन्द्व की अनुभूति में
जीवन का मार्ग तू
ए मेरी किताब।।

त्रिशला गुड्डा

कुसूर

गम सारे जहां का, हुआ साझा
चाहे रंक हो, और चाहे राजा
बेबसी सबकी, देखी ऐसी
देखी होगी ना, कभी वैसी
कैद मिली, सबसे ही निराली
बिन प्रत्यक्ष हुए, कुसूर वाली
किन्तु ऐ, मानस की जात
तू तो, हरगिज ना करना
प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, कुसूर वाली बात
सोचे दुनिया के, मेले में
आया है, सिर्फ विचरने
वेष खुद की, सहूलियत से
है पल-पल, में बदलने
उतार मुखौटा जरा, देख
अंतर तेरा, बोलेगा जरूर
जुल्म-पाप, अन्याय समेत
तेरे ना जाने, कितने हैं कुसूर
ऐ मानस ना जाने, कितने हैं कुसूर

नए युग का करें स्वागत.....

शैलेश तिवारी

पंडित जी ब्रह्म मुहूर्त में ही जाग कर जुट गए थे... आज को खास बनाने के लिए..। नित्य कर्म से फारिग होकर.. . नलकूप का बटन दबाकर.. . ताजा पानी आने का इंतजार करने लगे... कुछ ही सेकेंड में बाल्टी जल से पूर्ण हो गई..। प्राची की लालिमा उदघोष कर रही थी... नव संवत्सर के भुवन भास्कर के उदय होने का...। मंत्रोच्चार के साथ स्नान किया और यज्ञोपवीत भी बदला.. .। नहा धो कर तांबे के कलश में जल लिया, गंध और रक्त पुष्प से परिपूर्ण किया...। सीढ़ियां चढ़कर जब छत पर पहुंचे तो... नारंगी रंग का अर्द्ध सूर्य झांक रहा था पूर्व दिशा से..। मानो देख रहा हो.. कौन कौन उसके स्वागत को तैयार है.. जिन्हें उपहार में सौंपना हो.. ऊर्जा, उमंग, उत्साह और दिन भर तरोतजा रहने का खजाना ..। गिनती के ऐसे लोगों में शामिल पंडित जी ने भी.. ऊँ सूर्याय नमः.... के मंत्र के साथ अर्घ्य देना शुरु किया..। जलधारा के बीच से रवि की रश्मियों की झिलमिलाहट.... जीवन का गीत गुनगुनाती लगी...। नीचे आकर पहले नित्य पूजा और बाद में नये पंचांग का विधि विधान से पूजन किया.. फल श्रुति का पठन किया....। तत्पश्चात नीम की कोपलों और काली मिर्च के मिश्रण से तैयार तीन छोटी छोटी गोलियों को पानी के साथ गटका...। कुछ देर खुद के अंदर की यात्रा को प्राणों को आयाम देते हुए प्रारम्भ किया...। साँसों को गुरु मंत्र के साथ साधने के बाद घडी पर नजर गई तो सुबह के साढ़े नौ बज रहे थे...। तभी मोबाइल की घंटी घनघनाई... देखा तो अंकिता का वीडियो काल... फोन को कनेक्ट किया... तस्वीर उभरी एक युवती की... प्रणाम करते हुए उसने नव संवत्सर की बधाई दी..। पंडित जी ने भी यथायोग्य उत्तर दिया...।

अंकिता ने कहा... गुरुदेव सरिता और कपिल को भी कनेक्ट कर लूँ...।

ऐसा क्या हुआ अंकिता...। पंडित जी ने सवाल किया।

आज हम सब की कुछ जिज्ञासायें हैं.. जिन्हें आपको शांत करना है.. अंकिता ने कहा..।

अवश्य... जितना ज्ञान है... उसके अनुसार प्रयास करूँगा.. कि आपकी जिज्ञासायें शांत कर सकूँ...। पंडित जी ने जवाब दिया.।

और कुछ ही देर में स्क्रीन पर पहले एक और युवती का... फिर एक युवक का चेहरा उभरा। पंडित जी को समझते देर नहीं लगी कि.. इन युवाओं ने पहले से यह सवाल - जवाब का कार्यक्रम तय कर रखा था..।

सभी के एक दूसरे को नव वर्ष की बधाई का आदान प्रदान कर लेने के बाद कपिल की तरफ से पहला सवाल आया..... गुरुजी क्या है यह नव वर्ष... अभी एक जनवरी को तो मनाया था. .। अब फिर से....? जान बूझकर सवाल को अधूरा छोड़ दिया उसने...।

पंडित मेहता जी ने गंभीर होते हुए कहा... ईस्वी सन् का केलेंडर दिन और तारीख बताते हुए अपने पन्ने पलटते जाता है...। विक्रम संवत केवल दिन और तारीख ही नहीं बताता बल्कि आने वाले साल की सूरत और सीरत कैसी होगी... ये भी बताता है....।

लेकिन ज्यादातर लोग तो उसको ही मनाते हैं... ? सवाल सरिता की तरफ से आया..।

मैं उस को नहीं मनाये जाने की बात नहीं कर रहा हूँ.. उसे भी मनाएं.. लेकिन मेरा इतना कहना है कि भारतीय संस्कृति उदारवादी है..। सभी को अपने में समाहित करने की ताकत है इसके पास.. लेकिन मौसी को इतना न पूजा जाए कि... माँ ही बेगानी हो जाए...। ईस्वी सन् अगर मौसी है तो... विक्रम संवत हमारी माँ...। भारतीय संस्कृति की जड़...। जड़ के बिना भी कोई वृक्ष... पल्लवित, पुष्पित और फलित हो पाया है क्या..?

मेहता जी खामोश हुए तो तन्मयता से उनकी बात सुन रही अंकिता ने कहा.... और..?

उसके एक ही शब्द में सवालों का पिटारा नजर आया मेहता जी को...। वह पुनः बोले ईस्वी सन् के केलेंडर... केवल काल का चक्कर है... जबकि विक्रम संवत का पंचांग काल ला चक्र बताता है... कौन सा ग्रह कि चाल से.... कि नक्षत्र के माध्यम से किस राशि पर भ्रमण कर रहा है...। काल, समय, पल, क्षण, निमिष, विपल, लव, कोष्ठ, आदि की सूक्ष्म से सूक्ष्म गणना सनातन काल की गणित से संभव है। यही सालों पहले बता देता है कि अमुक अंग्रेजी तारीख को चंद्र या सूर्य ग्रहण.. इतने समय से इतने समय तक प्रभावी रहेगा..।

कुछ देर सांस लेने के लिए रुकने के बाद.. उन्होंने अपनी धीर गंभीर वाणी में अपनी बात जारी रखी.... काल की पूजा किए जाने की पद्धति हमारे पास है... महाकाल के रूप में काल यानि समय को ही पूजा जाता है... जिसे आज का युग टाइम मैनेजमेंट कहता है..।

रात बारह बजे साल के जश्न मनाने में बर्बादी ज्यादा है.. आचरण की, नैतिकता की, संस्कार की... लेकिन नव संवत.. इन्ही को पुष्ट करने का उत्सव है...। वह कुछ देर रुके..।

सरिता ने बीच में ही अपना सवाल दाग दिया... लेकिन विश्व में मान्य तो आंग्ल वर्ष ज्यादा है... ?

पंडित जी ने गिलास के पानी से गला तर किया और बोले... यह सच है... क्योंकि इसमें दिनांक का घटना बढ़ना नही होता... इस वजह से याद रखना आसान होता है...। यह सोर्य वर्ष आधारित है... जैसे हमारा शक संवत... वह भी सूर्य पर आधारित है। विक्रम संवत चन्द्र पर आधारित है... इसलिए तिथी में घटना बढ़ना होता है...। इसके बाद भी यह बात याद रखने वाली है कि.. दुनिया के तमाम मापने वाले पैमानों को मिट्रिक प्रणाली में यानि उसकी इकाई को सौ के हिसाब में बदल देने वाला आधुनिक विज्ञान समय को... मीट्रिक प्रणाली में नहीं बदल पाया... इसकी इकाई आज भी साठ ही है। एक घंटा साठ मिनट का... मिनट साठ सेकंड का..। सप्ताह सात दिन का ही है... पूरी दुनिया में... इसको भी दस दिन का नहीं बनाया जा सका...। वार का उदय भी एक शानदार किस्से से है... जिसको फिर कभी विस्तार से बताऊंगा..। लेकिन काल गणना में पैमाना भारत का ही चल रहा है...।

सरिता, अंकिता और कपिल ने एक साथ ताली बजाकर नई जानकारी का स्वागत और पंडित जी का आभार व्यक्त किया...।

शैलेश तिवारी

हंस जैन

रोटी

कुछ रोटी रख ली थी मैंने
और कुछ कम खायी थी
बच्चा भूखा होगा मेरा
हां भूख से एक छिपायी थी

वह बोला था जब भी आना
शहर की रोटी भी लाना
ले आना कुछ खेल खिलौने
छुक छुक करती गाड़ी ले आना

रोजी रोटी को मजबूर
पैदल चलता में मजदूर
भला कैसे मैं ले आता
पर फिर भी उसको बहलाता

बंद पड़ी है सभी दुकाने
रेल कहां से लाऊंगा
उठा लाऊंगा असली ही
उसमें तुझे बिठाऊंगा

हाय! बैरन धोके से आयी
सोते हुए पटरी पर आ गई
मेरे रक्त से रंजित रोटी
हाय! मुझे काटकर खा गयी!

मजदूर की परिवेदना

भवानी शंकर खन्नी

चलते चले गये
पांवों में पड़ते गये छाले
फिर भी रुके नहीं कदम
चाहे राह में हों नाले
जब थक कर हो गये चूर
तो यह भी ना देख पाये
और सो गये रेल पटरी पर
और दे दी अपनी जान
अरे इंसान
जिस जान को बचाने
इन कदमों से
असंभव मंजिल की ओर
बढा था और
लापरवाह बन
खो दी अपनी जान
हे जाने वालों
पहचानो अपने खुद को
लौट चलो वहीं
जहां कभी अस्थायी आसियां
बनाया था और पाला था
अपने परिवार को उसी से
आज फिर से वही आसियां
बुला रहा तुम्हें अपनी बाहें पसारे
हे प्रवासी! आ अब लौट चलें
तुझको तेरा काम बुलाये
आ जा रे आ जा रे।

सुमन अग्रवाल 'सागरिका'

फुरसत के पल

कोरोना महामारी के चलते हर मानव परेशान।
फुरसत के पल में खाली बैठे क्या करें इंसान।

देश में बेरोजगारी फैल रही है पड़े पेट के लाले,
प्रवासी मजदूर पैदल चल रहे पैरों में पड़ गए छाले।

कोरोना महामारी के चलते बाहर निकलना दुस्वार,
संकट में है मानव जीवन आज चिंतित है संसार।

कारखाने सब बंद हुए अब कैसे मिलेगा रोजगार,
अर्थव्यवस्था कमजोर हुई कुछ न करेगी सरकार।

त्राहि-त्राहि मच रही देश में बिगड़ गए हालात।
रोजगार सब ठप्प हुए लोग झेल रहे है आघात।

घर के भीतर बंद किया आज हुआ मानव लाचार,
अहनलाइन सब काम हो रहे, बंद पड़ा बाजार।

शून्य हुई मानव संवेदनाएँ, सड़कें हुई सूनसान,
फुरसत के पल में बैठें-बैठे थम सा गया इंसान।

डॉ. अनीश गर्ग

क्षणभंगुर

बाहर देखा
स्ट्रीट लाईट पर
अनगिनत
कीट-पतंगों का
जमावड़ा सा!
मां ने अनुभव के
शब्दकोश से
समझाया
इनके ताजे-ताजे
पंख निकले हैं
बस ये रोशनी के
आसपास मंडराएंगे....
और
कुछ घंटों में
मर जाएंगे....
यानि!
पंख निकले
रोशनी से भ्रमित
और फिर
सब समाप्त
सोचने पर मजबूर हूं!
आदमी के भी तो
जब पंख
निकल आते हैं
और वो!
रोशनियों के पीछे....
और एक दिन!
वो भी.....

राम प्रसाद यादव

आत्महत्या

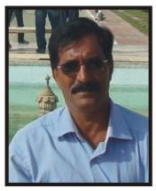

मैं भी आत्महत्या करता
लेकिन मैं पांचवीं माले पर नहीं
जमीन पर हूं
मैं फिलहाल जिस फूटपाथ पर रहता हूँ
उसका किराया कभी कभार
पुलिस की मार है
सर्दी गर्मी बारिश जैसी
आसमानी बेरुखी है
मेरे बैंक खाते में
भूख है, जहालत है, बीमारी है
मेरे सगे संबंधियों में
मेरी तरह बीमार और भूखे
कुछ कुत्ते हैं
मैं भारत के भाल पर
एक निर्लज और गलीज कलंक हूं
विधिवत मुझे
कब का मर जाना चाहिए था
फिर भी मैं जी रहा हूं
आत्म हत्या अक्सर आदमी करता है
और मैं किसी एंगिल से
आदमी नहीं हूं
सुशांत, तुम्हारी बदकिस्मती
कि तुम आदमी थे!

भावार्पण

अब तो आ जाओ एक बार।
सुन लो मेरे मन की पुकार।।
सूना घर आँगन द्वार द्वार।
मन में मेरे दुख है अपार।।
जाते जाते बस एक बार,
जी भर कर तुमको ले निहार।
अब तो आ जाओ एक बार।।

डॉ शिवा त्रिपाठी 'सरस'

डॉ. रीता तिवारी

कल और आज

गर हम पीछे मुड़ कर देखें,
तो पाएंगे हम यह की,
परिवर्तनशील जगत में कितने,
बदल गए हैं लोग सभी।
इस परिवर्तन को हम अब,
पीढ़ी का अंतर कहते हैं,
क्या यह अंतर इतना ज्यादा है,
या बदल गए हैं लोग सभी।
पहले बच्चे पैदा होकर,
मां के आंचल में पढ़ती थे,
अब मां के पास तो वक्त नहीं,
आया की गोद में पलते हैं।
पीकर मां का दूध वो बच्चे,
दूध का कर्ज समझते थे,
बोतल के सहारे पलते जो,
बोतल ही उनकी माता है।
पहले प्रातः उठकर बच्चे,
आशीष बड़ों से लेते थे,
बाय हाय के इस युग में,
बस हाय हाय ही करते हैं।
पहले बच्चे तुम खेल कूद कर,
वापस घर को आते थे,
मां के हाथों का बना हुआ,
पकवान मधुर वो खाते थे।
पर आज बिचारी माता को,
बच्चा बेचारा फास्ट फूड और,
कोल्ड ड्रिंक में है पलता।
कैलोरी खा खा कर करके जब,
बच्चा मोटा हो जाता है,
तो अपना फिगर बनाने को,
वो जोगिंग करने जाता है।
पहले माता और बहने घर में,
पापड़ अचार बनाती थी,
अब किटी पार्टी ब्यूटी पार्लर,
में सब समय गंवाती है।
नौकर के हाथों पलकर बच्चे,
मां की ममता क्या जाने,
नौकर और आया ही उनको,
जीवन का सबक सिखाते हैं।
घर के बड़े बुजुर्गों को,
बच्चे देते सम्मान सदा,
पर आज वही बच्चे उनको,
वृद्ध आश्रम छोड़ के आते हैं।
टीवी विज्ञापन देख देख,
बच्चे, बूढ़े और नर दृनारी,
बेकार बिना मतलब चीजों की,
करते सदा खरीदारी।
पहिले हम ईश्वर दर्शन करने,
पूजा यज्ञ हवन करने,
पैदल ही कष्ट उठा करके,
मंदिर तीरथ तक जाते थे।
अब पूजा हो गई ऑनलाइन,
घर बैठे ही इसे कर पाते हैं,
भगवान विचारे इस खातिर,
खुद कंप्यूटर तक आते हैं
आगे आज और कल में,
जाने कितना अंतर होगा,
और यह अंतर फिर से शायद,
दो पीढ़ी का अंतर होगा।

स्नेहलता

झुकना न है तुम्हें

झुकना न है तुम्हें
टूटना न है तुम्हें,
चाहे सारे सहारे छूट जाएँ,
चाहे जितने छींटे तुम पर पड़ जाएँ,
चाहे तुम कितनी भी अकेली क्यों न पड़ जाओ,
हार न मानना है तुम्हें,
विश्वास का दामन न छोड़ना है तुम्हें,
टूटना न है तुम्हें,
झुकना न है तुम्हें।
कोई तुम्हें समझे, चाहे कोई न समझे तुम्हें,
पर खुद को खुद समझना है तुम्हें,
अपनी राह खुद ही चुननी है तुम्हें,
आगे बढ़ने की अभिलाषा कोई स्वार्थ नहीं है,
सच मानना यह अधिकार है तुम्हें,
आखिर एक इंसान ही हो तुम भी,
और एक गलतियों का पुतला भी,
यह जानना है तुम्हें,
इसके लिए जरा न कुंठित होना है तुम्हें,
सदैव अपने दिल की ही आवाज ही सुननी है तुम्हें,
अब न रुकना है तुम्हें और
अपनी ढ़ाल खुद ही बनना है तुम्हें।

योगिता चौरसिया

रक्षाबंधन...

सैनिक भाईयों को हम, राखी पहुंचायेंगे।
देश की रक्षा करते, सैनिको को पहनायेंगे।
जब वो पेहरा देते हैं, तब हम चैन से रहते हैं,
इस बार का रक्षाबंधन, हम ऐसा ही मनायेंगे।

कोरोना के कारण, लाकडाउन को अपनाऐंगे।
महामारी के चलते, सोसल डिस्टिंग बनाऐंगे।
मुँह मे मास्क लगा, सैनेटाईज हाथो को करते।
इस बार का रक्षाबंधन,हम कुछ ऐसा ही मनायेंगे।

काल, विडियों काल कर, पर रिश्तों को निभायेंगे।
अपने अपने घरों मे रह, त्यौहार दूर से मनायेंगे।
सारे श्रृंगार मे सजधज, सावन, कजरी गीत गाये।
इस बार का रक्षाबंधन, हम कुछ ऐसा ही मनायेंगे।

ब्रह्मानंद गर्ग 'आनंद'

लॉकडाउन के असर से
निकल नहीं पाया घर से
काम धंधा चौपट सारा
कोरोना के कहर से..।

घर में जो जरा सा
अनाज कोठे में भरा था
अब खत्म होने को आया
परिवार भी तो बड़ा था..।

उम्मीद थी कि हुजूर
राशन भेजेंगे जरूर
बारहा ऐसा कुछ हुआ नहीं
उतर गया सारा फितूर..।

कल्लू भूखा ही सो रहा
अम्मा रोटी दो बार बार रो रहा
लाली कुछ बोल नहीं रही
ये देखकर घासी व्यथित हो रहा..।

सोचा लाला के हो आता हूँ
कुछ मिले तो ले आता हूँ
बच्चे की भूख लाली की पीड़ा
सही नहीं जाती, कुछ तो लाता हूं।

लाला ने कहा बाद में आना
पैसे हो तो ही अनाज ले जाना
अभी उधार क्यों दे दुं तुझे
जब मिल रहा दाम दूना तिगुना..।

हताश घासी लौट आता
कल्लू और लाली को नहीं पाता
सारा घर देख लिया मिले नहीं
अनहोनी आशंका से डर जाता..।

पास में जो था कुआँ
उधर से जब शोर हुआ
कल्लू और लाली की लाशे मिली
घासी खड़ा जैसे पत्थर हुआ..।

आंखों का पानी सूख गया
चेहरे पर भी ना भाव रहा
सो गया घासी चिरनिंद्रा में
फिर कभी ना उठने के लिए।

मदर्स डे पर संसार की सभी माँओं (नारी) शक्ति को समर्पित

प्रेम, स्नेह, मातृत्व,साहस की असीम शक्ति से संपन्न और ईश्वर के महान वरदान माँ को नमन। सच कहूँ तो सशक्त महिला से मानवता सशक्त होगी, जगत का कल्याण भी होगा।

अब मैं अधिक तो क्या कहूँ मेरी जुबान ही मेरी पहचान है, मेरी माँ के द्वारा सिखाये गये,आदर्श ही मेरी ताकत हैं ....

मैं अपनी माँ से उसी तरह मोहब्बत करता हूँ जैसे पेड़, पानी- सूरज की रोशनी से करते है,,माँ ने ही मुझे बड़ा किया,,समझदार बनाया और ऊँचाईओ तक पहुँचाया साफ शब्दों में कहूँ तो मेरी माँ,,एक लफ्ज में बसा सँसार है और कहूँ तो मैं अपनी प्रेमिका को सबसे ज्यादा (फिलहाल मेरी कोई प्रेमिका नहीं है), अपनी पत्नी (जब शादी हो जाएगी तब) को सबसे बेहतर तरीके से, और माँ को सबसे लम्बे वक्त तक प्रेम करूँगा।

सम्पूर्ण मातृत्व को समर्पित!

याद आ रही है मेरी माँ तुम्हारी याद आ रही।

शहर में कमाने गए हर बेटे की चिट्ठी अपनी माँ के नाम

माँ, आज का अखबार देखो ? देखो ना हर पन्ने पर तुम्हारी ही चर्चा है, तुम्हारा ही गुणगान है एक बार देखो तो सब कह रहे हैं आज मदर्स डे है, तुम्हारा दिन तुमसे प्यार जताने का दिन एकदम कन्फ्यूज हो गया हूँ बताओ तो, तुमसे प्यार जताने के लिए भी किसी दिन का इंतजार करना पड़ेगा भला, जानती हो पिछले बीस दिन से रोज रात को नींद नहीं आ रही है। हर रात तुम्हारी लोरी याद करके तकिया गीला कर रहा हूँ और चद्दर के कोने से आंसू पोंछ तुम्हारे आंचल के भरपाई की असफल कोशिश कर रहे हैं। पूरी रात तुम्हारी थपकी की छुअन पाने को करवट बदलता रहता हूँ। हवा के हर झोंके से लगता है जैसे तुम गोद में मेरा सिर रखकर सहला रही हो।

माँ, जानती हो कल रात जब थोड़ी देर के लिए झपकी लगी, लगा शायद तुम गांव में वही लोरी गाकर मुझे सुला रही हो जिसकी भरपाई अबतक कोई फिल्मी गीत नहीं कर पाया। सुबह जैसे ही सूरज की पहली किरण माथे पर पड़ी, लगा जैसे हरदम की भांति मेरे माथे को चूम तुम कह रही हो-लल्ला उठ जा, भोर हो गयी। माँ जबसे तुमसे दूर नोकरी करने गांव से बाहर आया हूँ, नल का पानी भी अब जलन देता है, बगैर तुम्हारे हाथों से मालिश के नहाना भी अधुरा ही लगता है। सरसों तेल से अब भी मालिश करता हूं पर लगता है बदन को आज भी तुम्हारे ही हाथों की छुअन याद है। क्या बताऊं माँ, पेट भर खाना भी अब जी को सुकून नहीं देता। तुम्हारे हाथों कौर खाने की आदत जो पड़ गयी थी इसे मानो अब तुम्हारे हाथों का दो निवाला ही जी की बेचौनी बुझा सकता है। जानती हो, अब ऑफिस जाने के लिए भी खुद से तैयार हो जाता हूँ मैं। पर जब भी वदी/शर्ट के बटन लगाता हूँ, आंखों के आगे सब धुंधल सा हो जाता है। लगता है तुम अभी किचिन से आओगी और मेरी वर्दी/शर्ट के बटन ठीक वैसे ही लगाओगी जैसे बचपन में स्कूल भेजने से पहले मेरे शर्ट की बटन लगाया करती थी। पता है माँ अभी मैं ऑफिस की कैंटिन में बैठा हूँ पर बस बैठा हूँ क्योंकि मै यहां तो हूँ ही नहीं, हूं तो मै अब भी तुम्हारे चूल्हे के पास ही। चूल्हे में आलू पकने को डालता हुआ और तुम्हारे ये कहने का इंतजार करता हुआ कि अरे-अरे ठंडा करके खाओ, मूंह जल जाएगा, अब कोई नहीं टोकता माँ। कोई शाम को दरवाजे पर खड़ा इंतजार भी नहीं करता जैसे तुम करती थी हमारे स्कूल से आने का और दूर से आता देख ही एक सूकून भरी मुस्कान लिए जोर से चिल्लाती- जल्दी बस्ता रख के आ जाओ थाली तैयार है। पता है माँ यहां मैस है इसमें से हम सब लोग मिलकर खाना खाते हैं लेकिन मैं तुम्हारी उन फुलकियों (रोटियों) जैसा स्वाद आज तक नहीं आया। रात को इस उम्मीद में बिछोने (बिस्तर) पर जाता हूँ कि शायद आज तकिये की जगह तुम्हारी गोद मिल जाए, आज पंखे के बदले तुम्हारे आंचल की ठंडी हवा मिल जाए, शायद आज तुम्हारी हथेली की थपकियों से वर्षो की थकान मिट जाए। तुम मुझको गोद में झुला झुलाती बिलकुल वैसे ही लोरी सुनाओ मानो कोई कुम्हार बड़े लाड़ और जतन से अपने कच्चे घड़े को पकाने की कोशिश कर रहा हो। और मै तुम्हें वैसे ही निहारते-निहारते नींद की आगोश में खो जाऊं। माँ हमारी तो रोज सुबह तुमसे ही शुरू होकर रात तुमपर ही खतम होती है।

अब लोगों को कैसे समझाएं तुमसे प्यार करने के लिए हम ३६५ दिन तो क्या ३६५ पल का इंतजार भी नहीं कर सकते। हमारा तो हर दिन, हर पल मदर्स डे के साये में बीतता है। क्योंकि तुम हो, तो हम हैं, और हमारी हर घड़ी (लम्हा) बस तुमसे है। माँ मैं आपसे वादा करता हूँ कि आपके चेहरे पर कभी उदासी नहीं आने दूँगा, तुम्हारे चेहरे पर सदा मुस्कान लाऊंगा।

अपनी माँ का प्यारा बेटा

शिशुपाल यदुवंशी (मध्यप्रदेश पुलिस)

किरण मोर
प्रवाह

विचारों से बातों का प्रवाह
चलकर अंतर्मन तक पहुंचा.,
एक कान फिर दूजा, तीजा ऐसे
वह जन-जन तक पहुंचा।
सबने अपने मनोयोग से
मस्तिष्क में कर मंथन
स्व कथनों को उसमें जोड़ा
अपने तथ्य समाहित करते
गति प्रदान कर फिर रुख मोड़ा।

अन्य कानों से होता हुआ
उसका प्रवाह गतिमान हो गया
बात का सारा अर्थ बदला, और
खुद अपना स्वरूप खो गया।
वह मूक दर्शक होकर
मनःस्थिति से स्थिर बनी
उस पर हुए हमले का हादसा
गति पकड़ कर दूर हो गया।

वह सबकी जुबान पर थी लेकिन
उसका जीवन वहीं थम गया,
यही हुआ उस अबोध के साथ
आंखें पथरा गईं, दिल शून्य हो गया।
कान के कच्चे इस समाज को
मुझ पर टूटा कहर दिखाई नहीं देता
मानवता में घुला हुआ,क्या
जहर दिखाई नहीं देता!

प्रीति 'अज्ञात'

सफलता को मारिये गोली, पहले असफल होना सीखिए!

बच्चों को हर हाल में ये समझना होगा कि परिवार के लिए उनसे ज्यादा जरुरी कुछ नहीं होता! ये नाम, पैसा, शोहरत किसी के साथ नहीं टिकते, कभी नहीं टिकते फिर इनके पीछे इस हद तक क्यों भागना कि एक दिन इनके बिना जीना ही दूभर लगने लगे! यदि आप अपनी समस्या बताएंगे नहीं, तो किसी को पता कैसे चलेगा? घर, परिवार, मित्र में से कोई-न-कोई तो अवश्य ही सुनता है, हमेशा सुनता है. ये मानती हूँ कि बहुधा हमारे पास किसी की समस्या का समाधान नहीं होता लेकिन उससे भी कहीं ज्यादा ये विश्वास रखती हूँ कि कह देने से मनों बोझ हट जाता है दिल से. दुःख की परतें थोड़ी झीनी होने लगती हैं. जीवन उतना कठिन नहीं लगता कि जिया ही न जा सके! ऐसे कैसे आप किसी भी समस्या को जीवन से बड़ा मान लेते हो कि वो न सुलझी तो सब कुछ बेकार है? खत्म हो गया है!

जब आप इस दुनिया में अपनी मर्जी से आए नहीं तो आपको कोई हक नहीं कि जाने का रास्ता स्वयं चुनें. वृक्ष में फूल आते हैं, सूख जाते हैं. फल बनते हैं, खा लिए जाते हैं. तो क्या वृक्ष फलना-फूलना बंद कर दे? वनस्पति तो फिर उगे ही न कभी! प्रकृति में जितनी खूबसूरत चीजें हैं, सदियों से सब अपनी जगह हैं. हम मनुष्यों ने इनका सीना चीर दिया है पर वे तब भी हैं... अडिग! पता है क्यों? क्योंकि इन्हें किसी से कोई अपेक्षा नहीं होती. इन्होंने देना ही सीखा है, इसीलिए निराशा इनके पास फटकने के बहुत पहले उलटे पाँव लौट जाना ही पसंद करती है. आप वृक्ष बनना सीखिए. सपने देखना अच्छी बात है. उसे पूरा करने की कोशिश, उससे भी कहीं अधिक अच्छा. लेकिन जो ये सपने पूरे न हुए तो बिखरना क्यों है? एक कोशिश और नहीं हो सकती क्या? भूलिए मत कि आप भी किसी का सपना हो सकते हैं.

कामयाबी की कहानी उन पुराने लोगों से सुनिए, जिन्होंने अपना घर बनाने में ही पूरा जीवन निकाल दिया. जिन्होंने कभी **AC** वाला अपना कमरा या हवाई जहाज की यात्रा का ख्वाब तक नहीं देखा. वो इसलिए क्योंकि उन्हें अपने पैरों और चादर का माप पता था. उनके लिए आज भी उस वस्तु की अहमियत है जो उन्होंने पाई-पाई जोडकर खरीदी थी. फिर चाहे वो पुराना रेडियो हो या फ्रिज. आपको भी हर सुविधा की कीमत और अहमियत समझनी होगी. रिश्तों का मूल्य समझना होगा. उन लोगों की भावनाओं की कद्र करनी होगी जो आपसे हृदय से जुड़े हुए हैं. मौत को गले लगाने का निर्णय लेने से पहले एक बार उन्हें गले लगाइए. कुछ भी न महसूस हो तो बात कीजिए उनसे. हद है! ऐसे कैसे सबको छोडकर यकायक चले जाते हैं लोग.

अरे, जिसका जितना जीवन है वो जीता है. परेशानियाँ, संघर्ष, दुःख किसके साथ नहीं चलते? इन्हीं से जूझते, लड़ते, कभी गिरते, कभी उठते, संभलकर चलने का नाम ही तो है जिंदगी. इसमें घबराने जैसा क्या है? हिम्मत है तो जीकर दिखाइए और नहीं है तो.....! सीखिए जीना!

सफलता को मारिये गोली, पहले असफल होना सीखिए. जीने की राह यहीं से निकलती है. चखिए, हारने का स्वाद! पीजिये खून के घूँट! जी करे तो बाल्टी भर रो लीजिए. मन लगाने के लिए संगीत सुनिए, बागवानी कीजिए, पढ़िए-लिखिए. कुछ भी कीजिए, जो आपको कभी पसंद हुआ करता था पर प्लीज मरने का ख्याल भी न लाइए. जीवटता बनाए रखिए.

एक बात जो मैं बीते ३ वर्षों से लगातार लिख रही हूँ, फिर कहती हूँ - इस समय के बच्चों को भी तमाम मानसिक तनावों से होकर गुजरना होता है. उनकी छोटी-सी दुनिया में भी कई परेशानियाँ होती हैं. उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए यह बेहद आवश्यक है कि उम्र के हर दौर में उनके पास ऐसे कुछ नाम जरूर होंय जिनके बारे में वो निश्चिन्त होकर सोच सकें कि 'हाँ, ये वे लोग हैं जिनसे मैं अपनी कोई भी समस्या कभी भी साझा कर सकता/सकती हूँ. जो किसी भी निर्णय को मुझ पर थोपेंगे नहीं और मेरी बात ध्यान से सुनेंगे, समझेंगे.' यह काम परिवार के सदस्यों से बेहतर और कोई भी नहीं कर सकता क्योंकि यही वे लोग हैं जिनके साथ बच्चा सर्वाधिक समय व्यतीत करता है. अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाओं और धन के पीछे भागती दुनिया में यदि कहीं कुछ पीछे छूट रहा है तो वह बचपन ही है.वही बचपन, जो समय की माँग करता है! स्वयं को सुने जाने की गुजारिश करता है. कहते हैं, इंसान के पास जो घर में नहीं होता, वह उसी की खोज में बाहर जुटा रहता है. कितना अच्छा हो कि बच्चों को सबसे पहले यह बतला दिया जाए कि हम उनके 'सपोर्ट सिस्टम' हैं और वे जीवन की किसी भी रेस में जीतें या हारें, हर चिंता को छोड़ अपनी परेशानियों में आँख मूंदकर सीधे हमारे पास चले आयें, बेझिझक अपनी बात कहें! न केवल परिवार अपितु एक सकारात्मक समाज के लिए भी यह विश्वास और जुड़ाव अत्यावश्यक है.

बच्चे ही क्यों, हम सभी को ये प्रश्न अपने-आप से करना चाहिए और इनके उत्तर भी कंठस्थ होने चाहिए कि हमारे जीवन में ऐसे कितने अपनेश हैं? क्या हम अपने घनिष्ठ मित्रों के संपर्क में हैं? ऐसे कितने नाम हैं, जिन पर भरोसा किया जा सकता है? उनसे अपनी मुश्किल साझा की जा सकती है? कौन हैं वे लोग जो हमारी बात सुनने या समाधान ढूँढने से पहले घड़ी नहीं देखेंगें और न ही समयाभाव का रोना रो अनायास विलुप्त हो जायेंगे? सोचना होगा, जब हर तरफ निराशा हो और आपका मन उदास...तो कौन है, जो खुद बढ़कर आपको थाम लेगा? यदि ऐसा एक भी नाम न निकला तो विचारणीय है कि क्या कमाया? क्या जिया? क्या पाया? लेकिन हार तो तब भी नहीं माननी है.

हमें न केवल हमारे बच्चों का 'सपोर्ट सिस्टम' बनना है बल्कि उन्हें यह भी सिखाना है कि वे स्वयं कैसे दूसरों के जीवन में यही रोल प्ले कर कई मुस्कुराहटें उगा सकते हैं.हारते इंसानों का हौसला बन उनके जीने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं. निराशा की स्याह रात में उम्मीदों के असंख्य दीप जला सकते हैं.

'आत्महत्या' धोखा है, सारे रिश्तों के प्रति!

परी सी लड़की कि छूने भर से ही मैली हो जाए. एक टिक टॉक स्टार, लाखों फॉलोअर्स....बस एक दिन कह गई, अलविदा!

सिया, अभी तो जीवन शुरू हुआ था. यूँ हारना नहीं था तुम्हें!

प्रीति 'अज्ञात'

मुझे नाज है अपने बच्चों पर

४१० गौवंश लाया गया वारासिवनी गौशाला!

हृदय से गदगद हूँ इन मूक प्राणियों की रक्षा और सेवा के संस्कार हमारे बच्चों के रक्त में हैं। दादा श्री बुलाकी चंद जी सुराना, फिर पापा समकित जी सुराना, चाचा अभिषेक सुराना के बाद मेरे बच्चे तन्मय सुराना और जैनम सुराना भी इस मुहिम में सक्रिय हुए। गायों को पैदल लेकर आना, भागती गायों को पकड़ना, छोटे बछड़ों को उठाकर ट्रक में चढ़ाना, जिद्दी गायों को बस में करना आसान नहीं था। कई जगह चोटें आई, गोबर और गौमूत्र से सने जब घर लौटे तो चेहरे पर संतोष, थकान के बावजूद बछड़ों के रुदन का दुख तन्मय, जैनम, अभिषेक, समकित, सौरभ संचेती, विशाल संचेती, अशोक कोचर, आदेश महडल, भवानी भाई के चेहरे पर था। जिन बछड़ों को सबसे पहले लाया गया उनका रुदन सुनकर जयति और भवी-भव्य का द्रवित होना, मम्मी जी और शुचि का भावुक हो जाना, हमारे परिवार में सभी के कोमल मन में बसी संवेदनाओं को दर्शाता है। श्री विनोद संचेती चाचा जी इन पशुओं के आगमन पर उनके लिए आवश्यक व्यवस्थाओं में तत्परता से जुड़े हैं। सचमुच गौरवान्वित हूँ कि आज भी हममें संवेदनाएं जिंदा हैं।

एक विशेष बात- एक दिन इ पर सिनी-टफी की फोटो देखकर किसी ने कहा था कुत्तों से इतने लगाव की बजाय किसी गाय को पाल लेते, किसी जरूरतमंद की मदद कर देते। आज उन्हें ज्ञात तो कि वारासिवनी गौशाला से हम इस तरह जुड़े हैं कि जन्मदिन और वर्षगाँठ हो या कोई त्यौहार, मंदिर से पहले पशुओं को चारा खिलाते हैं। गौशाला के सभी कर्मचारियों के लिए गौशाला में ही मकान बनाकर दिए गए हैं जो हमारे हर खास दिन में शामिल होते हैं। हमारी गौशाला में दूध का व्यापार नहीं बल्कि तस्करी करके कत्लखाने ले जाई जा रही गायों का संरक्षण किया जाता है। वहीं आसपास कोई भी पशु जो असहाय हो या मारा जा रहा हो उसे संरक्षित किया जाता है। आज लगभग १००० गोधन और लगभग १४०० कबूतर, २०० खरगोश, ६०-७० कुत्ते हैं हमारे पास और समय-समय पर अन्य जानवर भी पलते हैं।

जिनमें इन मूक पशुओं के लिए संवेदना है, वो स्वतः ही मानवीय संवेदनाओं से संस्कारित और पोषित होता है।

मुझे नाज है अपने बच्चों पर

ज्ञात हो कि वारासिवनी नगर की गौ शाला की टीम और पुलिस अधीक्षक बालाघाट, बहेला थाना के प्रभारी कमलेश साहू के सात दिवसीय अथक मेहनत का परिणाम है कि प्रदेश की सीमाओ से लगभग ४१० गौ वंशो की प्राण रक्षा की गई, सात दिनों मे अनेक उतार, चड़ाव, के बाद अंततः पुलीस अधीक्षक अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन में अनेक टीमो के संयुक्त प्रयास से एक बड़ी सफलता प्राप्त हुई, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, की सीमाओं से नक्सली क्षेत्र में जंगलो के भीतर तक जाकर अंततः बहेला थाना की टीम ने सफलता पायी, अभी और भी गौ वंशो की प्राण रक्षा के लिए पुलिस विभाग प्रयासरत है, बहेला पुलिस ने लगभग ४१० गौ वंशों को वारासिवनी गौ शाला को हिफाजत नामा में दे दिया है, लगभग वारासिवनी, बालाघाट के ४० युवाओं की टीम के साथ ८५ किलोमीटर दूर से गौ वंशों को पैदल ही वारासिवनी ला रही थी, समाज के कुछ जागरुक व्यक्तियों ने अपने ट्रकों को सेवा में लगाकर काम को आसान बनाया और बहुत से बछड़े और गायें कल शाम गौशाला पहुंचे। लगभग तीन दिन के पैदल सफर में त्यौहारों के बावजूद युवाओं के जज्बे को देखकर सेवा भाव का असली परिचय स्वयं हो जाता है।

सैकड़ो गौ वंश के साथ एक आरोपी को भी पकड़ने में सफलता मिली है, इस आरोपी ने कल रात्रि में साफ जानकारी देते हुए कहा की गौ वंश को महाराष्ट्र के नागपुर के साथ हैदराबाद छोड़ने की तैयारी थी, तस्करों के पूरे गिरोह को पकड़ने के लिए पुलिस अधिक्षक सहित पूरा पुलिस अमला तत्परता के साथ कार्य कर रहा है।

डॉ. प्रीति समकित सुराना

समकित जी को जन्मदिन की दुआएँ

मौसम ने छेड़ा है खूबसूरत सा साज,
उसे भी पता है आपका जन्मदिन है आज,
आज पूरा परिवार दे रहा है दुआएँ
आप सबके दिलों पर करो यूँ ही राज।

डॉ. प्रीति सुराना
तन्मय जयति जैनम एवं
अन्तरा शब्दशक्ति परिवार

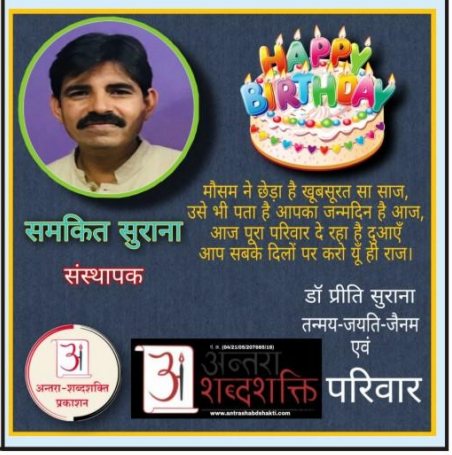

राज्यमंत्री रामकिशोर नानू कावरे (आयुष और जल संसाधन मंत्री) का गृह आगमन

राज्यमंत्री रामकिशोर नानू कावरे (आयुष और जल संसाधन मंत्री) वारासिवनी गौशाला में लाए गए गौवंश के दर्शनार्थ पहुंचे तत्पश्चात हमारे निवास पर पहुँचे। उनके साथ विशाल संचेती, अशोक कोचर, गौरव संचेती, सौरभ संचेती, तन्मय सुराना, जैनम सुराना, पापाजी, चाचाजी, समकित, अभिषेक भवि-भव्य, जयति एवं कई अन्य लीग भी उपस्थित रहे। मम्मी जी ने तिलक निकाल कर स्वागत किया, समकित सुराना व अभिषेक सुराना ने शाल श्रीफल से सत्कार किया।

राज्यमंत्री नानू कावरे जी ने तन्मय और जैनम को बहुत साधुवाद और आशीर्वाद दिया। उन्होंने जयति और भवि से राखी भी बंधवाई। सद्कार्य से जुड़े रहने हेतु पूरे परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।

डॉ.प्रीति समकित सुराना

राखी पर याद आई ननदें,
बेटियों ने भी पलकें भिगोई,
भाई-भाभी और बच्चों की
यादों से गुजारा दिन आज,
पर दिन था खुशी का, त्यौहार का,
इसलिए मैं नहीं रोई

डॉ. प्रीति समकित सुराना

बेटियों से ही है
रौनकें
यकीन न हो तो
जयति, भवि, विनती,
विधि, साक्षी, रुचि,
सलोनी, सेजल, मावा,
रीता, प्रीति, भावना,
आभा, बबिता, नम्रता,
दीपा, निशा, उषा,
रश्मि, शुचि, खुशबू,
कृति, रुपल, नेहा,
स्नेहा, स्वर्णा, संस्कृति,
निकिता, ऋषिता, आशा,
ममता, सरिता, मंजू,
सोनल, मौली, गुनगुन,
काजल, मोनिका, दीप्ति,
वसुधा, सृष्टि, प्रकृति,
कायनात, चाँदनी, कविता,
खुशी, मुस्कान, जन्नत,
परिधि, सीमा, रक्षा,
राखी, मन्नत, दुआ,
ज्योति, पूजा या प्रार्थना,
किसी भी नाम से पुकार कर देखो
यकीनन
याद किसी बेटी की ही आएगी,..!

समकित का जन्मदिन और सरप्राइज मिला मुझे

आज जब समकित के जन्मदिन का केक काटा तब अचानक डॉ चाची ने मेरे गले मे मैडल पहनाया। मैं एकदम शॉक्ड हो गई क्योंकि कब इंडिया बुक रिकार्ड्स की किट आई मुझे पता ही नहीं था। पूरा परिवार एक साथ उन पलों में मेरे साथ था। मैंने पहले भी बताया था आपातकाल में सृजन (१६२० पेज) और आपातकाल में सृजन फुलवारी(१११ पुस्तकें अलग-अलग रचनाकारों की) पेइद सहित ५१ दिनों में पूरी की जिसके लिए हमने अन्तराशब्दशक्ति की ओर से इंडिया बुक और रिकॉर्ड्स २०२० में एक साथ दो रिकॉर्ड दर्ज किए थे और नियत अवधि में पूरा भी किया।

आज दोनों ही रिकार्ड्स के लिए सर्टिफिकेट, एप्रिसिएशन आईडी कार्ड, पेन, बैच, मैडल, बुक और स्टिकर के दो अलग-अलग किट प्राप्त हुए। अन्तरा शब्दशक्ति परिवार को ढेर सारी बधाइयाँ। मेरे साथ होने के लिए सभी का दिल से आभार। समकित और मानु दोनों के सहयोग से ही ये संभव हुआ जिसके लिए मैं चिरऋणी रहूँगी। आँखों में आँसू हैं मगर खुशी के।
शुक्रिया जिंदगी

डॉ प्रीति समकित सुराना
संस्थापक
अन्तराशब्दशक्ति

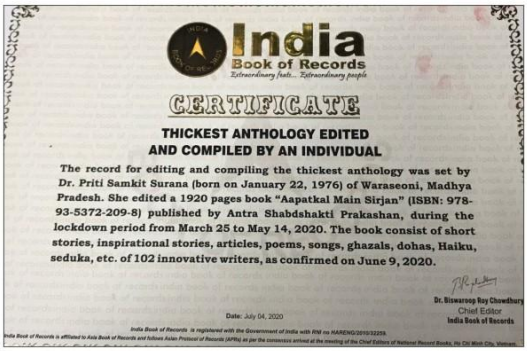
India Book of Records
Extraordinary feats... Extraordinary people

CERTIFICATE

THICKEST ANTHOLOGY EDITED AND COMPILED BY AN INDIVIDUAL

The record for editing and compiling the thickest anthology was set by Dr. Priti Samkit Surana (born on January 22, 1976) of Waraseoni, Madhya Pradesh. She edited a 1920 pages book "Aapatkal Main Sirjan" (ISBN: 978-93-5372-209-8) published by Antra Shabdshakti Prakashan, during the lockdown period from March 25 to May 14, 2020. The book consist of short stories, inspirational stories, articles, poems, songs, ghazals, dohas, Haiku, seduka, etc. of 102 innovative writers, as confirmed on June 9, 2020.

Dr. Biswaroop Roy Chowdhury
Chief Editor
India Book of Records

Date: July 04, 2020

India Book of Records
Extraordinary feats... Extraordinary people

APPRECIATION

Antra Shabd Shakti Prakashan of Waraseoni, Madhya Pradesh, is appreciated for publishing 111 books during the lockdown period from March 25, 2020 to May 14, 2020. The books consist of short stories,inspirational stories, articles, poems, songs, ghazals, dohas, Haiku, and sedukas of 111 innovative writers. Each book consists of 21 pages and was published under the title Aapatkal Main Sirjan Phulwari with separate ISBN numbers, as confirmed on June 16, 2020.

Dr. Biswaroop Roy Chowdhury
Chief Editor
India Book of Records

Issued on: July 04, 2020

कुशल जैन

परिवार

जब उम्र से बड़े संस्कार हो जाते है
मर्यादानिहित सब कार्य हो जाते है
जब अपने से पहले दूसरों के
हित का विचार होता है
जब हर पल विचारों मे सिर्फ परिवार होता है
तब सभी कार्य अपने आप हो जाते है
ऐसे ही पुरुष त्रेता के राम हो जाते है

राम जिनके सामने सत्ता का सुख था
जिनके आगे पूरा देश हाथ जोड़ सन्मुख था
उन्होंने माँ के आदेश को सर्वप्रथम स्थान दिया
छोड़कर राजपाठ और वैभव
वन की और प्रस्थान किया

राम के पीछे-पीछे चल सीताजी आए
लक्ष्मण ने भी अपना भ्रात धर्म निभाए
इस परिवार ने संस्कार ऐसा जङ दिया
एक भाई चले सेवा को वन में
दूसरे ने रख खड़ाऊ सिंहासन पर
अपना कर्तव्य पालन किया

दशरथ जो सर्वशक्तिमान थे
जिनके युद्ध कौशल से ना कोई अंजान थे
उनके अपने शब्द मानो उन्हें ही ठग गए
ना चाहते हुए भी वो अपने वचन से बंध गए

पुत्र वियोग ने उनका कर दिया ऐसा हाल
हो गए बेबस जो बने रहे अयोध्या की ढाल
वनवास पूर्ण होने से पहले
राजा दशरथ की जीवनलीला समाप्त हो गई
पुत्र को देखने की उनकी अंतिम इच्छा
अधूरी रह गई

गर परिवार मे दूषित कलय-कपटता ना होती
परिवार की फिर ऐसी दुर्दशा ना होती
प्रेम की माला यू तार-तार ना होती
बिना अस्त्र-शस्त्र और तलवार के
मृत्यु हजार ना होती

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

आ गये मेरे राम

राम मंदिर में राम ध्वज फहरेगा
हर्षित है अयोध्या नगरी,
देवें बधाई मिल गायें मंगल गीत
उल्लसित अयोध्या सगरी।

शबरी निषाद की पूरी हुई प्रतीक्षा
ऋषि मुनियों में खुशहाली,
आये हैं अपने राम अयोध्या में तो
अब हर दिन होगी दीवाली।

चलो जलायें घी के दीपक घर में
बनायें सुंदर सी रंगोली,
सरयू भी खुश हो कल-कल बहती
सबकी बदल गयी बोली।

तेरा मेरा इसका उसका सबका ही
सपना आज हो गया पूरा,
जीवन सफल हुआ लो हर जन का
अब कुछ भी रहा न अधूरा।

श्री रामराज्य आरंभ हुआ बधाई लो
झूम उठी चारों दिशायें,
आ गये तेरे मेरे सबके प्यारे प्यारे राम!
गुनगुनाने लगी हैं हवायें।

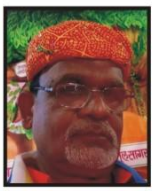

मुकेश मनमौजी

कैसे कट रही
जिंदगी
हमारी आत्मा
जानती है
पत्नी मेरी
जरा भी मेरा
कहना नही
मानती है
जिद कर बैठी
रक्षाबंधन पर नई
साड़ी लाकर दूँ
मैंने कहा
तंगी ,मंदा व्यापार
मत कर जिद बेकार
खूब मनाया नही मानी
साड़ी लेने की ठानी
मरता क्या न करता
मै भागा गया बाजार
साड़ी खरीदा रूपये लगे
पूरे डेढ़ हजार
साड़ी लाकर दी कहा
लो पहनो साड़ी नई
और त्योहार मना लो
बोली खुश होकर
ठीक है तुम शाम का
खाना बना लो
फिर लगा झटका
तड़प उठी आत्मा
ऐसी पत्नी किसी को
न दे परमात्मा

सुखमिला अग्रवाल

कायनात समझाये... सुन लो ये बात...

सुन लो बात....
पशु पक्षी, ताल तलैया,
वन उपवन, हवा और पानी,
अरे मानव तुझे सुना रहे,
बिसरी एक कहानी ।
अदृश्य शत्रु ने पैर पसारे,
दिखे न कोई आस,
दुनियाँ भर में मची तबाही,
कायनात है उदास।
गली गली घूमें,
गमों की गठरी लाद,
तुरन्त ले चपेट में ,
जो भी आये पास।
जोर नहीं किसी का इस पर,
नेता अभिनेता खास,
सब पर ये वार करे,
बना रहा अपना दास।
नव सृजन में लगी ,
अब पूरी कायनात,
मानव तू कुछ नहीं ,
समझाये ये बात।
दम्भी मानव फिरे जगत में,
तज अन्तर्मन आभास,
सोच स्वच्छ हो अब,
और हो सबल आभास।

कब सोचा था?

विश्व एक ऐसी महामारी से ग्रस्त हो जाएगा कि एक साथ ५१ दिन कड़े लॉकडाउन में रहना होगा?
एक ऐसी बीमारी जो सिर्फ छूने से नहीं पास रहने या साथ रहने से भी फैलेगी। एक डर, निराशा और खालीपन का भयावह दृश्य २२ मार्च के जनता कर्फ़्यू में ही दिख गया था।

२५ मार्च से जब लॉकडाउन शुरू हुआ तो लगा मानो कुछ भी करने को नहीं हुआ तो बीमार पड़ जाउंगी।

२८ मार्च तक मैंने, समकित और मानु ने मन बनाया कि रचनाएँ आमंत्रित की जाए फिर देखते हैं कि वेबसाइट पर डालकर लिंक देने हैं, साझा संकलन बनाना है या लघुपुस्तिकाएँ। बस २८ को अन्तराशब्दशक्ति में एक सूचना जारी कर दी कि १५ रचनाएँ नाम पता फोटो सहित भेजें। जो पूर्व परिचित या नियमित सदस्य थे उनमें से १३ अप्रेल तक ४८ लोगों ने रचनाएँ भेज दी। तब तक तय हो गया कि ईबुक बनाना है, तभी अचानक १४ अप्रेल को पहले से आवेदित कुछ पेइद अप्रूव हो गए। तो अचानक विचार किया और पेइद आवेदित करना शुरू कर दिए और लॉकडाउन के दूसरे चरण में पुनः सूचना व्यक्तिगत भी प्रचारित कर दी।

३ मई तक ६२ रचनाकारों की रचनाएं आ चुकी थी और लॉकडाउन १७ मई तक बढ़ चुका था।

तब हम तीनों ने लक्ष्य निर्धारित करते हुए ५१ दिन के तीन चरणों के लॉकडाउन में १११ पुस्तक और १०१ रचनाकारों के वृहद साझा संकलन का मन बनाकर १६०० पेज और शेष पेइद ३ मई को आवेदित कर दिए।

१४ मई तक ११४ पुस्तकें और १६०० पेज का संकलन रेडी किया रात-दिन काम करके।

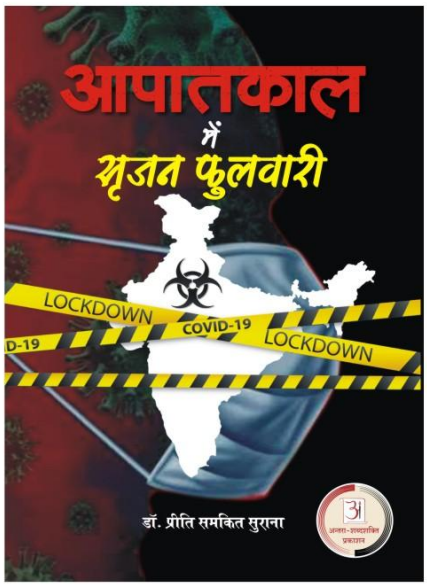

१४ के बाद कुछ मित्रों और नियमित रचनाकारों को लेकर १२१ का लक्ष्य पूरा किया।

१६०० पेज में मेरे अलावा १०१ रचनाकार शामिल किए, pdf बड़ा होने से वेबसाइट में अभी अपलोड नहीं किया है और शीघ्र ही ३ प्रातियाँ प्रिंट हो गई और वेबसाइट पर भी आ जाएगी। सभी ११६ (मुझे छोड़कर) रचनाकारों के सम्मान पत्र ई पत्र अपलोड किए गए हैं।

इस दौरान समस्याएं भी बहुत आई..

१. कोरोना का भय।
२. बिजली की समस्या।
३. नेट और सर्वर का बार-बार बंद होना।
४. मौसम और रातदिन काम से स्वास्थ्यगत समस्याएं।
५. कुछ रचनाकारों की रचनाओं में वर्तनी की बहुत, ज्यादा त्रुटियाँ।
६. काम करने वाले केवल दो लोग थे मैं और मानु भैय्या और काम बहुत था।
७. कुछ रचनाकारों ने बार-बार कहने पर भी रचनाएँ व्यवस्थित टाइप करके नहीं भेजी (दिन भर व्हाट्सप पर सक्रिय होकर भी) जबकि पूरा का पूरा काम व्हाट्सअप पर हुआ।
८. निःशुल्क पूरे ५१ दिन के कार्य के बाद बहुत सारे अजीब से सवाल।
९. कुछ रचनाकारों ने केवल सम्मान पत्र की मांग की जो बहुत अजीब लगा।
१०. कुछ ने समूह की सूचनाओं को अनदेखा करके अंतिम चरण में शिकायत की कि हमें सूचित नहीं किया !

खैर!

लक्ष्य समय पर पूरा हुआ और समय के बाद भी संख्या में वृद्धि हुई जिसके लिए सभी का दिल से आभार।

१२० ईबुक्स की लिंक
एक साथ 'आपातकाल में सृजन फुलवारी' की पुस्तकें देखने हेतु लिंक सहित
सभी के सम्मान पत्र ई पत्र भी पोस्ट किए जा चुके हैं।
प्रिंट में जिन्होंने बुक के लिए आदेशित किया है वो शीघ्र ही तैयार होकर भेज दी गई।
जिसकी लिंक आदि डिलीट हो जाए वो फेसबुक पेज पर जाकर पुनः कॉपी कर सकते हैं इसके लिए पेज लाइक करके रखें ताकि सूचनाएं मिलती रहे।

साभार
डॉ प्रीति समकित सुराना
संस्थापक
अन्तराशब्दशक्ति

प्रीति जी, नमस्कार,

आपकी रचनात्मकता एवं सृजनशक्ति व हिंदी के प्रति सेवाभाव को नमस्कार करते हुए आपको 'विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा' द्वारा 'ग्लोबल बुक आफ लिटरेचर अवार्ड' से सम्मानित किया जाता है। ''**आपातकाल में सृजन-फुलवारी**'' युगों तक चर्चा का विषय रहेगी, ऐसा विश्वास है -

डा. सरन घई, संस्थापक, विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा इसके लिए अन्तरा शब्दशक्ति की संस्थापिका ने किया आभार व्यक्त

आ.सरन घई जी

आपातकाल में आपके द्वारा प्राप्त यह सम्मान एक अमूल्य उपहार और अनदेखे स्वप्न का साकार होने जैसा है मेरे लिये जिसके लिए मैं हृदय से आपकी आभारी हूँ।

संस्थापक
अन्तरा शब्दशक्ति
डॉ. प्रीति समकित सुराना

३० मई ३ साझा संकलनों का सरप्राइज विमोचन ऑनलाइन किया गया

https://antrashabdshakti.com/.../31/मुसीबतें-तो-आएगी-मगर-डरने

मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई!

(साझा संकलन)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुसीबतें तो आएगी, मगर डरने का नई!

हर कदम में है मुसीबतें ही मुसीबतें,
किसी से कुछ कहो तो बस नसीहतें,
डरने से नहीं मिलती कभी भी जीत,
हिम्मत से मिलती है जीत की इनायतें।

बस इसी अवधारणा और राहत इंदौरी की पंक्तियों से बन रहे अनेकानेक मीम्स (यानि चुटकुलों) ने प्रेरित किया कि क्यों न एक दिन ऐसा विषय रखा जाए जिसमें मजा, मजाक और मतलब तीनों हो।

प्रसन्नता का विषय है कि रचनाकारों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और उसे अन्तरा शब्दशक्ति ने एक साझा संकलन का रूप दिया।

ईबुक निःशुल्क है अतः जरुर पढ़ें और रचनाकारों को प्रोत्साहित करें मात्र इतनी सी अपेक्षा है। यह प्रकाशित प्रति में भी उपलब्ध होगा।

अनुक्रमणिका

१. डॉ. प्रीति समकित सुराना ७
२. अदिति रूसिया ८
३. प्रेमलता शर्मा 'आयुमी' ६
४. नवीन जैन अकेला १०
५. दीपक अरोड़ा ११
६. डा.वर्षा चौबै १२
७. मीना विवेक जैन १२
८. अर्चना अनुप्रिया १३
९. रागिनी स्वर्णकार (शर्मा) १४
१०. ओ.पी. गुप्ता, बैलाडिला १५
११. किरण मोर कटनी १६
१२. लीना शर्मा १७
१३. पूनम झा १८
१४. हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्विनी' १९
१५. मीनाक्षी सुकुमारन २०
१६. मंजू सरावगी मंजरी २१
१७. सीता गुप्ता २२
१८. कैलाश सिंघल २३
१९. रमा 'प्रेम-शांति' २४
२०. रेखा ताम्रकार 'राज' २५
२१. जागृति मिश्रा रानी २६
२२. बीना शर्मा 'झंकार' २७
२३. देवयानी नायक २८
२४. मनोरमा रतले २९
२५. पूनम (कतरियार) ३०
२६. नमिता दुबे ३१
२७. डॉ सरला सिंह स्निग्धा ३२
२८. ललिता नारायणी ३३
२९. विभारानी श्रीवास्तव ३३
३०. कीर्ति प्रदीप वर्मा ३४
३१. नवनीता कटकवार ३५
३२. ऋतु कोचर ३६
३३. डॉ.आशु जैन ३७
३४. डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई ३८
३५. सुधा शर्मा ३९
३६. साधना छिरोल्या ४०
३७. पिंकी परूथी 'अनामिका'

https://antrashabdshakti.com/2020/05/31/माँ-साझा-संकलन

माँ

(साझा संकलन)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

अनुक्रमणिका

१. डॉ प्रीति समकित सुराना९
२. नवीन जैन अकेला १०
३. नवनीता दुबे 'नूपुर' ११
४. रेनु दीपक खर्द १२
५. कृति गुप्ता १३
६. अर्चना कटारे १४
७. ऋषभ तोमर १५
८. मंजू सरावगी मंजरी १६
९. सुमित अग्रवाल १७
१०. कीर्ति प्रदीप वर्मा १८
११. ऋतु कोचर, कटंगी १९
१२. अंजलि राकेश पंड्या १९
१३. प्रेमलता शर्मा 'आयुमी' २०
१४. डॉ सरला सिंह स्निग्धा २१
१५. राजेन्द्र जैन 'अनेकांत' २२
१६. कैलाश बिहारी सिंघल २३
१७. आरती तिवारी सनत २४
१८. हेमन्त बोर्डिया २५
१९. मीना विवेक जैन २६
२०. इला सागर रस्तोगी २७
२१. डॉक्टर वासिफ काजी २८
२२. जयकृष्ण चांडक 'जय' २९
२३. सुधा शर्मा ३०
२४. पूनम (कतरियार) ३१
२५. सीता गुप्ता ३२
२६. ओमप्रकाश गुप्ता ३३
२७. किरण मोर ३४
२८. हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्विनी' ३५
२९. डा वर्षा चौबे ३६
३०. सुकेशिनी दिक्षित ३७
३१. धनेश्वरी देवाँगन धरा ३८
३२. मीनाक्षी सुकुमारन ३९
३३. शिखा बोर्डिया ४०
३४. शिल्पा पाठक ४१
३५. बीना शर्मा 'झंकार' ४२
३६. विश्वास जोशी ४२
३७. नमिता दुबे ४३
३८. मनोरमा चन्द्रा 'रमा' ४४
३९. पूनम झा ४५
४०. बबिता कंसल ४६
४१. अनिता मंदिलवार सपना ४७
४२. साधना छिरोल्या ४८
४३. प्रदीप सोनी 'शून्य' ४९
४४. नीरजा मेहता 'कमलिनी' ५०
४५. रेखा ताम्रकार 'राज' ५१
४६. डा९ भारती वर्मा बौड़ाई ५२
४७. आरती डोंगरे ५३
४८. प्रतिमा 'संत' बाजपेयी ५४
४९. अदिति रुसिया ५५
५०. मनोरमा रतले ५६
५१. डॉ. आशु जैन ५७
५२. डॉ९ कावेरी रूसिया ५८
५३. लीना शर्मा ५९
५४. नवनीता कटकवार ६०
५५. रजनी शर्मा ६१
५६. पिंकी परूथी 'अनामिका' ६२
५७. प्रदीप कुमार अरोरा ६३

माँ

जिसने सृष्टि को जना, जिसने हमें जना वो जीवनदायिनी माँ ईश्वर का साक्षात प्रतिरुप है। माँ शब्दातीत है, माँ केवल भाव सुमन अर्पित कर पूजनीय है।

मेरे लिए

'मां'
एक शब्द,
एक एहसास,
एक रिश्ता,
एक ममता
'मां'
एक जननी,
एक रचयिता,
एक संचालक,
एक पालक
'मां'
एक विश्वास,
एक समर्पण,
एक आस्था,
एक पूजा
'मां' में समाहित है
संपूर्ण सृष्टि
मां तुझे प्रणाम,...!

माँ को केवल मेरे शब्द नहीं बांध सकते फिर भी बता न चाहती हूँ,...
मेरी माँ
मेरी जिद,
मेरा गुस्सा,
मेरा संघर्ष,
मेरा लक्ष्य,
मेरे रास्ते,
मेरे उद्देश्य
सब कुछ मुझे घेरते हैं
अनेक प्रश्नों से
और फिर मैं रखती हूँ
खुद को उसकी जगह
और दे देती है
हर प्रश्न का उत्तर,.....
मेरी माँ!

आइये पढ़ते हैं अन्तराशब्दशक्ति के रचनाकार माँ को किस रूप में ध्याते है, किस रुप में परिभाषित करते है।

माँ को नमन!

सादर आभार
संस्थापक एवं सम्पादक
डॉ प्रीति समकित सुराना
अन्तरा शब्दशक्ति

https://antrashabdshakti.com/2020/05/31/कोरोना-प्रकृति-की-चेतावन-२

कोरोना प्रकृति की चेतावनी
(साझा संकलन)
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

१. डॉ प्रीति समकित सुराना ६-१४
२. कीर्ति प्रदीप वर्मा १४-१८
३. पिंकी परूथी 'अनामिका' १८-२०
४. प्रेमलता शर्मा 'आयुमी' २०
५. ललिता नारायणी २१
६. डॉ. वासिफ काजी २१-२२
७. हेमलता राजेंद्र शर्मा 'मनस्वनी' २३
८. ऋतु कोचर, कटंगी २४
९. श्यामसागर २५-२६
१०. रमा 'प्रेम-शांति'- बालाघाट २७-२८
११. सोनम लड़ी वाला २८-२९
१२. मीना विवेक जैन २९
१३. डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई ३०-३१
१४. वंदना दुबे ३२-३३

सादर नमन,

बार-बार उग्रता दर्शाकर प्रकृति ने कभी भूकंप, कभी ज्वालामुखी, कभी सुनामी, कभी तूफानों, सड़क दुर्घटनाओं, रेल दुर्घटनाओं, वायुयानों की दुर्घटनाएं, धर्म के नाम पर दंगे, ओजोन में छेद, प्रदूषण और अनेक असाध्य बीमारियों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। पर न जनसंख्या में नियंत्रण हुआ, न सामाजिक संतुलन स्थापित हुआ, न आर्थिक विषमताओं का खात्मा हुआ। बस बढ़ती गई विषमताएं, व्यभिचार और बुराइयाँ बस प्रकृति का क्रोध बढ़ना ही था सो बढ़ा।

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुजर रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

आज हम जिस दौर से गुजर रहे हैं वहाँ नजदीकियाँ दूरियों में बदलती नजर आ रही है, सुविधाएं कमतर हो रही हैं। जिसके पास धन का अंबार हो वो भी और जो भुखमरी का शिकार हो लेकिन कोरोना के लिए सब बराबर थे। आज कोरोना ने सिखा दिया अधिकतम से न्यूनतम में जीना कैसे संभव है।

बहुतों को समझ आ गया कि सदियों पहले लोग जिन कायदों, साफ सफाई, दूरियाँ और अनेक ऐसे नियम जो आज हम पालन करने को विवश हैं वह वास्तव में हमारी संस्कृति है, जिसका पालन सम्पूर्ण विश्व कर रहा है।

क्या आपको नहीं लगता कि प्रकृति की इस विनाश सूचक चेतावनी में भारत के लिए एक अवसर ही 'विश्वगुरु बनने का'?

आइये पढ़ते है रचनाकारों के विचार कि क्या वाकई कोरोना- प्रकृति प्रदत्त चेतावनी है?

सादर आभार
संस्थापक एवं सम्पादक
डॉ प्रीति समकित सुराना
अन्तरा शब्दशक्ति

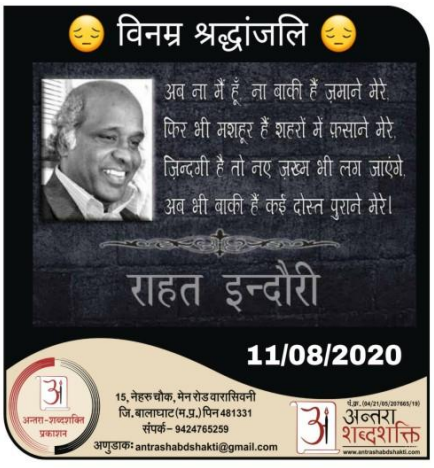

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

माखन मिश्री का भोग लगाना

प्यारा कान्हा बाँसुरिवाला
मनमोहन लड्डू गोपाला
केशव माधव, मेरे द्वारे आना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

यमुना तट पे गोपियाँ आईं
संग राधा को भी ले आईं
मुरली मनोहर बाँसुरी बजाना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

भर मटकी मैं माखन लाई
दही हांडी भी मैं भर लाई
छींके से गोविंद तुम ले जाना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

माता यशोदा झूला झुलायें
देवकी मैया बलि-बलि जायें
नंद के गाँव तुम धूम मचाना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

राधे-राधे बृज भूमि पुकारे
ग्वाल-बाल जहाँ गैया चरावें
मोहन, मथुरा वृंदावन आना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

तन भूषण पीताम्बर सोहे
सुंदर छवि मोरा मन मोहे
प्रभु, माथे मोर मुकुट सजाना
माखन मिश्री का भोग लगाना।

तरुणा पुण्डीर 'तरुनिल'

आ जाओ मोहन!

नंद के लाल! बृज के दुलारे,
गोपी- ग्वाल बाट जोहे तिहारी।
सिखा दो प्रेम मुरली सा,
हर लो कलुष-कालिमा कारी।

आ जाओ मोहन! फिर पुकारें तुम्हें,
संतप्त धरा के नर-नारी।
दुख हर लो धरती पुत्रों के,
तान सुनाओ मनोहारी।

अंतर्यामी तुम जानो सब कुछ,
विपदा घेरे बड़ी भारी।
धर कर संकट का यह पर्वत,
दूर भगाओ महामारी।

रक्षक बन लाज बचालो फिर,
घूमे दुःशासन से व्याभिचारी।
आ जाओ चीर बढ़ाने फिर तुम,
द्रौपदी पुकारे बनवारी।

कंस को मार,पूतना संहार,
दे चेतावनी सुदर्शनधारी!
थाम हाथ सुदामा सम,
मैत्री सिखा दो न्यारी।

राधा सी प्रीत, जीवन नवनीत
कर्म पथ के बनें हम विहारी,
मीरा सी भक्ति, रुक्मणि सा समर्पण,
जग के सारथी बनो अविकारी।

सीता गुप्ता

अनुपम प्रेम

कृष्ण-कन्हाई के चरणों में,
सारी दुनिया रमती।
पर मन-मोहन की तो दुनिया,
राधा चरणों में बसती।

कितना अनुपम प्रेम इनका!
जहाँ सृष्टि समाहित होती।
कान्हा की मुरली बजने पर,
प्रकृति भी मुस्काती।

गोपी-ग्वाल-धेनु सब इनके,
रंग में रंगे हैं होते।
महारास शिव भी देखें हैं,
जहाँ वो भी नारी बने थे।

चरणों की लीला है सारी!
इसमें प्रीत लगालो।
आ रहे हैं कृष्ण-कन्हैया ,
सुंदर झाँकी सजालो!

हरे कृष्ण सारा जग कहता,
कृष्णा राधे कहते।
जो राधे-राधे जप लेता!
संकट उसके कटते।

रेनू मिश्रा

कन्हैया कहाँ गये

मुरली के बजइया कहाँ गये
मेरे कृष्ण-कन्हैया कहाँ गये।
कलयुग मे पाप बाढ़ आई
धरा की आँखे भर आई,
व्दापर के कन्हैया कहाँ गये।
जाति-धर्म की भीड़ लगी,
मै की ध्वजा है लहराई,
गीता के ज्ञानी कहाँ गये।
पाप घड़ा भरने को है,
अधर्म अपने चरम पर है,
धर्म के वक्ता कहाँ गये।
नारी पे विपदा भारी पड़ी,
नारी की प्रतिपल बोली लगी,
द्रोपदी के रक्षक कहाँ गये।
भक्त खड़े गुहार करे,
पाप घटे अन्याय घटे,
अर्जुन के सारथी कहाँ गये।
देर करो न ओ कान्हा!
मन अधीर हुआ चला जाये,
राधा के कन्हेया कहाँ गये।
मुरली के बजइया कहाँ गये,
मेरे कृष्ण-कन्हैया कहाँ गये।

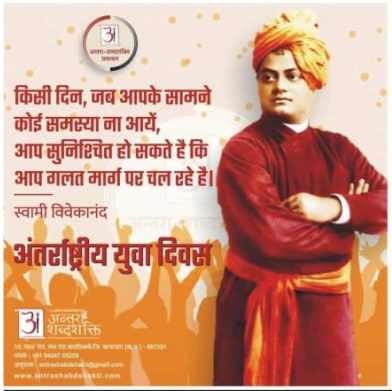

विक्रमादित्य सिंह

यूं ना छेड़ कान्हा

यूं ना ऐसे छेड़ कान्हा
मेरी पायलिया शरमाएं रे
तेरी मुरली के तक धीना पर
मन मयूर झुम झुम गाएं रे।
यूं ना.....
मेरी पायलिया.....

तू भंवरा है गोकुल धाम का
मेरे अधरों पर फूल खिले तेरे नाम का
तेरे नाम पर हे त्रिपुरारी
सखियां छेड़ छेड़ जाएं रे
यूं ना.....
मेरी पायलिया.....

मॉ यशोदा के राज दुलारे
तू उनके प्राणों से प्यारे
तू नटखट, तू छलिया, तू माखन चोर
तू ही गोपियों के दिल में समाएं रे
यूं ना.....
मेरी पायलिया.....

मेरे मन मंदिर में हे बंसीधर
तेरा ही तस्वीर है
तू मुझ में है की मैं तुझ में हूं
यह चर्चा चारो ओर है
तेरी मोहनी सुरतिया जियरा में समाएं रे

यूं ना ऐसे छेड़ कान्हा
मेरी पायलिया शरमाएं रे।

जितेंद्र मित्तल

एक मुलाकात कोरोना के साथ

यदि कोरोना एक इंसान होता तो उसके साथ आज कैसी बात होती.. पढ़िए

मैं : अरे कोरोना !

कोरोना : हाँ, बोलो क्या बात करनी है?

मैं: अरे तुमसे कौन बात करना चाहेगा। मैं तो ये पूछने के लिए फोन किया था कि हमने सुना था कि तुम्हारी लाइफ २-३ महीने की है फिर तुम चले जाओगे। पर लगता है तुम तो अमरत्व का वरदान लेकर निकले हो, जाने का नाम ही नहीं ले रहे, फैले ही जा रहे हो ।

कोरोना: हा हा हा.. क्या करें आप लोग प्यार ही इतना दे रहे हैं कि मैं एक से दूसरे मे फिर तीसरे मे फैलता जा रहा हूं।

मैं: बस करो यार! क्या तुम्हें पता है तुमने कितने घरों को उजाड़ दिया है। कितने मासूम बच्चों के सिर से उनके माता पिता का साया छीन लिया। कितनी तो पूरी की पूरी फॅमिली की तुमने हत्या कर दी। किसी के घर का इकलौता कमाने वाला भी तुम्हारे काल का ग्रास बन गया।

कोरोना : हाँ पता है लेकिन ये सब आप लोगों की गलती से ही हुआ है।

मैं: क्या! क्या मतलब?

कोरोना : जब सरकार ने बहुत पहले ही आप लोगों का घर से निकलना बंद कर दिया था फिर भी कई जयचंद जो अपने आप को बड़ा वीर बलवान समझते थे कुछ न कुछ बहाना बनाकर बाहर निकलते रहते थे वो भी बिना किसी जरूरत और सुरक्षा के। अब भुगतो सज। सरकारी की गाइडलाइन कभी किसी ने मानी? कभी सोशल दूरी रखी? क्या मास्क का उपयोग ठीक से किया? और हा जहां लोगों ने मुझे गंभीरता से लिया वहाँ सब ठीक है मैंने भी उनसे दूरी रखी है।

मैं : लेकिन कुछ जयचंदो की गलती की सजा सबको नहीं मिलनी चाहिए ना। पता है सब व्यापार धंधा तुम्हारे कारण बंद पड़े हैं। लोगों के पास घर चलाने के लिए भी पैसे नहीं बचे है। जो बेचारे दिहाड़ी मजदूर डेली कमाकर अपने परिवार का पेट पालते थे वो सब भी आज तुम्हारी वजह से मीलों पैदल चल पड़े हैं वो भी भूखे प्यासे स कुछ तो शर्म करो अब।

कोरोना : हाँ थोड़ी शर्म तो आ रही है पर क्या करूँ मैं तो अब यहीं रहने वाला हुं। आप लोगों को ही सुधरना पड़ेगा।

मैं: क्या मतलब?

कोरोना : आप लोगों को अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ानी पड़ेगी मुझसे लड़ने के लिए।

मैं : बड़े ही निर्लज्ज हो यार!

कोरोना : वैसे सही बताऊ तो अब मेरे मे भी पहले जैसी ताकत नहीं रही। आप के हहस्पिटल वाले मेरे मरीजों का इलाज सिर्फ गर्म पानी पिला कर कर देते हैं स बिना किसी दवाई के ठीक हो रहे हैं।

मैं : अच्छा! तो इससे तो तुम्हें बड़ी तकलीफ हो रही होगी?

कोरोना नहीं, तकलीफ तो तब होती है जब गर्म पानी पिलाने का बिल लाखों मे बना देते हैं ।

मैं: हाँ मैंने भी सुना है ऐसा स ये बहुत गलत हो रहा है। लेकिन ये सब भी तो तुम्हारी वजह से ही हो रहा है तुम चले क्यों नहीं जाते । मर जाओ कहीं डूब के।

कोरोना: सॉरी! पर मैं एक सलाह दे सकता हूं।

मैं: क्या?

कोरोना :आप लोग अपने आप को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बना ले, पौष्टिक भोजन करे, नियमित व्यायाम करे, किसी भी तरह का तनाव ना लें और बिना काम के बाहर ना निकले और बाहर जाना पड़ता है तो सावधानी रखें, सोशल दूरी बनाकर रखे, मास्क और senitizer का उपयोग करते रहे, स्वच्छता का ध्यान रखे। फिर मैं आपका कुछ नहीं बिगाड़ पाऊँगा। अच्छा मेरे लिए कोई सलाह??

मैं : हां, मर जाओ!

जितेंद्र मित्तल
सूरत

साँप
बनाम आस्तीन का साँप

अनुजा दुबे

मैं केवल साँप हूँ, सुना तुमने?
मैं साँप हूँ, आस्तीन में रहने वाला नही,
बिल में रहने वाला....
ईश्वर ने बनाया है, अच्छा ही होऊँगा।
जहर का उपयोग करता हूँ
अपने आप को बचाने के लिए,
पर तू तो अपना जहर उगलता है दूसरों पर
अपनी भड़ास निकलने के लिए,
दूसरों को नीचा दिखाने के लिए।
जहर का गलत उपयोग तो तुम करते हो क्योंकि
तुम आस्तीन के साँप हो,
मैं नही 'मैं केवल साँप हूँ'।
तुम्हारे पास तो हाथ-पैर भी है,
उठा-पटक करने के लिए
कान भी तो हैं, लेकिन एकदम कच्चे,
जो भी सुनते हो विश्वास कर लेते हो,
जड़ तक जाते ही नही, क्योंकि तुम आस्तीन का साँप हो,
मैं नहीं..मैं केवल साँप हूँ।

मैं तो केवल डसता हूँ, फुफकारता हूँ,
तुम तो न जाने क्या क्या कर्मकाण्ड कर डालते हो
और फिर ढूढ़ते हो किसी की आस्तीन छिपने के लिए
क्योकि तुम आस्तीन का साँप हो
मैं नही, मैं केवल साँप हूँ।
सपेरे की बीन पर मेरी तरह
लोगों के इशारों पर नाचना छोड़कर,
स्वयं अपना अस्तित्व बना
हम जानवरों से अपना नाम मत जोड़।
खुद की एक पहचान बना,
खुद में एक विश्वास जगा,
मत होने दो अपने को इतना खोखला, की बुराई का साँप
डाल लें उसमें डेरा
बना न दे कहीं तुम्हे आस्तीन का साँप।
मुझे तो अपना बिल ही बड़ा प्यारा है।
क्योकि मैं केवल साँप हूँ।
क्योंकि मैं केवल साँप हूँ ।।

नीता जैन

प्रवाह

सतत् प्रवाह है जीवन,
शांत, सरल, निश्चल सा,
दौड़ते थे हर पल ये पग,
इस देहरी से उस देहरी,
धुप भरी दुपहरी थी मौज करने को,
ना एसी, ना टी वी,
ना मोबाईल समय गवाने को,
फिर भी हर पल चहकते थे,
जीवन मे खुशियाँ ही खुशियाँ थी,

कैसा प्रवाह आया,
कहाँ बह गया सब कुछ,
कहा गया कि उन्नति कर ली,
किन्तु सच्चाई से परे,
खुशियाँ दाँत चिढाती,
सब बह गया प्रवाह मे,
ना समय बचा ना रिश्ते नाते,
सब बह गया दौड की आपा धापी में.....
लक्ष्य रख जीवन मे,
मोड दो प्रवाह का प्रवाह,
इंतजार करती नही है खुशियाँ...

शीतल

कलाम

कलम उठा कर
भावनाएं प्रकट कर देता हूँ मैं,
पन्नो में तेरे नाम का
जीव भर देता हूँ मैं,
यादें स्मृतियां
किस्से कहानियां
है बहुत
हर प्रेरणा से
कागज को तर देता हूँ मैं।
कहीं उपदेश सुन आता हूँ,
कहीं व्याख्यान देने
चला जाता हूँ,
तो कहीं आलेख
पढ़ सुन आता हूँ।
होते हैं कई चर्चे
तुम्हारे काम के,
तुम्हारे नाम के।
फिर वापस चले
जाते हो तुम
स्मृति शेष में,
और मैं फिर से
अपनी ही
दुनियाँ विशेष में।
लेकिन क्या
इस तरह आसान है
मेरे लिए
तुम सा बन जाना
या एक अंश मात्र ही
तुम सा हो पाना!!
बिल्कुल नहीं,,
सच तो ये कि
मुझे उठना होगा,
निकलना होगा
पन्नो से बाहर,
और करना होगा
सच्चाई से रूबरू।
उतारना होगा
अपने जीवन में तुम्हे,
बनाकर आदर्श
प्रेरणास्त्रोत,,गुरू,
चलना होगा अनुयायी बन
सत्कर्म की राह पर
निस्वार्थ,,
देश हित के लिए,
ज्ञान के लिए,
विज्ञान के लिए,
ब्रह्मांड के लिए,
तब कहीं जाकर
मैं तुम सा बन पाऊँ
शायद,,,
एक दिन मैं भी
कलाम कहलाऊँ,
हाँ एक दिन मैं भी
कलाम कहलाऊँ।

बबिता कंसल

कान्हा

कान्हा, नटखट बंसीधर
चंचल, चितवन हरे मुरारी
माखनचोर,सखा, मोहिनी मूरत
माधव, गोपियों के चित्तचोर
केशव तुम झूलो झूले मे
राधा संग बंधी प्रेम की डोर
राधा के हृदय वीणा के तार
मुरलीधर, अगमोचर
पावन पवित्र गोकुल, वृंदावन
लेकर आये अवतार
अनुपम, मधुर जग के तारणहार
जब जब पाप बढा धरती पर
तुम आते लेकर अवतार
घोर अंधियारा, विपद काल
फैली वैश्विक महामारी,
युद्ध के बादल छाए हुए
विश्व कर रहा हाहाकार
संकट हरो कान्हा, कर दो
प्रेम उजियारा चारों ओर
सकल जगत में फैले खुशीयां
कृपा करो कान्हा करूं
प्रार्थना बारम्बार ।

ओमप्रकाश गुप्ता बैलाडिला

भीतर का विषधर

विषधर बैठा चाहे कान पर ,या भीतर हो,
या मुँह से छेडे गये तान या जबान पर हो,
बिष वमन करता,या अपने अंदर फैलाता,
खुद झुलसता ही हैऔरों को भी झुलसाता,
दूसरे घुलते रहते,घुले खुद भी भीतर भीतर,
घर हो या समाज,खतरनाक होता विषधर।१।

अजगर से मोटे होते,जल्दी सरक नहीं पाते,
अंदर निगले प्राणी को,हजम वहीं कर जाते,
दांत जहरीले न हो पर देह विष भरा होता है,
अस्थि व चर्म हो किसी का,अंदर गला देता है,
जन्तु या मानव हों सदा बच के रहना दिलवर,
शहर दर शहर उजाडे,भले बिल में हो अजगर।२।

जहरीले कान

अर्चना अनुप्रिया

बेचैन हैं कान इंसान के
जहरीली हवा फैलने लगी है
कान जहर सुनने लगे हैं
राजनीतिक, सामाजिक,सांस्कृतिक..
संस्कारों की आवाजें
आनी बंद होने लगी हैं
हवा,जो मिठास भरती थी रूह में
कान,जो सुनते थे कृष्ण की मुरली
अब जहरीले नाग के फण हैं..
बिगड़ने लगे हैं कान
पहले सुनते थे गीता कुरान
अब सुनने लगे हैं हिंदू-मुसलमान
सोते थे सुनकर माँ की लोरियाँ
अब थिरकते हैं अश्लील धुनों पर..
कान हौसला थे, राम थे, गांधी थे
गिरने लगे जब,
तब बन गए आतंकवादी हैं..
कान के जहर को मधुरस पिलाओ
देशभक्ति के ओजपूर्ण गीत सुनाओ
कालिया जैसे कान का
जब कृष्ण मर्दन करेंगे
जहर मुक्त होगा कान,
तब प्रेम रस घुलेंगे..

मैं
स्वतंत्रता, स्वाधीनता और स्वछंदता का अर्थ
जिस पल से समझने लगी हूँ
आत्मबन्धन में भी
स्वतंत्रता को जीने लगी हूँ
मेरा देश, मेरा कानून, मेरा समाज, मेरा परिवार,
मेरी मानवता और मेरी आत्मनिष्ठा से बंधी मैं
आभासी स्वतंत्रता से परे
अब स्वाधीन होकर खुद को
वास्तविक स्वतंत्रता का पर्याय मानने लगी हूँ!
हाँ
अब
मैं
स्वतंत्रता, स्वाधीनता और स्वछंदता का
अंतर समझने लगी हूँ।
स्वाधीनता दिवस की सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

डॉ. प्रीति समकित सुराना

रंग

कीर्ति प्रदीप वर्मा

जब-जब रंग और पानी में
होता है मिलाप !!
पिचकारी में भर
प्रेम की होती है बौछार,
सराबोर होकर इसमें
होता होली का त्यौहार !!!
जो न होता मेल दोनों का
रंग अकेले क्या करते ??
दोनों के इस मेल से ही तो
रंग प्रेम के हैं चढ़ते,
इन दोनों के मेल बिना
दुनिया है बेरंग,
पर बेदर्द जमाने को भी
भाता नही ये संग!!
इन दोनों के मेल को
बैरी न करता स्वीकार
चुभने लगें आँख में तो
ये बन जाते दाग !!
पर यह दाग भी देखो
पानी से धुलते हैं !!
जैसे धूप और पानी मिल
इंद्रधनुष बनते हैं !!

प्रमोद सनाढ्य

माँ भारती की वंदना

आरती उतारें तेरी भारती भवानी भू माँ
प्रेम भरी भावना के स्वर भर दीजिये।

मनो कामना से करें आपका ही यश गान
जन मन भाव को स्वीकार कर लीजिये।

अर्चना करें माँ बैठ ममता की गोद तेरी
शीश ये नमन करें कृपा कर दीजिये।

आपकी ही प्रेरणा से साहित्य सृजन करें
सृजन में प्रेरणा की प्रीत भर दीजिये।।

साधना के पथ चलें माँ तेरी उपासना में
धरणी की एकता के कदमों की चाल हो।

हृदय में 'सत्यमेव जयते' की ज्योत जले
अर्चना की आरती आराधना की थाल हो।

होंसले बुलन्द कर पार करें मुश्किलों को
शौर्य और साहस की बात बेमिसाल हो।

माता तेरी वंदना से नव चेतनाएं मिलें
चेतना की चमक से दमकते भाल हो।।

हाथ जोड़ कर करें विनती हे वसुंधरा
समरसताएं बनी रहें परिवेश की।

दिव्यता के दीप जोड़ भावना प्रचण्ड करें
अखंडता खंड खंड हो ना कभी देश की।

राष्ट्र की आराधना में संस्कृति की किरणों से
प्रखर हो सदभावनाएं मेरे देश की।

भारतीयता के भाव शब्द को सामर्थ्य करें
करूणा की धार से जो गायें गाथा देश की।।

तू ही गौरी जगदंबा अम्बा अम्बे अम्बिके माँ
अर्चना करें भवानी प्रार्थना स्वीकार हो।

काली रणचंडी देवीचंडी का माँ खप्पर वाली
हाथ हथियार धर दुष्टों का संहार हो।

महा गौरी महामाया महाकाया महाभुजा
देवी देश धरती पे प्यार का संचार हो।

तू ही जग जननी माँ ममता की मूरत तू
तेरी करुणा से सारा सुखी संसार हो।।

अनामिका वैश्य आईना

कश्मीर न देंगे

अपनी न समझो तुम हम
भारत की जागीर न देंगे
नापाक पाकियों हम तुम्हें
अपना कश्मीर न देंगे...

जो नजरे देश को हमारे स्पर्श करेंगी
अंजाम वो सभी बहुत बुरा ही भरेंगे
सरलता को हमारी कमजोरी न समझो
कुदृष्टियां सभी ही हम दृष्टिहीन करेंगे
हम तब तक चौन न आयेगा
जब तक आतंकियों को चीर न देंगे
भले कुछ भी हो जाए कश्मीर न देंगे..

हमे हमारा देश भारत प्राणों से भी प्यारा हैं
यहाँ की संस्कृति-तिरंगा जगत से न्यारा हैं
इसकी आन मान शान की रक्षा फर्ज हमारा
इसके ही कण-कण से जीवन सँवारा है
देश पुकारेगा जब-जब भी हमें
कर्ज चुकाने को बहा हम रक्ते-नीर देंगे
जान भी चाहे जाए हम कश्मीर न देंगे..

भारत की स्वतंत्रता के लिए वीरों ने दी कुर्बानी
फांसी को चूमा हँसकर लुटा दी अपनी जवानी
ख्वाब आजादी का पूरा हुआ लेकिन
कीमत में लहू की नदिया पड़ी बहानी
आजादी की चिंगारी से दहल गए विदेशी
बता दिया उन्हें भारत तुम्हारे अधीर न देंगे
लड़ेगे आखिरी साँस तक कश्मीर न देंगे..

अभिव्यक्ति तेवरी शब्दों में चले तीर
क्रान्ति की मशाले जली भूल गए पीर
स्वदेशी गुलशन को गुलिस्तान बनाना है
देव-भगत-बोस-लक्ष्मी ने थामी शमशीर
नम आँख न करें शहीदों की शहादत पर
अपनी मिट्टी-अन्न-धूप-रुत-समीर न देंगे
कीमत कोई भी हो पर कश्मीर न देंगे..

नमन

संतोष मिश्रा 'दामिनी'

ए देश तेरा है अभिनन्दन
हर तरफ तेरा ही नाम रहे

तेरी माटी का तिलक लगा
हम वीर चले सीमाओं पर

ये आजादी ऐसे ही कायम रहे
हम करते आज प्रतिज्ञाएँ

लहराएँ तिरंगा मस्ती में
हम युद्धभूमि पर जाते है

आज स्वतंत्रता दिवस यूँ मनाया

गौवंश रक्षण समिति वारासिवनी के प्रांगण में सुबह ८ बजे ध्वजारोहण, राष्ट्रगीत, देशभक्ति के नारों के साथ, स्वल्पाहार, पशुओं को गुड़ खिलाकर अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के संस्थापक डॉ प्रीति, समकित सुराना, संरक्षक डॉ भारती सुराना, संजय रुसिया, उपाध्यक्ष अदिति रुसिया, तकनीकी संपादक संदीप सोनी, सचिव उषा नीलेश खंडेलवाल, कार्यकारिणी सदस्य सौरभ संचेती, सरफराज खान,अभय सुराना, तन्मय सुराना, जयति सुराना, जैनम सुराना, साक्षी, आस्था, अक्षय कांकरिया, रोहित, शशांक, विनोद, श्रीमती कृष्णकली सोनी, टीना सोनी, अनन्य सोनी, शुभ संचेती, भव्य सुराना, भवि सुराना, वीर सोनी एवं गौवंश के समस्त कर्मचारियों की उपस्थिति में उत्साहपूर्वक मनाया गया।

स्वाधीनता दिवस की सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

डॉ.प्रीति समकित सुराना

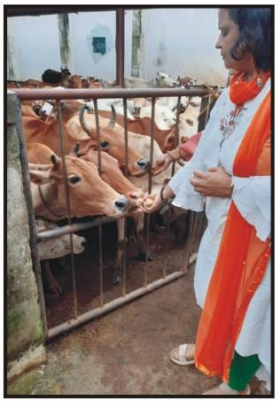

प्रदीप कुमार अरोरा

प्रिये,
आज तुम जिस रूप में मुझसे
बात कर रही हो न,
मैं तो फिर भी यही कहूँगा,
तुम्हारी आवाज
कर्कश थोड़े न है,
शायद मेरे श्रवण की ही
कोई विसंगति है।

तुमने ही कल मुझे
प्यार से पुकारा था न 'पीकु'
तब ये नाम मेरे कानों में
मिश्री घोल गया था,
कक्षा में बेंच तो दूर ही थी
मन बहुत करीब हो गया था,
तब मैंने वह सब कुछ सुना था
जो तुमने कहा तो न था
लेकिन मुझे सुनना पसंद था,
मित्र कहने लगे थे
दोस्त,तुम्हारे कान बजते हैं
नित नई कल्पना रोज रचते हैं।
मुझे नहीं पता कि तब तुम
मेरी आत्मा से निकली
पर जुबाँ से अव्यक्त,
बातें सुन पाती थी या नहीं।

जीवन का पल-पल
अब तक विश्वास की डोर से
बंधा रहा,
ये जीवन परस्पर समर्पण की सेज से
दशकों सजा रहा,
बोलो न,
उम्र के इस पड़ाव पर
आखिर क्या दुश्वारी है,
मेरे स्नेह, प्यार, और समर्पण को भुला
किसी और के मद्धिम स्वर सुनना
कौन सी लाचारी है।

क्या सोचती हो तुम
ऐसा धीमा जहरिला स्वर
क्या मेरे कानों तक नहीं आया है,
क्या मैंने तेरा विश्वास झुठला
तुझ पर कोई आक्षेप लगाया है।

सुन प्रिये,
कोई भी फुँफकार मुझे
कभी डस नहीं पाएगी,
अंतिम श्वांसों तक
तेरी वही अनकही बातें मुझमें
गहरा विश्वास जगाएगी,
गहरा विश्वास जगाएगी।

मन!

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

कितना, सशक्त होता है ये मन!
जो सुन पाता है कटु, कर्कश बातें।
वो तीर सी नुकीली ध्वनि।
आलोचना के रूप में,
जब स्वयं, या किसी अपने की।
कानों के रास्ते मन तक पहुँच जाती है।।
सुन मन आहत हो जाता है ।
और कई दिनों तक मन,
मस्तिष्क पर अपना असर दिखाता है ।।
और ये कान!
मिट्टी के चिकने घड़े से प्रतीत होते तब।
तुरंत वहा देते है मन तक सारी आलोचना!
जस की तस!!
सारी जवाबदारी मन पर डाल!
मन हर बार यही कहता है कानों से।
तुम सारी कटुता सुन,
दूसरे कान से निकाल क्यो नही देते?
क्यो हमेशा मुझे शामिल करते हो?
इतनी निष्ठा, ईमानदारी से!
क्या तुम इतना नही जानते?
की, मन के आदेश पर ही तो,
दिमाग से सारी गतिविधियाँ
होती है।
क्या तुम्हे पता नही?
अब मैने निंदकों से निजता कर ली है।
मैने, बर्ताव के हर दाग (बुराई)
को साफ कर।
जिन्दगी अपनी तराश ली है।

कलंक

स्मृति गुप्ता

बेटी होना कोई कलंक तो नहीं
क्या मुझमें बेटों सा बल है नहीं
तू कमजोर है तू अबला है तू एक नारी है
लोगों के इस भ्रम को मिटाना होगा
अबला नारी सब पे भारी है बताना होगा
हम कमजोर है ये धब्बा मिटाना होगा
हमें तो विधाता ने ही बड़ा मजबूत बनाया है
एक नन्ही जान को दुनिया में लाने का माध्यम हमें बनाया है
हम अबला नहीं सहनशील है सशक्त है मजबूत है हम
पुरुष के कंधे से कन्धा मिला कर चलती हैं
घर बाहर अकेले ही संभाल लेती है
हम घर में भी है और चाँद तक जा पहुंची है
हम कमजोर नहीं है हथियार भी उठा लेतीं हैं
अपने दामन में कमजोर होने का ये दाग ना लगने देंगे
अपने अबला होने का कलंक ये मिटाना होगा

नवनीता कटकवार

कलंक

इश्क में तब अदब का मुकाम आता है,
निगाहों से जब कोई रूह में उतर जाता है।

गुनाहगार होते है दिल की दुनिया बसाने वाले..
ये जमाना आशिकों से रश्क खाता है।

कहते है वो देख, हमारे बेदाग नूरानी चेहरे को..
दागदार चाँद भी रूबरू हो, हमसे शर्माता है।

इश्क, हुस्न और नाम है तन्हाइयों का,
मशहूर रुसवाइयों का सिलसिला हो जाता है।

बेहिसाब अश्क बहते है।, आँखों के कोरो से..
कलंक कुछ यूं काजल बन जाता है।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

बबीता चौबे शक्ति

तुलसी कबि मध्य दिवाकर है

तुलसी कबि मध्य दिवाकर है
इनकी रचना रामायण है

रहते है सदा यह राम शरण
पकड़े रहते हरि सदा चरण
शब्दो के पुष्प समर्पण है
तुलसी कबि मध्य दिवाकर है

चन्दन घिसत राम को रामा
देखत राम अतुल अभिरामा
तुलसी कबि नयन दिवाकर है
तुलसी कबि मध्य दिवाकर है

दोहा रोला और चपाई
राम कथा सबने गाई
है नमन तुम्हे नमन हे रत्नाकर
तुलसी कबि मध्य दिवाकर है

कलियुग में सार बताया है
भव पार का मार्ग दिखाया है
शक्ति का भाव समर्पण है
तुलसी कबि मध्य दिवाकर है

राजेन्द्र जैन अनेकांत

सवैया छंद

बड़ाई खुदी की जवानी करे जो
कलंकी अरे तें न लज्जा भई रे

बड़ों सें न सीखी उसी की सजा ये
पड़े पैर तो भी क्षमाँ न तुझे रे।

अरे भ्रष्ट ही तो कलंकी कहावे
पढ़े खूब पोथी पता ना तुझे रे।

करे घूस खोरी बने देश द्रोही
गरीबों सरीफों जनो को ठगे रे।

शराबी बने तो करे कौन इज्जत
बुराई इसी से सभी तो लुटे रे।

चले चाल खोटी फलेगी न वो भी
बने आत्मघाती खुले पोल तो रे।

जुवारी सदा ही लुटावे खुदी को
प्रपंची भले को सदा ही छले रे।

सफेदी उजेली सदा ही रहेगी
'अनेकांत' सच्चाई फले ही फले रे!

मनोरमा चन्द्रा 'रमा'

प्रकृति

जैसी तेरी हो प्रकृति,
वैसा कर व्यवहार।
जीवन में नित कर्म को,
मान जगत का सार।।

तरुवर झूमे हैं सदा,
देख प्रकृति के गोद।
हरियाली मोहित करे,
मिलती खुशी प्रमोद।।

आदत मनुज सुधारिये,
रखो प्रकृति अति ध्यान।
इससे शुद्ध हवा मिले,
जो जीवन वरदान।।

जीव प्रकृति से हैं जुड़े,
करलो उससे प्रेम।
उसकी छाया से मिले,
सदा कुशलता क्षेम।।

प्रकृति नियम पालन करो,
रखो सदा ही मान।
कहे रमा ये सर्वदा,
बनो नहीं अनजान।

रेनू मिश्रा

सावन

सावन की पहली बारिश
बहुत सारी याद लाई है।

बचपन की छपा- छई
मन को बहुत गुदगुदाई है।

कागज की नाव बनाकर
तलैया में बहुत तैराई है।

अटरिया पर सखी संग
बारिश की बूंदे मन भाई है।

सावन की मतवाली शाम
नित नये ख्वाब सजाई है।

बचपन में झूला झूलने की
आजश्रेनूश बहुत याद आई है।

सावन की पहली बारिश
बहुत सारी याद लाई है।

एक मतवाली शाम .....!!

रेनु दीपक खर्द

'अंतरा परिवार' पर एक मतवाली शाम मनाएं!
आओ सब मिल कर खुशनुमा महफिल सजाएं !!!
नज्मों-शेरो-शायरी के... जाम पे जाम बनाएं!!
गजल से गजल, कविता से कविता टकराएं!!
इरशाद, वाह-वाह के, खूबसूरत पैगाम छलकाएं!!
शंमा-परवाना से ये महफिल ऐसी सजे,
साकी-पैमाना से शेरों के जाम भरे!!!
कही-अनकही बातों के, मदहोशी कलाम बनाएं!!
प्रीति से प्रीत हो, कलम की रीत हो,
अंदाजे अपना अपना सब का एक गीत हो!
महफिले गुफ्तगू में सबका दीदार-ए- यार हो!
चलती रहे अपनी ये मस्ती की मौजशाला!!
सहसृजन की बने एक मधुशाला,
सुनो यारो! इस रंगीन माहौल को जश्ने यादगार बनाएं!!!
अंतरा परिवार पर.....!!!!!!

ग़ज़ल

जयकृष्ण चांडक 'जय'

गैर का होगा ये घर मेरा नहीं है,
लोग अपने हैं शहर मेरा नहीं है!

चाहती है जो वो लिखती है कलम,
है करम रब का हुनर मेरा नहीं है।

जीने की ख्वाहिश तो है सौ साल पर,
ये जिन्दगी क्या इक पहर मेरा नहीं है!

जो छोड तन्हा चल दिये मां बाप को,
कोई और होंगे ये जिगर मेरा नहीं है!

जाने क्या 'जय' कह रही है तेरी गजल,
लफ्ज मेरे पर असर मेरा नहीं है!

मित्रता दिवस के शुभ अवसर पर आ. संजय कौशिक 'विज्ञात' जी के निर्देशन एवं आ. अनिता मंदिलवार जी के संपादन में, जिनके आवरण चित्र एवं तकनीकी संपादन संदीप सोनी द्वारा एवं अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से डॉ. प्रीति समकित सुराना द्वारा प्रकाशित १४ कुण्डलिया एकल संग्रहों का विमोचन एवं सम्मान हमारे पटल पर सृजन फुलवारी पर भी सम्पन्न हुआ।

सम्मानित होने वाले रचनाकार
कुण्डलिया विधा रत्न सम्मान २०२०

१. सरोज दुबे - सरोज की कुण्डलियाँ
२. राधा तिवारी 'राधेगोपाल' - लक्षिता
३. गीतांजलि - राम नाम रस भीनी कुण्डलियाँ
४. कमल किशोर कमल - मन श्री कुंडलिया
५. अनिता सुधीर 'आख्या' - जीवन आख्या
६. कुसुम कोठारी - मन की वीणा
७. संतोष कुमार प्रजापति - पयस्विनी कुण्डलिया शतक
८. डॉ.सरला सिंह 'स्निग्धा' - मेरी कुण्डलियाँ
९. रंजना श्रीवास्तव - हाँ! मैं आत्मा हूँ
१०. चमेली कुर्रे 'सुवासिता'-सुवासिता की यात्रा
११. हेमलता शर्मा 'मनस्विनी'- त्रिपथगा
१२. अर्चना पाठक 'निरन्तर' - निरंतर की साधना
१३. धनेश्वरी सोनी गुल - गुल की कुंडलियाँ

कुण्डलिया विधाविज्ञ सम्मान २०२०
राधा तिवारी 'राधेगोपाल'-
राधे की कुण्डलिया

सभी रचनाकारों की अन्तरा शब्दशक्ति परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

संस्थापक
डॉ प्रीति समकित सुराना

सुधा शर्मा

रक्षा बंधन

आया आँगन रक्षा बंधन,
लेकर भावों की डोली।
मीठी अल्हड़ बचपन यादें,
झिलमिल रेशम की डोरी।।

भरी उमंगें नेह तरंगित,
हृदय उमड़कर मचल रही।
आल्हादित सब होकर बहनें,
तिलकित भाई पूज रही।

नोंक-झोंक बचपन की सारी
जाग उठी है स्मृतियाँ भोरी।
मीठी अल्हड़----

कहीं झूमते बाल वृंद हैं,
राखी बँधी कलाई पर।
पल छिन में झगड़े कर बैठे
भाई बहन मिठाई पर।

निर्मल पावन पर्व पुनीता,
माँ की मीठी सी लोरी।
मीठीअल्हड़--

कहीं राखियाँ पंथ निहारे,
सूना मग भीगी पलकें
पास नहीं हैं भाई उनके,
सीमा पर सैनिक बनके।

बँधा हुआ है सदा देश हित,
शीश वतन माटी रोरी।
मीठीअल्हड़---

उस राखी की गरिमा पूजित
जो उस बँधी कलाई पर।
बहन गर्विता बनी हुई है,
करती गौरव भाई पर।

नाम देश के बाँधी तन पर,
तीन रंग पावन डोरी।
मीठीअल्हड़----।

केवरा यदु 'मीरा'

गीत

जब मन मेरा घबराये भैया को पता चल जाये।
तब हाथ पकड़ के मेरा मुझे अपने पास बिठाये।
वो भैया ही मेरा रखवाला है, पल पल मुझे संभाला है।।
ये भैया ही--

जब बाबा छोड़ गया था तब घर में तू ही बड़ा था।
मैंया बहना के दुख में, तू ही साथ खड़ा था।
तूने माँ को गले लगाया, बाँहो में मुझे झुलाया।
मैं हरपल साथ हूँ तेरे,माँ को एहसास कराया ।
वो भैया ही मेरा रखवाला है पल पल मुझे संभाला है।
वो भैया ही--

दर्द को सहते सहते माँ कितना टूट गई थी।
रोती रहती दिन रैना किस्मत ही रूठ गई थी।
तब आकर तू समझाया, मैंया मैं तेरी जाया।
माँ का तू बना सहारा, तू लाड़ला माँ का प्यारा।।
वो भैया ही मेरा रखवाला है पल पल मुझे संभाला है।।

तू बनजा भाई कन्हैया, मै सुभद्रा बन जाऊँ।
इस पर्व में भैया तेरे,माथे पे तिलक लगाऊँ।
मैं दूर चली भी जाऊँ राखी में दौड़ कर आऊँ ।
बाँध के रक्षा बंधन आशीष सदा मैं पाऊँ।
वो भैया ही मेरा रखवाला है पल पल मुझे संभाला है।।
वो भैया ही मेरा रखवाला है पल पल मुझे संभाला है।।

दोस्त

सोनमलडीवाला

खुशियां बांटे गम भी बांटे,
बांटें हर एहसास,
ऐसे दोस्त होते हैं कुछ खास।
दिल की हर बात कह जाए,
जिनके आगे खोले,
दिल के सारे राज,
ऐसे दोस्त होते हैं कुछ खास।
पहचान नहीं इनकी कोई,
इनका बस एहसास,
ऐसे दोस्त होते हैं कुछ खास।
दिखाएं सच का रास्ता,
अंधेरे को दें कांट,
गलती होने पर डांटे हमको,
सच में हो सदा साथ,
ऐसे दोस्त होते हैं कुछ खास।
बहन के साथ और भाई के हाथ,
जैसा हो इनका एहसास,
ऐसे कुछ दोस्त सचमुच होते हैं कुछ खास।

बीना शर्मा 'झंकार'

प्रभाव

गलियाँ हैं सहमी-सहमी
सड़के हैं चुपचाप
खौफ के साए में
छिपता दिखा हर इंसान

कोलाहल जीवन का
थमा-थमा सा है
अपना शहर में कोई
दिखता कहाँ है

खौंफनाक हैं आँकड़े
मौत के देख मंजरों को
रुह लगी है काँपने
बेबस हैं चिकित्सक
परबस है परिवार
संसाधन आजकल
लगते हैं बेकार

बेजार सी हो चली है जिंदगी
थम सी गयी है जिंदगी

ठप्प हुए व्यवसाय
जन-जन है असहाय
आवागमन हुआ अवरुद्ध
विधाता हुआ ज्यों क्रुद्ध
सभी हैं बेजार
खुद से हैं लाचार

सुनाए कोई कैसे
किसी को दास्ताँ अपनी
तेरी मेरी सबकी
कहानी जो है एक सी

देखा प्रभाव
बायरस का
झेल रहा विश्व सारा
दिखे एक से हालात सभी के
करते दिखे सभी त्राहिमाम!

पंकज अग्रवाल

आगे बढ़ जाने दो

नया जोश है नहीं होश है,कंकड़ पत्थर चुभ जाने दो
नहीं रुकेंगे अब ये कदम, मुझको आगे बढ़ जाने दो
चट्टानों सी हो गयी है देह
अब रस्ते में जो भी आएगा
मुझे पता चले बिना ही ,
टकरा कर खुद गिर जाने दो
नया जोश है नहीं होश है,कंकड़ पत्थर चुभ जाने दो
नहीं रुकेंगे अब ये कदम, मुझको आगे बढ़ जाने दो
शायद तुमको खबर नहीं है
मेरी नजरे उधर वहीं है
क्षितिज तक पहुचने दो मुझे
या अभी बस मर जाने दो
नया जोश है नहीं होश है,कंकड़ पत्थर चुभ जाने दो
नहीं रुकेंगे अब ये कदम, मुझको आगे बढ़ जाने दो
संगीत नहीं है मन में अब
विजयोत्सव का कोलाहल है
यह कोलाहल थमने से पहले
नव- कोलाहल गुंजाने दो
नया जोश है नहीं होश है,कंकड़ पत्थर चुभ जाने दो
नहीं रुकेंगे अब ये कदम, मुझको आगे बढ़ जाने दो
अभी नहीं तो कभी नहीं
ये बात जिसने भी बोली थी
पाकर सब कुछ अभी यहीं
ये बात सत्यापित हो जाने दो
नया जोश है नहीं होश है,कंकड़ पत्थर चुभ जाने दो
नहीं रुकेंगे अब ये कदम, मुझको आगे बढ़ जाने दो!!

मौसम कितना सुहाना हुआ

आज मौसम कितना सुहाना हुआ
उस पर ये दिल भी दीवाना हुआ

बारिश का पानी उठी रही है लहर
बहारों का जैसे आना जाना हुआ

भा रही है सभी को रंगी फिजायें
गा रहे गीत खुशी का तराना हुआ

दीये जल रहे जुगनु का चमकना
शोर पंछियो का मुस्काना हुआ

फसलें भी तो लहलहा के उठी है
पेट के हम सभी का दाना हुआ

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

श्रीमती मधु तिवारी

असर दुवाओं का होता जरूर है।
सुख में सबका मन खोता जरूर है।

मन खेले दुख से जब आँख मिचौली,
इन आँखों सन दिल रोता जरूर है।

कथनी करनी में जो अंतर कर दे,
इंसान नहीं वह तोता जरूर है।

मात पिता तो अपने संतानों में,
सपनों का पौधा बोता जरूर है।

जो भी सच्चा साथी होगा जग में,
निज दुख में नैन भिगोता जरूर है।

फसल स्वर्ण जैसे लहलहा रहे हैं,
तो कृषक ने भूमि जोता जरूर है।

राम नाम जो रटे नहीं हुआ
खाए भव सागर गोता जरूर है।

कृति गुप्ता

दोस्ती

बस यूँ ही हाथ थामे
मेरे संग चलते रहना
बदले जो ये जमाना
पर तुम नहीं बदलना
बचपन,जवानी चखी
संग में बुढ़ापा चखना
करो लाख तू तू मैं मैं
पर बातें जारी रखना
जिंदगी में उलझे भी तो
गिरहें सुलझाए रखना
घनघोर अंधेरों में भी
ये लौ जलाए रखना
मेरे दोस्त मेरे हमदम
ये वादा निभाए रखना
इस दोस्ती का परचम
ताउम्र लहराए रखना!!

अन्तरा शब्दशक्ति के यू ट्यूब चैनल पर २१ जून से १० अगस्त तक कुल २७ रचनाकारों की रचनाओं का प्रसारण किया गया जिसमें views के आधार पर प्रथम ५००/- द्वितीय ३००/- एवं तृतीय २००/- की राशि अन्तरा शब्दशक्ति की सचिव उषा निलेश खंडेलवाल जी की ओर से सभी प्रतिभागियों को दी जा रही है एवं सभी प्रतिभागियों को सम्मान पत्र अन्तरा शब्दशक्ति की ओर से दिया जा रहा।

शामिल रचनाकारों के नाम
१. ओ पी गुप्ता (प्रथम ७०२ views)
२. लीना शर्मा (द्वितीय ५३० views)
३. सीता गुप्ता (तृतीय २६१ views)
४. अर्चना पाठक निरंतर
५. भारती शर्मा
६. भावना विशाल
७. डॉ मधु प्रधान
८. जयहिन्द सिंह
९. कैलाश बिहारी सिंघल
१०. किरण मोर
११. कीर्ति प्रदीप वर्मा
१२. कुशल जैन
१३. लीन मित्तल खेरिया
१४. माधवी उपाध्याय
१५. मीना विवेक जैन
१६. मीनाक्षी सुकुमारन
१७. नवनीता दुबे नूपुर
१८. प्रतिमा संत बाजपेयी
१९. प्रेम सिंह
२०. रमेशचंद्र शर्मा
२१. रंजना माथुर
२२. रंजना श्रीवास्तव
२३. ऋतु कोचर
२४. स्मिता जैन
२५. वाणी गोलछा
२६. विक्रमादित्य सिंह
२७. डॉ वासिफ काजी

अन्तरा शब्दशक्ति के फेसबुक पेज पर २१ जून से १० अगस्त तक कुल ४५ रचनाकारों ने फेसबुक लाइव में हिस्सा लिया। जिसमें अपमू के आधार पर प्रथम ५००९- द्वितीय ३००९- एवं तृतीय २००९- की राशि अन्तरा शब्दशक्ति की संरक्षक डॉ. भारती सुराना जी की ओर से सभी प्रतिभागियों को दी जा रही है एवं अन्य सभी प्रतिभागियों को सम्मान पत्र अन्तरा शब्दशक्ति की ओर से दिया जा रहा है।

ऑनलाइन काव्यपाठ करने वाले रचनाकारों के नाम

१. अर्चना जैन (प्रथम 4.4k views)
२. रागिनी शर्मा स्वर्णकार (द्वितीय 3.4k views)
३ . भावना विशाल (तृतीय 3.2 k views)
४ . माधवी उपाध्याय
५. किरण मोर
६. दिनेश देहाती
७. मधु तिवारी
८. कैलाश सोनी सार्थक
९. गौरी कनौजे
१०. प्रज्ञा जायसवाल
११. कैलाश बिहारी सिंघल
१२. स्मिता जैन
१३. कुशल जैन
१४. सुरेखा स्वरा
१५. मोहिनी गुप्ता
१६. पूनम आनंद
१७. जयकृष्ण चाण्डक श्जयश
१८. लीना शर्मा
१९. ऋषभ जैन श्प्रखरश
२०. डॉ मधु प्रधान
२१. निवेदिता श्रीवास्तव श्निविश
२२. प्रदीप सोनी शून्य
२३. डॉ मनोरमा गुप्ता
२४. सरिता सरस गोयल
२५. पिंकी परुथी अनामिका
२६. विक्रमादित्य सिंह
२७. बबिता चौबे शक्ति
२८. अर्चना कटारे
२९. ऋतु कोचर
३०. कीर्ति वर्मा
३१. हेमंत बोर्डिया
३२. प्रेम सिंह दुर्ग छ.ग.
३३. स्वाति जैन
३४. डॉ वसुंधरा राय
३५. अलका चौधरी श्अनमोलश
३६. दीपाली शर्मा
३७. मुकेश शांडिल्य श्चिरागश
३८. किशोर छिपेश्वर श्सागरश
३९. पूनम कतरियार
४०. एम सत्यप्रसन्न राव
४१. सीए शीतल खंडेलवाल
४२. नवनीता नूपुर
४३. प्रदीप वर्मा
४४. विशाल खर्चवाल
४५. भरत कुरोणा

हेमलता राजेंद्र शर्मा मनस्विनी

लज्जा

गांव का बाहरी कोना
पीपल का बूढ़ा बृक्ष
पत्तो से छनकर आती
रवि की धवल रश्मियां।
माता पिता पुत्री के
मुरझाए मुख पर
चिंता की खिंची लकीरें।
अचम्भित हो मैंने पूछा-
जर्जर हड्डियों पर
मांस चमड़ा लपेटे से
हे? व्यथित मानवों
तुम कौन हो
न भू पर बिछोना
न सिर पर छप्पर।
सिसकते हुए बेटी बोली-
आखिरी श्वांस गिनते
मेरे पिता संस्कार
शून्य में ताकती मां संस्कृति
मैं इनकी बेटी लज्जा।
महानगरों से हमें खदेड़े
फिर नगरों से भगाये
गांव ने भी दे दिये इशारे।
खोज रहे हैं हम
जनक,दशरथ से पिता
देवकी, यशोदा सी मातायें
राम भरत से भाई
सीता सावित्री सी पुत्रियां
कौशल्या सुमित्रा सी सासें
कृष्ण अर्जुन से सखा
कहां गये ,किसे पुकारें।
देव भूमी की वेदनाएं
संस्कार, संस्कृति, लज्जा।

डॉ.किशोर सोनवाने 'अनीस'

हमारा मुल्क हमारी जान,
तिरँगा है हम सबकी शान।
यहाँ हर मजहब का सम्मान,
ये धरती है वीरों की खान।
वो हिंदुस्तान हमारा ....

जहाँ की मिट्टी है पावन,
बरसता रिमझिम है सावन।
वतन कहलाता है गुलशन,
फिदा जिसपे है हर इक जन।
लबों पे सबके राष्ट्रगान।।.....

अहिंसा सत्य जहाँ हथियार,
दिवाली ईद होली त्यौहार।
जहाँ लगते मेले बाजार,
जहाँ पर प्रेम युक्त व्यवहार।
करे जिसका गंगा गुणगान।।
वो हिंदुस्तान हमारा .....

करें हम आओ उनको याद,
भगत बिस्मिल और आजाद।
झुकाकर सर करें फरियाद,
लहू से इनके वतन है शाद।
उन्हीं से हर लब पे मुस्कान।।
वो हिंदुस्तान हमारा ....

गड़ाए नजरें गर दुश्मन,
दिखाते छाती हम छप्पन।
मिटाकर आपस की अनबन,
उड़ाते दुश्मन की गर्दन।
करें उनकी दुनिया वीरान।।
वो हिंदुस्तान हमारा ....

जहाँ पर तुलसी सूर कबीर,
जहाँ लैला,राँझा और हीर।
गुरुद्वारा मस्जिद मंदिर,
जहाँ पावन गंगा का नीर।
जहाँ गालिब मीर रसखान।।
वो हिंदुस्तान हमारा ....

जहाँ पर कृष्ण हुए और राम,
जहाँ पर मौजूद चारों धाम।
हुए हैं बुद्ध महावीर नाम,
हो जिसका अम्न फकत पैगाम।
दधीचि कर्ण का महादान।।
वो हिंदुस्तान हमारा ....

अमित अग्रवाल 'मीत'

गीत नया आजादी का

आजादी का पर्व अनूठा, जीवन में ऐसा आया..
बिन बेड़ी के बंधे हुए हैं, कैसी अजब रची माया..

काम धाम सब बंद पड़े हैं, लेकिन खर्चे थमे नहीं..
घर में खाली बैठे बैठे, मन भी बिल्कुल लगे नहीं..

मेल जोल के छीन गये मौके, रूखे हैं त्यौहार सभी..
पीहर आने की चाहत में, बहनें हैं लाचार सभी..

घर से बाहर जाने का तो, सपना भी बेमानी है..
खुद ही हैं मेहमान हमीं, खुद की ही मेजबानी है..

ऐसी विकट समस्या में हम, कैसे हर्ष मनाएंगे..
कैसे अब जयघोष करेंगे, कैसे ध्वज फहराएंगे..

बिन बच्चों के गली में कैसे, जुलूस निकाला जाएगा..
तुतलाती बोली में वंदन, कोई नहीं सुन पाएगा..

श्वास भी अब तो लगती मुश्किल, कैसे गौरव गान करें..
नम आंखों से आजादी का, कैसे हम गुणगान करें..

जब तक सर पर बना है खतरा, कोरोना की व्याधि का..
तुम ही बताओ कैसे लिख दूं, गीत नया आजादी का..

भुवन तिलक अटल

मीना जैन दुष्यंत

हे भारती भुवन कमल तिलक के विश्वरत्न।
तुम अटल थे अटल हो और अटल रहोगे।
सब में निर्भयता का संचार करने वाले।
सबसे कायरता ,आलस को हरने वाले।

विश्व में हिन्दी भाषा का मान बढ़ाया।
भारत के गौरव से परिचय करवाया।
भर शुक्ल हृदय में अटल प्रेम भावना।
आप अटल रहे यही है हमारी कामना।

त्रिभुवन में आपका गुण गौरव छाया।
छोड़ दी आपने अपने जीवन में माया।
जब पहनते थे आप धोती और कुर्ता।
भारतीय संस्कृति से चेहरा खिलता।

विचार विरोधी से भी सम्मान पाते।
उनकी अच्छाइयों से भी अवगत करवाते।
नूतन रचना के सृजक अटल निर्माता।
हे देशभक्त विश्वरत्न भारत भाग्यविधाता।

किताब

सुमित

एक उलझी सी,
किताब हैं जिंदगी
एक अनपढ़ी अंजानी सी,
किताब हैं जिंदगी
जितना पढ़ते है
उतना ही उलझ जाते है
हर किरदार बहरूपिया
सा लगता है
न जाने वो क्या
सच्चाई लिए बैठा हो
पन्नों पर कुछ टेड़े मेड़े
शब्द भी आते है
जिनका कोई मतलब नहीं होता,
पर वो होते है
हर घटना
बेमतलब की लगती है
किन्तु हम ज्यों-ज्यों
आगे बढ़ते है
हर किरदार हर घटना
आपस में मिलने लगते है
सारे समीकरण अंजाम
की ओर बढ़ते दिखतें है
तब सभी के अस्तित्व
होते है उजागर
लगता है की अब ये किताब,
सुलझने वाली है
किन्तु अचानक ही ये
किताब खत्म हो जाती है

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

किरण बिचपुरिया

दूसरों को उपदेश देना बहुत ही आसान है पर जब स्वयं उस पर अमल करने की बात आती है तो असलियत का पता चलता है। ये मानव की प्रवृत्ति होती है कि वो किसी बात के लिये अपने लिये तो अलग मानदंड तय करता है और दूसरों के लिये अलग। हमें इस दोहरे रवैये से बचना चाहिये। किसी को कोई कार्य को करने का उपदेश देने से पहले हमें उसे पहले स्वयं पर लागू करना चाहिये। अक्सर ऐसा होता है कि हमें दूसरों के लिये तो वो कार्य बहुत आसान लगता है हम कहते हैं ये तो बहुत आसान कार्य है मैं तो चुटकियों में कर दूंगा पर जब हम स्वयं उस कार्य को करते हैं तो हमारे पसीने छूट जाते हैं। इसलिये तो कहते हैं कि 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'। दूसरों को उपदेश देना एक अलग बात है स्वयं उस कार्य को करना दूसरी बात है!!

किरण बिचपुरिया

संतोष मिश्रा 'दामिनी'

विराट जनसमूह, भव्य सजावट, हो भी क्यों नहीं आज प्रसिद्ध समाज सुधारक पण्डित विजयराज जी के बेटे की शादी जो थी।

पण्डित जी ने समाज मे चली आ रही दहेज उत्पीड़न पर जमकर काम किया था।दहेज रहित शादियां करवाया गरीबों की यथा सम्भव मदद करके जो प्रसिद्धि पायी, उसके चलते आज गांव के सरपंच बन गए।

सारी रश्मो रिवाज के बाद विदाई की बेला में पण्डित जी नाराज हो गए, बोले हम बहु अपने घर तभी ले जायेंगे जब समधीजी अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति हमारे बेटवा केनाम कर देंगे। उनके समधीजी जिनकी इकलौती बेटी को वो बहु बना चुके थे, अश्रुपूरित नेत्रों से हाथ जोड़कर रोते रहे, असहाय से, हम ठगे से देख रहे थे ये पण्डित तो दहेज के खिलाफ थे कभी ठीक ही है उपदेश दूसरों के लिये होते है अपने लिये नही।

संतोष मिश्रा 'दामिनी'

अमित तिवारी 'शून्य'

जीवन पटल में मनुष्य एक मात्र प्राणी है जो कि स्वनभाववश कथनी और करनी में किंचित भेद रखता है, और अन्योकन क्षेपण द्वारा सबको दर्शन देकर विर्निदिष्टं करता है। ऐसा ही एक छोटा सा वाक्याद श्रीमान हरिओम जी के साथ का उद्धरत है यूं कि हरिओम जी एक समय अपने कुछ पडोसियों के साथ जन्मा ष्टपमी पर्व का 'उल्लावस कार्यक्रम' में भागीदारी कर रहे थे, उन्हेम कार्यक्रम की व्यकवस्थ् हेतु कई लोगों के साथ समिति में प्रबंधन हेतु रखा। उत्साव के आनंद की पराकाष्ठां अपने चरमोत्कसर्ष पर थी लोगों का हुजूम प्रसाद प्राप्ति के लिए उमड पडा, हरिओम जी द्वारा जनमेदनी को सूत्र दिया गया की 'प्रसादी प्राप्तन करने के बाद दोने इधर-उधर नही फेंके जाएंगे , सहयोग करे साथ ही प्रसादी एक बार लेकर पुनरू न लेवें।' किन्तुक नजदीक बैठे हेमन्त ने अपनी पारखी नजर से देखा कि श्रीमान हरिओम व्यवस्था चलने में ही प्रसादी के कई भाग स्व यं के नियंत्रण में (डिब्बें में) कर चुके है और दोने भी प्रभु कृपा से सभी दिशाओं में श्रीमान के द्वारा तरपित की जा चुके है... और यह प्रक्रिया यथा संभव जारी है। !! हरे कृष्णे हरे कृष्ण !! ठीक ही है 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे'।

द्वारा अमित तिवारी 'शून्य'

आज की नारी

डॉ आशु जैन

लाज की मारी सकुचाई सी
शरमाई सी घबराई सी
बैठी पी की सेज सजाये
मन में प्रीत के स्वप्न सजाये
इंतजार में हो अधीर वह
धीरज धर मन को समझाये
जब उसके प्रियतम आयेंगे
कह देगी सब बिना बताए
उसकी आँखों का ये काजल
कर देगा प्रियवर को घायल
उसके चेहरे की ये लाली
सुर्ख हुई सब खुशियाँ पा ली।
उसके रोम रोम की सिहरन
हर घड़ी बढ़ रही है धड़कन।
सोच रही है बैठी दुल्हन
पति को अब सर्वस्व समर्पण।
लाज शर्म और हया की मारी
दीवानी हुई आज की नारी।

लाज

डॉ.चन्द्रकान्ति

माना कि लाज है गहना नारी का,
पर दर्जा दोयम होता नहीं,
मर्यादा में रहती नारी,
पर होती नहीं कभी बेचारी,
नारी होती सरल-सहज
और धीरज वाली,
हर कर्तव्य निभाने सक्षम,
विनम्र-सदाशयता उसमें,
किन्तु नहीं अभिमान है,
स्वाभिमानी, मानिनी वह
सद्गुण, सहनशीलता धारी,
यद्यपि है सुकुमारी वह
पर दृढ़ संकल्पों वाली,
नाजुक हाथों में थामे
निज संस्कृति की कमान,
चाद तारों को छूना भी
है उसको अति आसान,
जो चाहे पाना, है सहज उसे,
जग जननी सा उसका मान।

सत्यप्रसन्न

हया

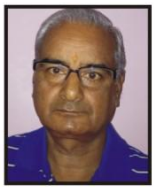

उजाले दर तलक आकर हमारे लौट जाते हैं।
गली के इस मुहाने से शरारे लौट जाते हैं।

हया आँखों में इतनी है निगाहें उठ नहीं पातीं
हमारे पास तक आ कर इशारे लौट जाते हैं।

खुशी से पेश्तर गम के ठिकाने से गुजरते हैं
जहाँ से खुशनुमा सारे नजारे लौट जाते हैं।

बिछाकर एक चादर फिर सफेदी की जमीं पर लो
गगन से घर को अपने चाँद तारे लौट जाते हैं।

तुम्हारा पास होना ही फकत काफी है मेरी जां
गमों के काफिले आकर के सारे लौट जाते हैं।

मनोरमा रतले

बेशर्मी

क्या बहन बेशर्मी
सुना आजकल
तुम्हारा बहुत बोलबाला है
हर कोई तुम्हें ही संग ले चलता है
जिसने तुम्हारा दामन थामा..
वो बड़ा सम्मान पा रहा..
जीवन मे आगे बड़ रहा..
हा बहन..लज्जा
मैने बहुत बुरे दिन भी तो देखे है
कहते है लोग
घूरे के दिन फिरते है
तो फिर मेरे तो..।
फिरने ही थे...
पर मुझसे तुम्हारी ..
ये हालत देखी नहीं जाती...
तुम कैसी असहाय सी हो गई..
अब तुम्हें तो..
कही भी स्थान नहीं मिल रहा...
बाजार और राजनीति से तो..
तुम्हें कब का धक्का मारके ..
निकाल ही दिया था...
अब विघालय और..
मंदिर से भी..
तुम निकाली गई..
बहन ...समय समय की बात है..
कभी तुम रानी थी..
आज नौकरानी से भी बदतर...
क्या करे.....देखो तो आज समाज..
इसकी सजा भुगत रहा..
लोगो ने तुम्हारा साथ क्या छोड़ा...
समाज की दशा और
दिशा ही बदल गई...
लोग..
अपनो पर भी..
विश्वास नहीं कर पा रहे..
लोगो के बीच..प्रेम नहीं
अब स्वार्थ ..बचा है..
चलो बहन...
मै तो प्रार्थना करती हूँ..
कि तुम्हें भी समाज मे..
स्थान मिले..
मै तो..अब रानी बन ही चुकी हूँ

तबस्सुम परवीन

शर्म हया

ऊफ्फ...ये घुंघट, शरमाना
झुठी शान के लिए हिजाब मे
बाहर जाना...यही चीज तो
नारी को उत्पीड़न देती है..
जब भी कुछ करना चाहे मन
पांव मे शर्म की बेड़ियां फिर से
खड़ी हो जाती है ।

घुंघट मे नही संस्कारो मे हया
बड़ों ....के सम्मानो मे हया,
छोटो के प्यार मे हया....ये तो
विचार मे नही आते है ।
खुशियां का तो हिजाब है बेड़ियां.....
नारी का मन को टटोलो .....
आंखो मे आंसू है कितने झुठी तुम्हारी
ढकोसलो ने दिल को कितने जख्म दिए...
ये भी तुम संस्कारो मे ढकते हो ।

नारी चुप बैठे तो
बेवकूफों का दर्जा देते हो.....
आवाज उठाए सम्मान के लिए तो
बेशर्मी का ताना कसते हो
हार के शर्म का चादर घर
मे बैठी रहती है....रोती है
चिल्लाती है अंदर ही अंदर घुटती है ।।

सोनम जैन

जिन्दगी की आखिर तुमने, कीमत क्यों नही जानी।
और बस यू ही खत्म कर दी अपनी कहानी।
मन के किसी कोने से आवाज तो आई होगी,
आखिर क्यों,
तुमको अपनी वो आवाज नही थी सुननी।

ये कदम उठाने की जब थी तुमने ठानी,
उगता हुआ सूरज था या थी शाम सुहानी।
माता-पिता परिवार की तस्वीर तक देखी होगी,
आखिर क्यों,
तब भी कर ली तुमने दुनिया अपनी अनजानी।।

कौन सी ऐसी खुशी थी जो थी तुमसे बेगानी,
कौन सा ऐसा रिश्ता था जो रिश्ता था बईमानी।
किसी से कुछ कहने की तुमने कोशिश तो की होगी,
आखिर क्यों,
ना हासिल के दुःख में हासिल की कद्र ना जानी।

छोड़ के सबकी फिक्र कर ली अपनी मनमानी,
सदमें में छोड़ गए सबको दे गए आंखों में पानी।
एक पल तुमने खुद को रोकने की सोची तो होगी,
पर शायद,
जिन्दगी जीने से ज्यादा आसान लगी तुम्हें गंवानी।।

शिखा बोर्डिया

खयालों में तुझे देख मुस्कुराना याद आता है
तेरा वो चुपके से मुझे सताना याद आता है

तेरी बातों ही बातों मे मेरा जिक्र याद आता है
आंखों ही आंखों में मेरी फिक्र याद आता है

जो न करूं इजहार तेरा रूठ जाना याद आता है
शरमा कर तेरा वो प्यार जताना याद आता है

वो चुपके से मेरे कमरे में आना याद आता है
आकर मेरी बाहों में झूल जाना याद आता है

तेरा वो जाकर फिर लौट आना याद आता है
काश न होते हम जुदा गुजरा जमाना याद आता है।

आभा अनिल

पत्नी शिव की उमा
व्रत में जी है रमा
आज शिव को मनाने चली है कहाँ

करके सोलह सिंगार
चली शिव जी के द्वार
बैठे धूनी रमाये थे भोला जहाँ

हाथ पूजा का थाल
फूलों की है वरमाल
भीड़ बारातियों की है भारी यहहं

बाजे डमरू औ ढोल
हर हर बम बम का बोल
भा गया शैल पुत्री को दृश्यम वहाँ!

डा.वर्षो चौबे

जिंदगी

जिंदगी एक इस किताब
की तरह ही है,
रोज इसका एक पन्ना
लिखा जाता है।
हर धड़कन, पल, काल
वर्ण, शब्द और वाक्य
बनते हैं,और धीरे-धीरे
पन्ने जोड़कर बन जाती है
एक सुंदर किताब।
पूरी हो जाती है
सांसे तो बंद कर दिया
जाता है इसे और
फिर इस पर समीक्षात्मक
टिप्पणी भी चलती रहती है,
तब तक जब तक इसे
देखने, पढ़ने और सुनने वाले
लोग रहते हैं।
तो सुनो क्यों न कोशिश
करें कि लिखें
एक सुंदर, उज्जवल, साहसी,
ईमानदार, चरित्रवान,
नीतिगत बात
देशभक्ति और
नेह के जज्बात।
जिससे इस किताब का
हर लफ्ज हो जाए कीमती,
अमर और ये
गाथा युगों-युगों तक
याद रखी जाए।

प्रिया जैन

लाज शर्म और हया

लाज शर्म और हया
ये तीनो एक ही नाम
जे अभिमान करे
तो इनका ना कोई काम।

जब परिवार यूँही बिखरते है
जब रिस्तो में जहर मिलते है
जब अपने ही पराये होते है
जब आंखों से अंशु झरते है।

अब लाज का घूंघट उतर गया
अब शर्म की लाली बिखर गई
अब हाय का दीपक बुझ गया
अब रिस्तो डोर बिखर गई।

अब लाज शर्म का काम नही
अब अपनो का दाम नही
अब आने वाली पीढ़ी में
अब अपनो को कुछ याद नही।

लाज तो मानवता गहना है
शर्म है नयनो की शान
हाय है चेहरे की चमक
जब हो दिल मे सम्मान।

केटी दादलाणी

गजल

चैन चाहत में मिला है
फूल उलफत का खिला है

दूर मंजिल छू ही लेंगे
अब नहीं शिकवा गिला है

प्रेम का है मन पुजारी
ख्वाब का ये सिलसिला है

झूमता चलता रहा मन
इश्क ऐसा काफिला है

तुम ख्यालों में बसे हो
मन धरा पर जिलजिला है

रब रमा है रूह में ही
अब न कोई फासला है

मंजू सरावगी मंजरी

फैशन और संस्कार

फैशन के युग में संस्कार कहाँ पाओगे
संस्कार को फैशन ने दे दिया देश निकाला
कहते सब संस्कार का नहीं बोल बाला

लज्जा था नारी का गहना
फैशन ने उसको छोड़ दिया
शर्म हया की दीवार को तोड़ दिया

नैनों की लज्जा नारी को मान दिलाती थी
लज्जा के कारण नारी सुशील लगती प्यारी थी

फैशन के कारण सिर से पल्ला छूटा
साड़ी सलवार दुपट्टा छूटा
तन के कपड़े कम होते गये
नैनो से लज्जा का गहना टूटा

सबको कहते आधुनिक युग है
यहाँ न कोई नारी पुरुष है
समानता का अधिकार मिला है
संस्कार तो सबको विरासत में मिला है

विरासत का अब यहाँ क्या मोल है
आज की फैशन ही अनमोल है
दिखावे के नाटक सिर्फ करते हैं
जन्म देने वाले ही इनको बोझ लगते हैं

पूजा पाठ कर मंदिर खूब जाते हैं
वहाँ दया धर्म दान भी करते हैं
भंडारा और लंगर प्रतिदिन होते है
माँ पिता भूखे अपनी किस्मत को रोते हैं

वृद्धाश्रम में माता पिता को रखते हैं
भले ही मातपिता मिलने को तरसते हैं
संस्कार कब आयेगा
फैशन कब जायेगा
दोनों भी मिलकर रह सकते हैं
यदि सबके विचार मिलते हैं

दिखावे की फैशन सदा बुरी है
संस्कार से शायद वह सुधरी है

आरक्षण

राधा गोयल, दिल्ली

रोते होंगे आज पटेल...
देख आरक्षण का यह खेल
रो रोकर कहते होंगे कि...
मेरे ही वंशज होकर,
क्यों आरक्षण की माँग उठाई?
आरक्षण की माँग उठाकर...
खुद अपना कुल आज
कलंकित कर डाला है।
जिन्हें गर्व करना था अपने
पूर्व जनों पर,
आज उन्हें दुनिया के आगे
शर्मसार क्यों कर डाला है?

कैसे- कैसे कुलघाती हैं,
सारी हया बेच खाई है।
अपनी गौरवमयी कथा,
क्या याद कभी भी ना आई है?
समझ नहीं आता कैसे
कुल की मर्यादा बची रहे?
जैसी गौरवमंडित थी...
बिल्कुल वैसी ही बनी रहे।

अभी समय है जाग जाओ,
अपने गौरव को याद करो।
आओ आज तुम सब मिलकर
इक स्वर में, यह उद्घोष करो।
नहीं चाहिए दया किसी की,
हाथों में बल बना रहे।
अपने बल पर करें तरक्की,
बस यह संबल बना रहे।

साधना छिरोल्या

आज

प्यासी धरती रोई आज,
मानव ने किये हैं ऐसे काज,
गली-मुहल्ले सूने हो गये,
कैसा कलियुग आया आज।।

कोरोना तो है एक बहाना,
प्रकृति भी है कहती आज,
अपनी करनी देख रे! मानव,
हाथ मले पछताये आज।।

शाकाहार का दामन छोड़ के,
तनिक भी तुझको आई न लाज,
बेजुबान जानवर है मारे,
देख खड़ा पछताये आज।।

धरती माँ का दामन चीरा,
हरियाली से मुँह है मोड़ा,
हवा भी न शुद्ध मिलेगी,
कुछ तो चिंतन कर ले आज।।

'विचलित धरा' भी तुम है देखो,
इशारों से कहती आज,
मानव तेरी ही करनी का,
फल मैं भुगत रही हूँ आज।।

अतिवृष्टि-अनावृष्टि,
भूकंप भी हैं आते आज,
विचलित धरा का दामन चीरें,
फिर भी तू न संभले आज।।

ख्वाहिशों के वशीभूत होकर,
तन्हाई के साये में बैठा आज,
लोक-लाज और शर्म भुलाकर,
मर्यादा भी तोड़ी आज।।

अब तो चेत जा रे मानव!!!
कल की चिंता करले आज,
योग और आध्यात्म अपनाकर
बच्चों का भविष्य सँवार ले आज।।

भाऊराव महंत

गीत

संज्ञाएँ असमर्थ हो चुकीं,
सर्वनाम के आगे।
पुष्ट क्रियाओं से भी जग में,
दूर विशेषण भागे।

मात्राएँ अब भूल चुकी हैं,
अपनी गणना करना।
निश्चित है कविताओं में अब,
गण का पानी भरना।
छन्द पुरातन मुक्त हो गए,
तोड़ दिए नीचे धागे।।

शब्दशक्ति कमजोर हो गई,
अर्थशक्ति के कारण।
मंच चुटकुले सुना रहे हैं,
कैसे करें निवारण।
विधवाओं के सदृश काव्य ने,
अलंकार हैं त्यागे।।

नीरस बैठी कविताएँ हैं,
जीर्ण-शीर्ण हालत में।
खोज रहा है अपनी अस्मत,
कवि साहित्य जगत में।
पुनः काव्य रस हो कविता में,
काव्यात्मकता जागे।।

वन्दना खरे

रंग

जीवन में भरे हैं,
हमने रंग कई।
कुछ रंगों की यादें,
धुधंला सी हैं गई।
उत्साह उंमग आज भी,
गोते लगा रहा है समुंदर में।
जीवन में अपने,
भरे हैं रंग कई।
कुछ रंगों की यादें,
ताजा भी हो गई हैं।
उत्साह ओर उमंग से,
भरी हुई हूं आज भी।
पूरे वेग के साथ,
खुले आसमान में,
उड़ रही हूं आज भी।
बंधनों में तो बंधी हुई हूं,
पर आजादी की डोर,
अपने ही पास
सभांल कर रखी है।
उड़ रही हूं,
खुले आसमान में,
उमंग ओर उत्साह के साथ।
जीवन में अपने भरे हैं,
कई रंग हमने भी हमने भी।।

आभा अनिल

करके सोलह सिंगार
चली शिव जी के द्वार
बैठे धूनी रमाये थे
भोला जहाँ

हाथ पूजा का थाल
फूलों की है वरमाल
भीड़ बारातियों की है
भारी यहां

पत्नी शिव की उमा
व्रत में जी है रमा
आज शिव को
मनाने चली है कहाँ

बाजे डमरू औ ढोल
हर हर बम बम का बोल
भा गया शैल पुत्री को
दृश्यम वहाँ

अर्चना जैन

सत्य का सम्मान

जब मैं ८या ९ वर्ष की थी।
हम सब भाई बहन और आस पड़ोस के बच्चे हमारे घर के एक हाल में खेल रहे थे। वहां पर हमारे घर मे टहयलेट में लगने हेतु एक सेनेटरी शीट रखी हुई थी। पर सब लोग दौड़ भाग कर अपने खेल और आनंद में मस्त थे । तभी छन्न की आवाज आई और हमने देखा कि शीट टूट चुकी थी। बच्चे उसे देखकर डर के मारे भाग गए। पर मैं नहीं भागी। मुझे भागकर इस गलती से पीठ दिखाना अच्छा नहीं लग रहा था। हालांकि मुझे ठीक से पता नहीं था कि वो सीट किसके धक्के से टूटी थी। पर मुझे लगा हम सब साथ में खेल रहे थे इसलिये सबकी सामूहिक गलती और जिम्मेदारी है। पता नहीं मुझे क्या हुआ मैं सीधे अपने पिताजी के पास गई और सिर झुकाकर डरते सहमते उन्हें बताया कि हमसे सीट टूट गई।कुछ पल वे मुझे देखते रहे ,फिर सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोले- तुम्हारी सच्चाई और निडरता इस सीट से बहुत कीमती है।मैं बहुत खुश हूं कि तुमने ये बात निडरता से मेरे सामने रखी तुम्हारा मन बहुत पवित्र है,तभी तुमने सच बोला। अब इस टूटी हुई सीट को भी मैं फिट करवाऊंगा ताकि सबको याद रहे कि हमेशा सच ही बोलना चाहिये।
मेरे लिये सच बोलने का इससे बड़ा इनाम और शिक्षा कुछ और हो ही नहीं सकती थी। पिताजी का वो स्नेह भरा स्पर्श मुझे आज भी सच की प्रेरणा देता है।
यह अक्षरसः सत्य घटना है
अपने पिता के दिये संस्कार का उपकार हम कभी नहीं चुका सकते

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का..
आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की यात्रा

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

१. व्हाट्सअप समूह २ फरवरी २०१६ से।
२. फेसबुक समूह २ फरवरी २०१६ से।
३. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर ७-८ रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन १ नवंबर २०१६ से।
४. फेसबुक पेज १६ फरवरी २०१७ से।
५. मासिक वेब पत्रिका १ जुलाई २०१७ से।
६. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन २५ मार्च २०१८ से।
७. ईबुक प्रकाशन १५ जनवरी २०१६ से।
८. अब तक लगभग ३०० से अधिक पुस्तकों और १५ साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और ५५० सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।
९. १ जून २०१६ से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।
१०. २१ सितंबर २०१६ से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।
११. १ अक्टूबर २०१६ से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।
१२. २१ माह में दो दिन में एक हिन्दी रचनाकार की पुस्तक प्रकाशन एवं प्रतिदिन एक हिन्दी रचनाकार एवं हिन्दी सेवी का सम्मान की दर से सतत् जारी है।
१३. महामारी के आपातकाल के ५१ दिनों में १२१ पुस्तकों का प्रकाशन। (२५ मार्च से १४ मई २०२०)
१४. २५ जून २०२० से प्रतिदिन किसी एक रचनाकार का फेसबुक लाईव जारी है।
१५. अन्तरा शब्दशक्ति पीएस के नाम से स्वयं का यूट्यूब चैनल चल रहा है।

978-93-5372-262-3

मूल्य - 80/-

- अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा हिन्दी रचनाकारों एवं हिन्दी सेवियों के अब तक किये गए सम्मान
- १११ महिला रचनाकारों का 'शब्दशक्ति सम्मान २०१६', हिन्दी भवन, भोपाल २५ सितम्बर २०१६
- १११ रचनाकारों का 'अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान', इन्दौर २ फरवरी २०१८।
- ६५ रचनाकारों का 'भाषा सारथी सम्मान', इन्दौर २ फरवरी २०१८।
- ५५ महिला रचनाकारों का 'वुमन आवाज़ सम्मान', हिन्दी भवन, भोपाल ४ अगस्त २०१८।
- ११ रचनाकारों का 'भाषा सारथी सम्मान' हिन्दी भवन, भोपाल २६ सितम्बर २०१८।
- ६० रचनाकारों का अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान २०१६, एन.डी. तिवारी भवन, दिल्ली, ५ जनवरी २०१६।
- २८ रचनाकारों का 'मातृभाषा उन्नयन सम्मान', एन.डी.तिवारी भवन, दिल्ली, ५ जनवरी २०१६।
- ७० रचनाकारों का 'साहित्य स्वाभिमान सम्मान', गुरूनानक भवन, वारासिवनी २ जून २०१६।
- ५६ शिक्षकों का 'शिक्षा गौरव सम्मान', सेन्ट विद्यासागर कान्वेन्ट एवं दिव्य डिवाइन स्कूल, वारासिवनी, ५ सितम्बर २०१६।
- २३ बच्चों का 'विशिष्ट हिन्दी प्रतिभा सम्मान', माउंट लिट्रा स्कूल बालाघाट, २१ सितम्बर २०१६।
- ४२ बहुभाषी रचनाकारों का 'भाषा समन्वयक सम्मान', बहुभाषा सम्मेलन उर्दु हॉल, हैदराबाद, २१ सितम्बर २०१६।
- ४५ रचनाकारों का 'शब्द कोविद सम्मान', नागपुर २२ दिसम्बर २०१६।
- १०० कलाकारों का 'विशिष्ट प्रतिभा सम्मान', हम सब साथ-साथ ७वाँ अंतर्राष्ट्रीय सोशल मीडिया सम्मेलन भीलवाड़ा में २४ दिसम्बर २०१६।
- ११६ रचनाकारों को आपातकाल में सृजन फुलवारी में सृजन हेतु 'कलम के सिपाही सम्मान', १७ मई २०२०।

अब तक दिए गए कुछ विशेष सम्मान

- १ अन्तरा शब्दशक्ति 'भूषण सम्मान'
- २ अन्तरा शब्दशक्ति 'रत्न सम्मान'
- २४ अन्तरा शब्दशक्ति 'गौरव सम्मान'
- ४ अन्तरा शब्दशक्ति 'साहित्य शिरोमणि सम्मान'
- ३ अन्तरा शब्दशक्ति 'शब्द सारथी सम्मान'
- १ अन्तरा शब्दशक्ति 'सस्कृति सारथी सम्मान'

अब तक लगभग ९५८ सम्मान

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/